तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

शिक्षा विभाग, हरियाणा की मासिक पत्रिका

वर्ष-7, अंक- 9, अगस्त 2019, मूल्य-15 रु

schooleducationharyana.gov.in | shikshasaarthi@gmail.com

तुम नन्हीं बुनियादें, दुनिया के नए विधान की
बच्चो तुम तकदीर हो, कल के हिंदुस्तान की

प्यार करते हैं, तिरंगे से हम

प्यार करते हैं, तिरंगे से हम।
शान न मिटने देंगे, मरकर भी हम।।

भारत में जितने रहते हैं जन-गण,
तिरंगे पर करते तन-मन अर्पण,
झुके न तिरंगा, जब तक है दम।
प्यार करते हैं, तिरंगे से हम।।

केसरिया बलिदान सिखाए,
हरा रंग खुशहाली लाए,
श्वेत शान्ति का, फैलाए परचम।
प्यार करते हैं, तिरंगे से हम।।

जाति, धर्म और भाषा अनेक,
इन सबसे बना भारत एक,
यह सोने की चिड़िया, चमके चमाचम।
प्यार करते हैं, तिरंगे से हम।।

धर्म निरपेक्ष है देश हमारा,
संविधान बनाया रक्षक हमारा,
भारत आबाद रहे, करें ऐसे करम।
प्यार करते हैं, तिरंगे से हम।।

भूपसिंह भारती, शिक्षक
रावमावि पटीकरा
जिला- महेंद्रगढ़

तमसो मा ज्योतिर्गमय

शिक्षा सारथी

अगस्त 2019

प्रधान संरक्षक
मनोहर लाल खट्टर
मुख्यमंत्री, हरियाणा

संरक्षक
रामबिलास शर्मा
शिक्षामंत्री, हरियाणा

मुख्य संपादक
डॉ. महावीर सिंह
प्रधान सचिव,
विद्यालय शिक्षा विभाग, हरियाणा

संपादकीय परामर्श मंडल
डॉ. राकेश गुप्ता
राज्य परियोजना निदेशक
हरियाणा विद्यालय शिक्षा परियोजना परिषद

डॉ. बलकार सिंह
निदेशक,
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

महेश्वर शर्मा
निदेशक,
मौलिक शिक्षा, हरियाणा

के के भादू
अतिरिक्त निदेशक (प्रशासन-II),
माध्यमिक शिक्षा, हरियाणा

संपादक
डॉ. देवियानी सिंह

उप-संपादक
डॉ. प्रदीप राठौर

डिज़ाइन एवं प्रिंटिंग
हरियाणा संवाद सोसायटी

मूल्य : 15 रुपये, **वार्षिक :** 150 रुपये

Published & Printed by Dilbag Singh on behalf of President, Shiksha Lok Society-cum-Director General Secondary Education, Haryana. Published from office of Director General Secondary Education, Haryana, Plot No. 1-B, Shiksha Sadan, Sector - 5, Panchkula.

Printed by delhi press patra prakahsna Pvt. Ltd. at its printing press PSPC Press 50, DLF Industrial Estate,

Faridabad- 121003,(Haryana)

Editor: Dr. Deviyani Singh.

"शिक्षा सबसे शक्तिशाली हथियार है जिसे आप दुनिया को बदलने के लिए उपयोग कर सकते हैं।"
-नेल्सन मंडेला

- विधिक साक्षरता विद्यार्थियों के लिए अत्यावश्यक 5
- हरियाणा का पूरा फोकस अब शैक्षिक गुणवत्ता पर 6
- सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सहज बनातीं कुछ एप्स 8
- कक्षा-शिक्षण को प्रभावी कैसे बनाएँ? 10
- अविस्मरणीय स्मृतियाँ छोड़ गया मनाली एडवेंचर कैम्प 12
- मानव की वृत्तियों का परिष्कार करती हैं कलाएँ- डॉ. महावीर सिंह 16
- नकल बनाती जीवन नकली 18
- खेल-खेल में विज्ञान 22
- एक सरकारी स्कूल ऐसा भी 24
- अपनी कला से सबका मन मोह लेता है बिट्टू 25
- नशा मुक्ति अभियान 26
- बाल सारथी 28
- प्रकृति से जुड़कर करें सुखानुभूति 30
- Why do parents invest in girls' education ? 32
- Chase the Vision.... 38
- Make a point, not an enemy! 40
- A Rainy Day 42
- Quiz 44
- Common Monsoon Diseases Prevention Tips 47
- Amazing Facts 48
- आपके पत्र 50

मुखपृष्ठ चित्र : विजय कुमार सिंह

पत्रिका में प्रकाशित लेखों में लेखकों की निजी राय हो सकती है। यह आवश्यक नहीं कि विभाग उनसे सहमत हो।

विद्यार्थियों में जगाएँ राष्ट्र-अनुराग

15 अगस्त 1947 की सुबह सामान्य सुबह नहीं थी। उस दिन जो सूर्य उदित हुआ था, वह भी सामान्य सूर्य नहीं था। अँधेरे को चीरकर धरा पर उतरती उसकी रश्मियाँ मानो यही संकेत दे रही थीं कि गुलामी की स्याह काली रात बीत गई है। आज का सवेरा आज़ादी का सवेरा है, मुक्ति का सवेरा है। उठो! जागो! अब तुम पिंजरबद्ध नहीं, पंख फैलाओ, अब पूरा आकाश तुम्हारा है।

उस समय पूरा राष्ट्र जैसी हर्षानुभूति कर रहा था, उसे शब्दबद्ध करना संभव नहीं। उस समय के साक्षी किसी बुज़ुर्ग को अगर उस वक्त की याद दिलाई जाए तो उसकी आँखों में आप अजीब चमक देखेंगे और चलचित्र की भांति उस समय की तमाम घटनाएँ उसके स्मृति-पटल पर ताज़ा हो जाएँगी। क्या दौर था वह भी! आज़ादी की खुशी जन-मन में ही नहीं, हवाओं में भी घुली-मिली महसूस होती थी। राष्ट्रीय पर्वों के अवसर पर गाँव-शहर-कस्बों में प्रभात फेरियाँ निकलती थीं। आज़ादी के तराने गाते मतवाले ढोलक-नगाड़ों के साथ बहुत बड़ी संख्या में इनमें सम्मिलित होते थे। रेडियो पर पूरे दिन बजने वाले राष्ट्र-प्रेम के गीत पूरे माहौल को देशभक्तिमय बना दिया करते थे। 30 जनवरी को विद्यालयों-कार्यालयों में मौन रखा जाता था। किसी को बताने की आवश्यकता नहीं होती थी कि उस दिन बापू का शहादत दिवस है।

लेकिन धीरे-धीरे जैसे ही समाज में आपाधापी, स्वार्थ, प्रतिस्पर्धा, भौतिकता, धनलोलुपता बढ़ती गई तो 'आज़ादी' भी जैसे बेगाना शब्द हो गया। स्वतंत्रता दिवस और गणतंत्र दिवस जैसे पर्व भी केवल शासकीय पर्व बनकर रह गए। युवा-पीढ़ी के लिए तो ये दिन सामान्य अवकाश के दिन बन गए। देश के लिए सर्वस्व अर्पित करने वालों की कुर्बानियों को भी बहुत कम याद किया जाता है।

लेकिन मन को निराशा-हताशा के कुहासे से भरने की आवश्यकता नहीं। हर्ष का विषय है कि हरियाणा प्रदेश के विद्यालयों में ये राष्ट्रीय पर्व धूमधाम से मनाए जाते हैं। विभाग के निर्देशानुसार उस दिन सभी विद्यालयों में तिरंगा फहराया जाता है, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं, विद्यालय प्रबंधन समिति, पंचायत के सदस्य व अन्य ग्रामवासी उनमें सम्मिलित होते हैं, मिष्ठान्न बाँटे जाते हैं।

आइए! हम अपने-अपने विद्यालयों में आज़ादी के पर्व इतने हर्षोल्लास से मनाएँ कि हर कोई राष्ट्र-अनुराग के रंग में सराबोर हो जाए।

- संपादक

विधिक साक्षरता विद्यार्थियों के लिए अत्यावश्यकः न्यायमूर्ति उदय उमेश ललित

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति उदय उमेश ललित ने हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल द्वारा शिक्षण संस्थाओं में चलाए जा रहे विद्यार्थी विधिक साक्षरता मिशन की सराहना करते हुए कहा कि जब वे विद्यार्थी थे तो उस समय विधिक साक्षरता जैसी कोई सुविधा नहीं मिलती थी। युवाओं को ऐसे मिशन से मौलिक अधिकारों व कानूनों की जानकारी मिलने से समाज में जागरूकता आती है। जस्टिस ललित दीनबंधु छोटूराम विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय के सभागार में हरियाणा राज्य विधिक सेवाएँ प्राधिकरण एवं शिक्षा विभाग हरियाणा द्वारा आयोजित विद्यार्थी विधिक साक्षरता मिशन के 9वें वार्षिक समारोह मे मुख्य-अतिथि के रूप में बोल रहे थे।

उन्होंने कहा जब स्कूलों से ही विद्यार्थियों को कानूनी साक्षरता के बारे में जानकारी होगी तो वे आगे चलकर कानून का पालन अवश्यक करेंगे और समाज के लोगों को भी उनके अधिकारों व कानून के बारे में जागरूक करेंगे।

उन्होंने हरियाणा राज्य विधिक सेवाएँ प्राधिकरण द्वारा चलाए जा रहे इस अभियान की सराहना करते हुए कहा कि राष्ट्रीय स्तर पर भी हरियाणा राज्य विधिक सेवाएँ प्राधिकरण ने लगातार पाँच वर्षों से देश में प्रथम स्थान प्राप्त किया है।

हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल ने अपने संबोधन में कहा कि समाज के स्थायित्व, शांति व संतुलन के लिए अधिकारों के प्रति जागरूक करने के साथ-साथ सामाजिक कर्तव्यों, नैतिक मूल्यों व राष्ट्रवाद की शिक्षा भी उतनी ही जरूरी है जितना कि विद्यार्थी विधिक साक्षरता मिशन के तहत विद्यार्थियों में कानून के प्रति फैलाई जा रही जागरूकता।

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति हेमंत गुप्ता ने अपने संबोधन में उपस्थित विद्यार्थियों से आह्वान किया कि वे विधिक साक्षर तो बनें ही, साथ ही कुछ ज्वलंत पर्यावरणीय मुद्दों के प्रति भी जागरूक बनें। विशेष रूप से पानी को बचाने व प्लास्टिक का प्रयोग न करने का संकल्प लें।

सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने अपने संबोधन में कहा कि हरियाणा राज्य विधिक सेवा प्राधिकरण एवं शिक्षा विभाग द्वारा संयुक्त रूप से चलाया जा रहा विधिक साक्षरता अभियान एक सराहनीय कदम है। इससे हम सशक्त एवं सभ्य समाज का निर्माण कर सकेंगे। उन्होंने कहा कि समाज में कानूनी जागरूकता फैलाने के लिए लीगल लिटरेसी क्लब से जुड़े लोगों को विधिक साक्षरता को अपनी जीवन शैली का हिस्सा बनाना चाहिए।

पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय के मुख्य न्यायाधीश एवं हरियाणा राज्य विधिक सेवाएँ प्राधिकरण के संरक्षक न्यायमूर्ति कृष्ण मुरारी ने अपने संबोधन में कहा कि आज का कार्यक्रम एक नए समाज के निर्माण का कार्यक्रम है। उन्होंने कहा कि राष्ट्रीय विधिक सेवाएँ प्राधिकरण द्वारा 2005 से विधिक साक्षरता के कार्यक्रम चलाए जा रहे हैं। उन्होंने कहा कि उन्हें इस बात की खुशी है कि हरियाणा राज्य विधिक सेवाएँ प्राधिकरण द्वारा प्रदेश के विद्यालयों एवं महाविद्यालयों में 7101 विधिक साक्षरता क्लब संचालित किए जा रहे हैं। जिनमें 18 लाख से अधिक विद्यार्थी जुड़े हुए हैं।

पंजाब व हरियाणा उच्च न्यायलय के न्यायाधीश एवं हरियाणा राज्य विधिक सेवाएँ प्राधिकरण के कार्यकारी अध्यक्ष न्यायमूर्ति राजीव शर्मा ने अपने स्वागतीय भाषण में कहा कि प्राधिकरण द्वारा नौवीं कक्षा से लेकर कॉलेज स्तर तक के लगभग 18 लाख विद्यार्थियों को विधिक साक्षरता अभियान से जोड़ा गया है। उन्होंने प्राधिकरण द्वारा चलाए जा रहे कार्यक्रमों के बारे में भी विस्तृत जानकारी दी। धन्यवाद प्रस्ताव विद्यालय शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव डॉ.महावीर सिंह द्वारा रखा गया। कार्यक्रम में ब ड़ी संख्या में विद्यार्थी, शिक्षक, अभिभावक व अधिकारीगण उपस्थित रहे।

-शिक्षा सारथी डेस्क

हरियाणा का पूरा फोकस अब शैक्षिक गुणवत्ता पर

प्रमोद कुमार

लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति अर्थात प्रत्येक कक्षा के प्रत्येक विद्यार्थी को उसके कक्षा के लिए निर्धारित लर्निंग आउटकम्स (शिक्षण उपलब्धियों) को प्राप्त करना स्कूली शिक्षा का अनिवार्य अंग है। यदि नेशनल अचीवमैंट सर्वे (NAS) का अवलोकन किया जाए तो उसमें भी इस बात को प्राथमिकता दी जाती है। आज पूरे देश में लर्निंग आउटकम्स चर्चा का विषय है। हरियाणा राज्य की बात करें तो लर्निंग इनहांसमैंट प्रोग्राम, क्लास रैडीनेस प्रोग्राम, स्किल पासबुक, कैचअप प्रोग्राम तथा सक्षम कार्यक्रम इसके उदाहरण हैं कि राज्य का शिक्षा विभाग लर्निंग आउटकम्स की प्राप्ति के लिए कितना गम्भीर है। उपर्युक्त सभी कार्यक्रम कक्षा पहली से आठवीं के लिए हैं और उसके पीछे एक महत्त्वपूर्ण कारण है। ऐसा समझा और माना जाता है कि शिक्षा का अधिकार अधिनियम-2009 की धारा-13 जो 'नो डिटेंशन पॉलिसी' के लिए है, जिसमें कक्षा आठवीं तक किसी भी बच्चे को अनुत्तीर्ण नहीं किया जाएगा, उसके कारण बच्चों ने पढ़ना बन्द कर दिया और अध्यापकों ने पढ़ाना बन्द कर दिया। परीक्षा तथा फेल का भय/दबाव न होने के कारण बच्चे लापरवाह हो गए। इस कारण राज्य में लर्निंग आउटकम्स के लिए कक्षा 3, 5 और 8 के लिए कार्यक्रम चलाए गए।

यहाँ ध्यान देने योग्य एक और कक्षा है जो नौवीं है जिसमें बच्चे सीधे बिना किसी बाधा, बोर्ड परीक्षा, फेल-पास की स्क्रीनिंग के पहुँच रहे हैं। इन बच्चों के न्यूनतम अधिगम स्तर यानी मिनिमम लेवल ऑफ लर्निंग का आकलन किया जाए अथवा कक्षा नौवीं को पढ़ाने वाले अध्यापकों से चर्चा की जाए तो उनका कहना यही होता है कि इन विद्यार्थियों के पास चौथी कक्षा की दक्षता भी नहीं है और इन्हें कहाँ से पढ़ाना शुरू किया जाए, यह उनके लिए चिन्ता का विषय है। वे ऐसे विद्यार्थियों का रेमिडियल प्रोग्राम करें, उनकी क्लास रेडीनेस करें या सामान्य पाठ्यक्रम करवाएँ? अब अध्यापकों की अगली चिन्ता यह होती है कि ये सब विद्यार्थी अगर अगली कक्षा में चले गए तो उनका दसवीं के बोर्ड का परीक्षा परिणाम खराब होगा। इसके लिए उनके द्वारा दो सरल रास्तों में से किसी एक को चुन लिया जाता है। पहले तो उन्हें कक्षा नौवीं में ही फेल कर दिया जाता है, दूसरा यदि पास किया भी जाता है तो इस शर्त के साथ कि विद्यार्थी अपना स्कूल छोड़ने का प्रमाण पत्र लेगा तथा किसी अन्य स्कूल की ओर रुख करेगा। राज्य के विद्यालयों से आठवीं पास करने वाले कुल 4.5 लाख विद्यार्थियों में से केवल 3.1 लाख को ही दसवीं कक्षा तक ले जाया जाता है और अगर दसवीं का परीक्षा परिणाम देखें तो 3.1 लाख विद्यार्थियों में से केवल 2 लाख विद्यार्थी ही पास होते हैं अर्थात 4.5 लाख में से 2.3 लाख रास्ते में (नौवीं और दसवीं) में ही रह जाते हैं और एक बार फेल हुए विद्यार्थी के ड्रॉपआउट होने की सौ फीसदी संभावना रहती है। यह स्थिति अच्छी नहीं है। इस संदर्भ में विभाग द्वारा एक योजना बनाकर समस्या की पहचान, उसके निदान के लिए उपचार आदि पर चर्चा के लिए कार्य किया गया।

इस विषय पर चर्चा करने के लिए एक संयुक्त

बैठक का आयोजन किया गया जिसमें एससीईआरटी गुरुग्राम, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड भिवानी, टीचर एजुकेशन सैल, हरियाणा स्कूल शिक्षा परियोजना परिषद के साथ-साथ विभाग की शैक्षणिक शाखा के अधिकारी उपस्थित रहे। इस विषय पर चर्चा के उपरान्त यह निर्णय लिया गया कि कक्षा नौवीं के लिए उपचारात्मक शिक्षण यानी रेमिडियल कोचिंग की व्यवस्था की जाए तथा इसका समुचित हल निकाला जाए। इस सन्दर्भ में जब देश के अन्य राज्यों का अध्ययन किया गया तो पाया कि उड़ीसा राज्य में इस प्रकार का कार्यक्रम चलाया जा रहा है जिसमें 200 घंटे से अधिक का कार्यक्रम है, जो लर्निंग आउटकम्स अटेनमैंट के लिए क्लास रेडीनेस एवं रेमिडियल प्रोग्राम है। हरियाणा राज्य की कक्षा नौवीं के लिए भी ऐसा ही एक कार्यक्रम चलाए जाने पर सहमति बनी। प्रथम चरण में यह पायलट-प्रोजेक्ट तीन जिलों अम्बाला, नूंह तथा करनाल के लिए है तथा इसकी सफलता के आधार पर/उपलब्धियों के आधार पर अगले वर्ष से आवश्यक बदलाव के साथ अन्य जिलों में इसका क्रियान्वयन किया जाएगा।

कार्यक्रम का समय - इस रैमिडियल प्रोग्राम के अन्तर्गत वर्ष में 250 घंटों का कार्यक्रम है जो अक्टूबर मास से पूर्व सम्पन्न कर लिया जाएगा तथा अक्टूबर के उपरान्त कक्षा में सामान्य पाठ्यक्रम चलाया जाएगा। इसमें पठन-पाठन, प्रशिक्षण, मूल्यांकन सब शामिल है।

समूहों का गठन- स्किल पासबुक अथवा सैट (SAT) के आधार पर विद्यार्थियों के समूहों का गठन किया जा रहा है। उनकी उपलब्ध दक्षताओं के आधार पर ही उनके रेमिडियल प्रोग्राम का क्रियान्वयन होगा।

अध्यापक प्रशिक्षण- कक्षा नौवीं को पढ़ाने वाले अध्यापकों को प्रशिक्षण प्रदान किया गया है। इसके लिए चार अनिवार्य विषयों- अंग्रेजी, हिन्दी, विज्ञान तथा गणित के अध्यापकों को शामिल किया गया है। पठन-पाठन सामग्री जो इस रेमिडियल प्रोग्राम कम कैचअप प्रोग्राम के लिए तैयार की गई है, उसके लिए प्रशिक्षण प्रदान किया गया। इस प्रशिक्षण में पठन-पाठन, पाठ्य-सामग्री, विषय वस्तु के अतिरिक्त विभिन्न शिक्षण विधियों, मूल्यांकन स्वरूपों के अतिरिक्त समूहों के गठन बारे प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

शिक्षण अधिगम सामग्री- इस रेमिडियल कोचिंग कार्यक्रम के लिए टीचिंग लर्निंग मैटीरियल यानी टीएलएम भी सहायक सामग्री के रूप में विद्यार्थियों को उपलब्ध करवाया जाएगा जो विषयवार होगा तथा जिसमें ब्रिज कोर्स एवं क्लास रैडीनेस भी होगा।

विषय- कक्षा नौवीं में विभाग के विद्यालयों में एनसीईआरटी का पाठ्यक्रम ही पढ़ाया जाता है। जहाँ तक विषयों का सम्बन्ध है उसमें 6 विषय गणित, हिन्दी, अंग्रेजी, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन के अतिरिक्त तीसरी भाषा (संस्कृत, पंजाबी, उर्दू) होती है। यहाँ पर यह कार्यक्रम गणित, विज्ञान, हिन्दी तथा अंग्रेजी भाषा के लिए चलाया गया है, क्योंकि यदि शैक्षणिक वर्ष 2018-19 के कक्षा दसवीं के परीक्षा परिणामों का अवलोकन किया जाए तो एक लाख से अधिक विद्यार्थी केवल इन्हीं तीन विषयों में फेल हुए हैं। हिन्दी विषय को साथ जोड़ना आवश्यक है।

इस कार्यक्रम के लिए तीनों जिलों के शिक्षा अधिकारी तथा अध्यापक बधाई के पात्र हैं जिन्होंने विभिन्न प्रशिक्षणों के दौरान अपने बेहतर कौशल का प्रदर्शन किया है। बेसलाइन परीक्षा के आयोजन का जिक्र करें तो यह भी सराहनीय कार्य है। नौंवी कक्षा मे विद्यार्थियों के निदान, उपचार पर कार्य करके विभाग को इन तीनों जिलों से एक तस्वीर प्राप्त होगी जो आगे अन्य जिलों की रूपरेखा बनाने में मदद करेगी। हालांकि नूंह जैसे जिले में जहाँ अध्यापक समुचित मात्रा में नहीं हैं, फिर भी नूंह के प्रयास अति सराहनीय हैं। इस कार्यक्रम से यही आशा की जाती है कि यह रेमिडियल कार्यक्रम उस अध्यापक के लिए मददगार साबित होगा जो अपनी कक्षा के विद्यार्थियों को सचमुच पढ़ाना चाहता है, उसकी समस्या का हल करना चाहता है परन्तु पाठ्यक्रम पूरा करने का दवाब पहले उसे इस प्रकार के प्रयोग की अनुमति नहीं देता था।

कार्यक्रम अधिकारी
शैक्षणिक प्रकोष्ठ
निदेशालय सैकेण्डरी शिक्षा, हरियाणा

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सहज बनातीं कुछ एप्स

सुदर्शन पुनिया

सीखने-सिखाने की प्रक्रिया में तकनीकी का प्रयोग आज आम बात है। परंपरागत अधिगम प्रणाली की अपेक्षा ई-अधिगम प्रणाली काफी प्रभावशाली है। शिक्षण के क्षेत्र में इसका उपयोग लगातार बढ़ता जा रहा है। प्रदेश में चल रहे 'सक्षम' अभियान को सफल बनाने में भी इस प्रणाली का काफी योगदान है। सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को सुदृढ़ करने व मॉनिटरिंग व मेंटरिंग की प्रक्रिया को सुगम व प्रभावी बनाने के लिए कुछ एप्स बनाई गई हैं, जो संबंधित कार्य में काफी उपयोगी साबित हो रही हैं। इस लेख में ऐसी ही दो एप्स के बारे में जानकारी दी जा रही है।

चॉकलिट एप्लिकेशनः चाक से चाकलिट् की यात्रा-

मिलियन स्पार्क्स फाउंडेशन के सहयोग से राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद हरियाणा, गुरुग्राम चाकलिट् एप्लीकेशन द्वारा अध्यापकों को सीखने- सिखाने का एक बहुत ही प्रभावशाली मंच उपलब्ध करवाया जा रहा है। देश भर के शिक्षक चाकलिट का प्रयोग करके अपनी शिक्षण तकनीकों को और अधिक रुचिकर और प्रभावशाली बना रहे हैं। चाकलिट एक ऐसा प्लेटफार्म है जहाँ कई राज्यों के अध्यापक जुड़कर अपने नवाचारी और सृजनात्मक विचारों को साँझा कर रहे हैं। इसका प्रयोग फेसबुक से भी आसान है। आप इस पर अपना स्वयं का कोई नवाचारी कार्य साँझा कर सकते हैं तथा अन्य अध्यापक साथियों के कार्य को फेसबुक की तरह like कर सकते और comment कर सकते हैं।

चाकलिट का प्रयोग कैसे करें -

सबसे पहले अध्यापक को यह एप अपने फ़ोन में डाउनलोड करके इंस्टाल करना होगा जो कि प्ले स्टोर और एप स्टोर पर उपलब्ध है इंस्टाल करने के बाद आपको इसमें अपनी आधारभूत जानकारी जैसे आपका नाम, पद, कार्यस्थल और फ़ोन नंबर डालकर अपने आप को रजिस्टर करना पड़ेगा आपको होमपेज पर नीचे चार विकल्प दिखाई देंगे होम, अध्यापक प्रशिक्षण, अध्यापक उपकरण और अधिक। जब भी कोई ऑनलाइन ट्रेनिंग शुरू होती है तो अध्यापकों को एक कोड दिया जाता है जिसका प्रयोग करके अध्यापक ऑनलाइन प्रशिक्षण ले सकते हैं अभी अध्यापकों को केवल अध्यापक उपकरण (Teacher's Tool) पर क्लिक करके अपने आपको सक्षम तालिका के लिए रजिस्टर करना है एक बार रजिस्टर होने पर आप यहाँ पर कक्षा, विषय एवं पाठ अनुसार दक्षताएं और पाठ योजना प्राप्त कर सकते हैं जो आपके अध्यापन कार्य को प्रभावशाली और रुचिकर बना सकते हैं।

चाकलिट् एप के लाभः

1) **कौशल संवर्धन :** चाकलिट् एप शिक्षकों को अपने ज्ञान और कौशल को बढ़ाने का मौका देता है और उनकी कक्षा के लिए अधिक सटीक और उपयोगी पाठ योजना

प्रस्तुत करता है।

2) **संसाधन निर्माणः** इस एप पर विभिन्न राज्यों के अध्यापकों की नवाचारी गतिविधियाँ देखी जा सकती हैं शिक्षक बड़ी संख्या में संसाधनों से ज्ञान अर्जन कर सकता है।

3) **ज्ञान का विस्तार :** अध्यापक अपनी नवाचारी गतिविधियों को अधिकतम अध्यापकों तक पहुँचाने के लिए इस प्लेटफार्म का इस्तेमाल कर सकता है।

4) **प्रयोग में आसान :** कहीं भी सीखने की प्रक्रिया को आसान बनाते हुए ऐप कभी भी और

कहीं भी आसानी से प्रयोग किया जा सकता है जिसके लिए आपको बस एक स्मार्टफोन और उसमे इंटरनेट की आवश्यकता होगी।

5) **समय प्रभावी:** चूंकि यह ऐप संक्षिप्त है और जानकारी समय पर अपडेट होती है, इसलिए विभिन्न पुस्तकों के माध्यम से पढ़ने का समय बचाया जा सकता है और कहीं भी किसी समय अध्यापक इसका प्रयोग कर सकता है।

चाकलिट् एप्लिकेशन के बारे में शिक्षकों द्वारा कुछ फीडबैक:

1. यह एप अंधेरे में प्रकाश की किरण के रूप में काम कर रहा है एक शिक्षक के रूप में मैं यहाँ से बहुत सारे शिक्षण उपकरण का उपयोग कर रही हूँ। इसके प्रयोग से बहुत सारे नए विचार आते हैं। - श्रीमती नीलम, प्राथमिक अध्यापिका, राजकीय माध्यमिक विद्यालय,बाबरा (झज्जर)
2. सर्वोत्तम सहायक शिक्षण पद्धतियाँ यहाँ दी गई हैं जो शिक्षकों के साथ-साथ छात्रों के लिए भी उत्कृष्ट हैं। पुस्तकों पर निर्भरता कम करता है। अधिक समय देने की आवश्यकता नहीं है। इसकी भाषा भी आसान है विशेष रूप से गणित खंड में। - श्री सतबीर गुलिया, प्राथमिक अध्यापक, राजकीय प्राथमिक विद्यालय सिकंदरपुर (झज्जर)
3. अपने फुर्सत के समय का सबसे अच्छा सकारात्मक प्रयोग किया जा सकता है और साथ-साथ अपने पेशेवर कौशल को बढ़ाया जा सकता है। -श्री विनय कुमार, टीजीटी राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, डावला (झज्जर)
4. बहुत अच्छा, दिलचस्प, अभिनव और सूचनात्मक लेकिन अन्य विषयों की तुलना में विज्ञान और गणित पर अधिक केंद्रित लगता है। -श्री भूपेंद्र रोज, प्राध्यापक सह मेंटर, डाइट माछरौली।
5. यह एप शिक्षण गतिविधियों के लिए बहुत अच्छा है और यह शिक्षकों के साथ-साथ छात्रों को भी मदद करता है। इसलिए यह बहुत लाभप्रद है। विद्यालय मॉनिटरिंग करते हुए मैं अध्यापकों को इस एप से सम्बंधित जानकारी जरूर देता हूँ। - श्री राजेश खन्ना, जिला परियोजना संयोजक, झज्जर

सक्षम समीक्षा

सक्षम सेल हरियाणा ने मॉनिटरिंग और मेंटरिंग (सक्षम और अधिगम संवर्धन कार्यक्रम) की रिपोर्ट को सुगम और प्रभावी बनाने के लिए सूचना प्रोद्यौगिकी को इसमें शामिल करते हुए सक्षम समीक्षा नामक एप बनाया है इस एप पर सभी शैक्षणिक और गैर शैक्षणिक मॉनिटरिंग और मेंटरिंग का रिकॉर्ड रहता है। इस एप का प्रयोग सभी मॉनिटर (जिला और खंड स्तर के शिक्षा अधिकारी), मेंटर (एबीआरसी, बीआरपी और डाइट के प्राध्यापक) और एस एल ओ (School LEP Owner) करते हैं। माननीय मुख्यमंत्री श्री मनोहर लाल जी ने 26 जुलाई को राज्य स्तरीय सक्षम सम्मान समारोह में इसको लॉन्च किया था। ऐप के लॉन्च के साथ, स्कूल निरीक्षण रिपोर्ट से संबंधित डेटा ऐप पर अपलोड किया जाएगा। इससे स्कूल की मेंटरिंग प्रणाली डिजिटल और पेपरलेस हो जाएगी। पहले, कई बार अधिकारी रिपोर्ट देर से भेजते थे जिसके कारण प्लानिंग एवं समय पर उचित कदम लेने में देर हो जाती थी, लेकिन अब डेटा ऐप पर उपलब्ध होगा, इसलिए स्कूल की मेंटरिंग अधिक समय के लिए हो जाएगी।

इस एप का प्रयोग कैसे करें :-

सभी मेंटर और मॉनिटर अपनी कर्मचारी अभिज्ञान संख्या (अपनी आईडी) को आईडी और pass @123 को पासवर्ड (जिसको बदला जा सकता है) के रूप में प्रयोग करके लॉग इन कर सकते हैं। लॉग इन होने पर चार विकल्प आपके सामने होते है माय विज़िट , फिल फॉर्म, अन-सबमिटेड फॉर्म्स और हेल्प।

माय विज़िट- से निगरानीकर्ता अपनी पहले की गई निरीक्षण रिपोर्ट देख सकते हैं

फिल फॉर्म - यह इस एप का सबसे महत्वपूर्ण भाग है। इस पर क्लिक करके सबसे पहले जिला, खंड और विद्यालय का चयन किया जाता है। इसके उपरान्त चार विकल्प उपलब्ध होते हैं- मेंटर विजिट (एबीआरसी, बीआरपी और डाइट के प्राध्यापक के लिए) मॉनिटर विजिट (अधिकारियों के लिए)

सैट (एसएटी) विजिट- इसका प्रयोग सैट परीक्षाओं की निगरानी और इनके नकल रहित संचालन के लिए किया जाता है।

एसएलओ विजिट- इसका प्रयोग प्राथमिक विद्यालय मुखिया द्वारा अपने विद्यालय की एलईपी की रिपोर्ट भरने के लिए किया जाता है।

अन-सबमिटेड फॉर्म्स में आपको वे फॉर्म मिलते हैं जो इंटरनेट की पहुँच न होने या किसी अन्य तकनीकी कारण से जमा नहीं हुए। इनको फिर से सब्मिट कराया जा सकता है।

किसी तकनीकी सहायता के लिए हेल्प पर क्लिक किया जा सकता है।

सभी प्रकार की विद्यालय निगरानी के लिए इस एप पर फॉर्म उपलब्ध हैं जिसमें सूचनाएँ भरी जानी होती हैं ।

इस एप की प्रमुख विशेषता यह है कि इसमें निरीक्षणकर्ता को विद्यालय की लाइव पिक्चर लेकर अपलोड करनी होती है।

इस एप पर सक्षम, अधिगम संवर्धन कार्यक्रम और अन्य गैर शैक्षणिक निगरानी की रिपोर्ट अपलोड की जाती है।

सक्षम समीक्षा के माध्यम से स्कूल निरीक्षण क्यों महत्वपूर्ण है -

स्कूलों में निगरानी और मूल्यांकन की जवाबदेही निश्चित हो जाती है। निगरानी और मूल्यांकन का रिकॉर्ड रखा जाता है और जब चाहे देखा जा सकता है। इससे यह पता लगाने में भी मदद मिलती है कि स्कूल में शिक्षण पद्धति वांछित शैक्षिक परिणामों तक पहुँच रही है या नहीं। किसी भी स्कूल प्रबंधन टीम के पास पिछले अनुभवों से सीखने और सुधार करने के लिए बेहतर विकल्प उपलब्ध होते हैं।

ऑनलाइन मोनिटरिंग में शिक्षकों और छात्रों दोनों के प्रदर्शन को बढ़ाने की क्षमता है। प्रौद्योगिकी का उपयोग करके स्कूल प्रबंधन और शिक्षक उन डेटा तक पहुँच बना सकते हैं, जिनका उपयोग छात्रों के प्रदर्शन को बेहतर बनाने के बारे में मार्गदर्शन देने के लिए किया जा सकता है।

इस एप के माध्यम से विद्यालय निरीक्षण की रिपोर्ट तुरंत उच्च अधिकारियों तक पहुँच जाती है जिससे समय पर उचित नीति-निर्माण में सहायता मिलती है। इसका प्रयोग करना भी बहुत आसान है। यदि विद्यालय में इंटरनेट तक पहुँच न हो तो अन-सबमिटेड फॉर्म्स को बाद में भी सबमिट किया जा सकता है।

प्राध्यापक
डाइट माछरौली एवं
जिला सक्षम नोडल अधिकारी, झज्जर

कक्षा-शिक्षण को प्रभावी कैसे बनाएँ?

अपने कक्षा-शिक्षण को प्रभावी कैसे बनाएँ? यह सवाल वास्तव में बहुत ही उलझाने वाला है साथ ही यह विषय सम्भवतः सभी शिक्षकों की रुचि का है। यदि कोई शिक्षक है तो यह सवाल आ ही जाता है कि क्या करें जिससे हमारे बच्चे ज्यादा आसानी से और बेहतर सीख पाएँ ? कैसे जानें कि हम जो भी पढ़ा रहे हैं वह कितना अच्छा है और उसमें हम किस प्रकार का सुधारकर सकते हैं? क्या जो हम पढ़ा रहे हैं, हमारे बच्चे वास्तव में वही पढ़ना चाहते हैं? क्या करें कि हमारी कक्षा में बच्चे अपनी रुचि से प्रतिभागिता करें और अनुशासन भी बना रहे? हम अपने कक्षा-शिक्षण में बच्चों की अभिरुचियों को बढ़ा पाएँ ...इत्यादि इत्यादि।

आइए, हम इन प्रश्नों के इर्द-गिर्द कुछ जानने का प्रयास करें।

अपनी पाठ-योजना को और रुचिपूर्ण बनाएँ

आपने पिछली बार कब तय किया था कि अगले सप्ताह आप क्या पढ़ाने वाले हैं? यदि हम इस प्रश्न पर एक सर्वे करें तो सम्भवतः परिणाम बहुत ही चौंकाने वाले हो सकते हैं। ऐसे बहुत कम ही शिक्षक होंगे जो सम्भवतः अपने शिक्षण की अग्रिम योजना इस तरह से तैयार करते हैं। दरअसल हम अपने शिक्षण-बिन्दु का चुनाव कभी इस नजरिए से करते ही नहीं हैं कि हमें अगले सप्ताह या अगले पखवाड़े क्या पढ़ाना है? कभी- कभी तो यह बहुत ही अनिश्चित होता है कि हम क्या पढ़ाने वाले हैं। यह कक्षा में पहुँचने के बाद ही तय हो पाता है। यही वह बिन्दु है, जहाँ हमें गौर करने की जरूरत है। पर क्या इतने भर से काम बन जाएगा? सम्भवतः नहीं। हमें कुछ ऐसा करना पड़ेगा जो हमारे पाठ में बच्चों की प्रतिभागिता, उनकी रुचि, उनकी उम्मीदों और आकांक्षाओं को शामिल कर दे। आप ऐसा क्या कर सकते हैं, जरा सोचिए ? आपने पिछली बार अपने विद्यार्थियों से कब पूछा था कि उनको क्या पढ़ना है? इस सन्दर्भ में यह सवाल थोड़ा कठिन जान पड़ता है कि क्या यह भी कोई पूछने वाली बात है? क्या अब हमें बच्चों से पूछकर अपने शिक्षण को तय करना पड़ेगा? दरअसल, हमने कभी भी यह जानने की कोशिश ही नहीं की कि जो अध्याय हम उन्हें पढ़ाने जा रहे हैं, बच्चे उससे सम्बन्धित किन सवालों के जवाब जानना चाहते हैं? उस पाठ से सम्बन्धित उनके क्या-क्या सवाल हैं? शायद हम कभी इस दिशा में सोचते ही नहीं हैं। हम तो किसी चैप्टर या अध्याय को बस इसीलिए पढ़ाना चाहते हैं कि उस चैप्टर के अन्त में जो प्रश्न दिए गए हैं उनके उत्तर बच्चे जान लें। बजाय इसके कि उनके क्या प्रश्न हैं? हो सकता है कि पाठ के अन्त में जो सवाल दिए हुए हैं, उनमें से बहुतों के उत्तर बच्चों को पहले से ही मालूम हों। तो फिर ऐसे में हमारे पढ़ाने का क्या फायदा?

सम्भवतः यही कारण है कि बच्चे हमारे शिक्षण में रुचि नहीं लेते हैं। क्योंकि उसमें न तो उनकी बातें शामिल होती हैं और न ही उनके विचार।

तो इसके लिए आखिर क्या करें? इसका जवाब बहुत ही साधारण और आसान है। आप अपने अगले शिक्षण बिन्दु या टॉपिक का चुनाव कम से कम एक हफ्ते पहले या तीन दिन पहले करें। अगर आप यह काम एक हफ्ते पहले कर सकते हैं तो शायद बहुत ही बेहतर

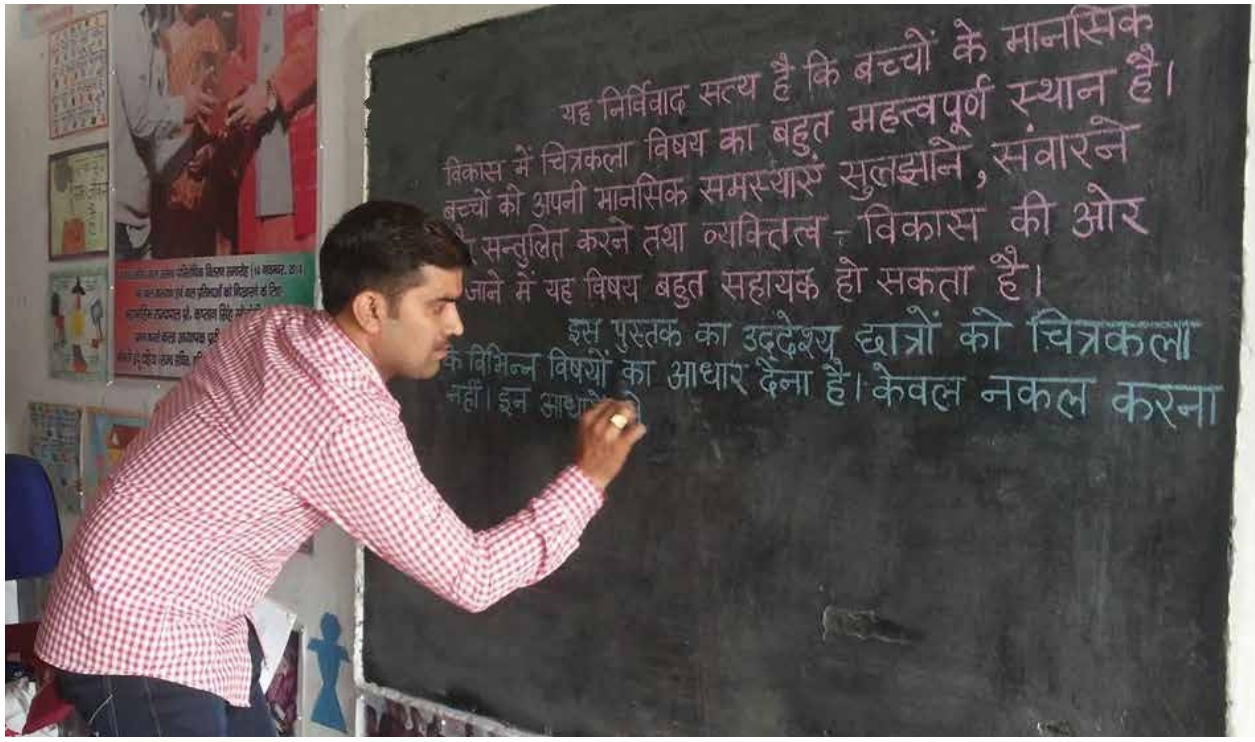

स्थिति होगी। आप जिस टॉपिक पर अगले सप्ताह क्लास लेने जा रहे हों उसे अपने विद्यार्थियों के साथ सांझा करें। उन्हें बताएँ कि आप अगले सप्ताह क्या पढ़ाने जा रहे हैं? इस पर उनके सवालों को सुनें कि इस टॉपिक के बारे में वे क्या-क्या जानना चाहते हैं? आखिर आप पढ़ाने तो उन्हीं को जा रहे हैं ना ? तो फिर उनको बताने में कैसी शरम? पढ़ना भी तो उन्हीं को है ना! फिर उनको क्यूँ न पता हो कि आगे उनको आप क्या पढ़ाने वाले हैं? आप केवल यह न बताएँ कि अगले सप्ताह उन्हें क्या पढ़ाने वाले हैं, बल्कि उनसे यह भी पूछें कि इस टॉपिक के विषय में वे क्या जानना चाहते हैं? अपने विद्यार्थियों से यह भी जानने का प्रयास करें कि इस टॉपिक पर अभी वे क्या-क्या जानते हैं? यह वही काम है जो आपको कई मायनों में सहयोग करेगा। जब आप एक बार यह जान लेंगे कि उक्त टॉपिक पर आपका विद्यार्थी पहले से क्या जानता है, तो एक तरफ आपको कहाँ से पढ़ाना शुरू करना है जहाँ इसमें मदद मिल जाएगी और वहीं दूसरी तरफ आपको यह पता चल जाएगा कि आपको आखिर पढ़ाना क्या है?

यह एक तरह का स्मार्ट वर्क हुआ, जो आपके श्रम या यूँ कहें परिश्रम या कठिनाई को भी बचाएगा। अब चूँकि आपके इस प्लान में सभी बच्चों के प्रश्न शामिल हैं, इसलिए आपकी कक्षा में सभी बच्चे पहले से कुछ पढ़कर आएँगे और अपनी जिज्ञासाओं के इंतजार में शिक्षण के दौरान रुचि भी लेंगे। उनमें स्वतः ही अनुशासन का गुण विकसित हो सकेगा। इसके साथ ही आपको प्रत्येक विद्यार्थी के हिसाब से अपना शिक्षण प्लान करने में भी मदद मिल सकेगी। इस दौरान आपको यह भी अन्दाजा लग जाएगा कि किस जगह पर और कैसे एक-दूसरे बच्चे की मदद लेनी है और एक-दूसरे की सहायता करनी है।

अपनी पाठ-योजना को अधिक पार्टिसिपेटरी बनाएँ

हम अभी कुछ आगे तो बढ़े हैं पर पूरी तरह से नहीं! क्यूँकि अभी तक हमने केवल बच्चों के नजरिए को ही देखा है और इसे जान पाएँ हैं, जबकि अभी प्रक्रियाओं की वैधता और उनकी गुणवत्ता को जानना बाकी है। यदि हम इस पर भी कुछ काम कर पाएँ तो शायद चार चाँद लग जाएँगे। यदि हम यह जान पाएँ कि इसी प्रकार के प्रश्नों का जवाब किसी दूसरे शिक्षक ने कैसे दिया है? या किसी प्रश्न का उत्तर देने के लिए किसी दूसरे शिक्षक ने कौन-सी प्रक्रिया अपनाई है? या जो प्रक्रिया हम अपनाने जा रहे हैं, वह कितनी सही है और उसे कैसे बेहतर तथा प्रभावी बनाया जा सकता है? इससे हमारे लैसन-प्लान और शिक्षण में अवश्य ही गुणवत्ता आ जाएगी। यह एक दूसरे प्रकार की समस्या है, जिसमें आपकी मदद शायद कोई बच्चा न कर पाए। इसके लिए तो हमें उन शिक्षकों के बीच में ही जाना होगा, जिन्होनें कभी इस तरह का प्रयास किया है। अभी शायद यह थोड़ा मुश्किल भरा काम लग सकता है, पर इतना भी नहीं कि किया ही न जा सके।

आप सोशल मीडिया में किसी न किसी फोरम के हिस्से जरूर होंगे। क्या हमने कभी इसका इस्तेमाल (जानबूझकर मैं इस्तेमाल शब्द प्रयोग कर रहा हूँ) अपने पेशेवर विकास के लिए किया है? शायद नहीं? दरअसल सोशल मीडिया आज हमारे एक-दूसरे से कनेक्ट होने का अच्छा माध्यम तो जरूर बन गया है, पर इसका प्रयोग अभी हाल-चाल जानने तक ही सीमित है। हमने कभी भी इसका इस्तेमाल अपने खुद के प्रोफेशनल विकास के लिए नहीं किया है। कोई बात नहीं अगर अभी तक नहीं किया है तो इसका मतलब यह तो नहीं कि कभी भी न करें! आज से ही इसकी शुरुआत करें! आप किसी न किसी ऐसे सक्रिय सोशल मीडिया समूह के हिस्से बन सकते हैं जहाँ पर इस प्रकार का मौका उपलब्ध हो। अपने समान पेशेवर लोगों से जुड़िए, उनके साथ अपने अनुभवों या कार्यों को साझा कीजिए। आप ऐसे समूह में अपने लैसन प्लान को साझा करें, शरमाएँ मत, समूह के सभी सदस्यों से उस पर उनकी राय माँगें कि उन्होंने उस टॉपिक को कैसे पढ़ाया है? या आपकी शिक्षण-पद्धति पर उनकी क्या राय है? यह कदम आपके लैसन-प्लान को ज्यादा पार्टिसिपेटरी (participatory) बना सकता है। आपके लैसन-प्लान में जितने अधिक लोगों के व्यूज होंगे, वह उतना ही अधिक गुणवत्तापूर्ण होगा। यकीन कीजिए, एक बार यदि आपने यह कर लिया आपको गजब का आत्मविश्वास मिल जाएगा। और तो और आपका लैसन-प्लान और शैक्षणिक चिंताएँ भी सच में छू-मन्तर हो जाएँगी। आपका कक्षा-शिक्षण भी हो जाएगा प्रभावी ।

प्रस्तुत लेख के लेखक शिक्षा के क्षेत्र में पिछले 11 वर्ष से कार्यरत हैं। लेख 'टीचर्स ऑफ इंडिया' से साभार ।

अविनाश शर्मा

अविस्मरणीय स्मृतियाँ छोड़ गया मनाली एडवेंचर कैम्प

डॉ. ओमप्रकाश कादयान

मई माह के अन्तिम दो दिन शेष थे। हरियाणा में गर्मी अपने चरम पर थी। सूरज देवता के सम्पर्क में जो भी वस्तु या प्राणी आता उसे तपा सा देता। मौसम उबलते हुए दूध की तरह गर्म था। जून की छुट्टियों के शुरु होने में दो दिन बाकी। फिर अचानक शिक्षा विभाग हरियाणा पंचकूला से बच्चों के लिए उत्साह व खुशी से भरा एक पत्र आया कि एक जून से 30 जून तक प्राकृतिक सुषमा से सराबोर मनाली हिमाचल प्रदेश में कक्षा नौंवीं से बारहवीं के छात्र-छात्राओं के लिए एडवेंचर एवं ट्रैकिंग कैंप लगा है, उसमें फतेहाबाद, पलवल, कैथल, कुरुक्षेत्र जिलों को शामिल होना है। हमारे स्कूल में जब फतेहाबाद के जिला शिक्षा अधिकारी दयानन्द सिहाग की ओर से एडवेंचर कैंप के लिए बच्चे भेजने बारे पत्र आया तो बच्चे खुशी के मारे उछलने लगे। एक तो हरियाणा की असहनीय गर्मी से कुछ छुटकारा पाने का सवाल था, दूसरी तरफ ऊर्जा उत्साह, उत्सुकता, व जिज्ञासा से भरी रोचक यात्रा थी, जिसमें पूरे वेग से बहती विशाल व्यास

नदी, सैकड़ों तरह के प्रहरी-से खड़े परोपकारी पेड़, सघन वन, सेब, आड़ू, आलू बुखारे, खुरमानी, नाशपाती, बब्बूगोसे के बगीचे, आसमान को छूते ऊँचे-ऊँचे पर्वत, जीवन राग सुनाते झरने, हरी भरी सबको आकर्षित करती सुन्दर वादियाँ, पहाड़ों की ऊँची चोटियाँ व उन चोटियों पर सदियों से जमी हुई श्वेत हिम, पहाड़ों की ढलानों पर बने लकड़ी के सुन्दर घर सीढ़ीदार खेत, शीतल वातावरण, ऊँचे दरख्तों से टकराती हुई सूँ-सूँ करती हवा, बार-बार उमड़ते घुमड़ते हुए बीच-बीच में गर्जन करते मेघ, पीठ पर दुनिया भर का बोझा उठाकर पहाड चढ़ती हिमाचली औरतें, खेतों या बागों में काम करते मर्द, जनजीवन, मन्दिर, गर्म पानी के चश्में तथा अनेक पर्यटन स्थल हैं। और भी बहुत कुछ है जिससे पर्यटकों को यह भूमि अपनी ओर खींचती है। बच्चों के लिए यहाँ सीखने के लिए बहुत कुछ है। जो बच्चे कभी लंबी यात्रा नहीं कर पाते, यहाँ तक कि अधिकतर अपने गाँव-स्कूल से अधिक दूर नहीं जा पाते, उन्हें शिक्षा विभाग एक ऐसा स्वर्णिम अवसर प्रदान करता है जिसे विद्यार्थी ताउम्र नहीं भूल पाएँगे। इन एडवेंचर कैंपों की मधुर यादें इन विद्यार्थियों के होठों पर लंबे समय तक मुस्कान देती रहेगी। इसमें भी कोई संदेह नहीं कि ये एडवेंचर कार्यक्रम बच्चों को मन के साथ-साथ शारीरिक तौर पर भी मजबूत बनाते हैं। इसी मजबूती से उनमें ऐसा आत्मविश्वास पैदा होता है कि वे हर कठिनाई से जूझ जाते हैं। फिर विद्यार्थी जो किताबों में नहीं पढ़ पाते, जिन जानकारियों व ज्ञान के बिना वे अधूरा महसूस करते हैं, वह सब उनको इन कैंपों से मिल जाता है। यानी ये कैम्प विद्यार्थी जीवन के लिए आवश्यक कहे जा सकते हैं। यह बात अलग है कि यह मौका सबको नहीं मिल पाता। किन्तु जो बच्चे प्रतिभाशाली हैं, उन्हें यह अवसर शिक्षा विभाग प्रदान करता है। इन सभी प्रक्रियाओं के पीछे विद्यालय शिक्षा विभाग पंचकूला के कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार की गहरी सोच, सहायक निदेशक नन्द किशोर वर्मा की सलाह तथा उच्चाधिकारियों की स्वीकृति व योजना है और अध्यापकों की विश्वसनीय टीम का सहयोग।

रोचक शिक्षाप्रद ज्ञानवर्धक, स्वास्थयवर्धक तथा उत्साह व कौतूहल से भरे मनाली के एडवेंचर कैंप के लिए हम सभी 45 छात्राएँ, 45 छात्र, 10 शिक्षक-शिक्षिकाएँ एक जून को सुबह नौ बजे फतेहाबाद से दो रोडवेज की बसों में सवार हो पंचकूला की ओर चले। जिला शिक्षा अधिकारी दयानन्द सिहाग ने हरी झंडी दिखा बसों को रवाना किया। इसी तरह हर जिले से शिक्षा अधिकारियों ने अपने अपने हिसाब से बच्चों को शुभकामनाएँ देकर रवाना किया।

पंचकूला के सेक्टर-15 स्थित राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय में सभी बच्चों व शिक्षकों के लिए दोपहर व शाम का खाना था, जिसका प्रबन्ध शिक्षा विभाग की ओर से ही था। चारों जिलों के करीब 400 बच्चे मनाली के लिए रवाना हों उससे पहले कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार सभी विद्यार्थियों व शिक्षकों से रू-ब-रू हुए। जहाँ उन्होंने शिक्षकों को जरूरी हिदायतें दीं। रात्रि करीब 8 बजे 400 विद्यार्थी अपनी अपनी बसों में सवार हो गए। सभी बसों का सफर आरम्भ हुआ। बच्चों ने अपने अपने आराध्य देवी-देवताओं की जय-जयकार की। फिर बच्चे गाते, नाचते, बतियाते मनाली की ओर बढ़ रहे थे। इन सबके चेहरे पर जो मुस्कराहट व उम्मीद थी, उससे लग रहा था जैसे इन बच्चों को कोई अलादीन का चिराग मिल गया हो। पंचकूला व चण्डीगढ़ की झिलमिलाहट के बाद कुछ घंटे उपरान्त बसें पहाड़ों के सीने पर चढ़ने लगी बच्चों में उत्सुकता जागी। सफर के साथ ही पहाड़ ऊँचे होते गए। वादियों में लाइटों की झिलमिल बढ़ती गई। आकाश तारों से भरा था तो जमीं भी तारों से सजी लगने लगी। रात अधिक होती गई। सफर धीरे-धीरे कटता गया, धीरे-धीरे सभी बच्चे सो गए। सुबह जब उजाला हुआ तो सृष्टि जैसे नाच रही थी। पंछियों का शोर दिन की शुरुआत के साथ उनकी उन्मुक्त उड़ान देखकर आभास होता था कि मानो सारी सृष्टि ही जाग उठी थी। चारों ओर गगनचुम्बी पहाड़, पहाड़ों पर जंगलों की सौगात, घने पेड़ों के बीच नदी के किनारे-किनारे बनी सडक पर

निरन्तर चलती बस। पहाड़ों की ढ़लानों पर आश्चर्य चकित कर देने वाले घर और भी बहुत कुछ। अब बच्चे धीरे-धीरे नींद में ऊँघते हुए उठ रहे थे। मौसम बदल चुका था। ठंड इतनी बढ़ गयी कि किसी ने स्वेटर जर्सी पहनी तो किसी ने चादर ओढ़ ली। बच्चे जैसे-जैसे उठते गए बस से बाहर झांकने की उत्सुकता बढ़ती गई। ये अधिकतर वे बच्चे थे जो यह खूबसूरत मंजर पहली बार देख रहे थे। बच्चे बाहर के दृश्यों के फोटो लेने लगे।

''वाऊ! कितने सुन्दर नजारे हैं।''

'हाँ, कितने ऊँचे पहाड़?'

''देखो, पहाड़ों की चोटियों पर कितनी बर्फ जमी है।''

''पहाड़ों की ढलानों पर कितने सुन्दर मकान हैं। देखो ये लोग कितनी खतरनाक जगह में रहते हैं। इन्हें डर भी नहीं लगता।''

''ये है क्या वो व्यास नदी? कितना पानी है इसमें।''

''क्या ये सारा पानी बर्फ पिघलकर बनता है?''

बच्चे हिमाचल की सुन्दरता को देखकर खुश हो रहे थे, आश्चर्यचकित थे, उत्साहित थे। उनके मन में तरह-तरह की जिज्ञासाएँ हिलोरें मार रही थीं, उत्सुकता जन्म ले रही थी। बस अपनी गति से आगे बढ़ रही थी तो बच्चों की निगाहें व मन प्रकृति के खूबसूरत अद्भुत नजारों पर टिका हुआ था। हम सभी सुबह करीब नौ बजे मनाली की देवधरा पर थे। चार जिलों में से फतेहाबाद व पलवल के 200 विद्यार्थी हरिपुर साइट पर गए तो कैथल व कुरुक्षेत्र के 200 विद्यार्थी भानुपूल साइट पर भेज दिये गए। हमें हरीपुर साइट पर ठहरना था। बस रुकी, अपना-अपना सामान लेकर व्यास नदी के लम्बे पुल को पार करके एक बड़ा व एक छोटा नाला पार करके चीड़ व देवदार के सघन व लम्बे पेड़ों को पार करते हुए हम कैम्प साइट पहुँचे जो सेब, आलू, बब्बूगोसे, आड़ू, नाशपाती के बागों के मध्य थी। सबसे पहले सबको टेंट अलॉट किये गए। फिर नहा धोकर भोजन की व्यवस्था की। सबने भोजन किया। जहाँ हम रुके थे उसके चारों ओर गगनचुम्बी पहाड़ थे। इन पहाडों पर नीचे हरे भरे जंगल खेत थे, बस्तियाँ थीं तथा ऊँची चोटियों पर ग्लेशियर थे, जिन पर बर्फ जमती व पिघलती रहती है। ये ग्लेशियर ही पहाड़ी लोगों की ही जीवन रेखा नहीं बल्कि मैदानी भागों के लिए वरदान है, क्योंकि ये ग्लेशियर पिघलकर झरने बनते हैं, झरनों से नदियाँ। नदियों से नहरें निकलकर यह पानी खेतों में जाकर फसलें लहलहाता है और बस्तियों गाँवों-कस्बों-शहरों की प्यास बुझाता है। अधिकतर बच्चों ने ये ग्लेशियर पहली बार देखे थे। शिक्षा विभाग का उद्देश्य भी यही है कि विद्यार्थी प्रकृति को अच्छी तरह देखें, जानें, समझें तथा उसका सम्मान करना सीखें।

बच्चे प्राकृतिक सौन्दर्य का रसपान कर रहे थे, फोटो खींच रहे थे, सेल्फी ले रहे थे। ग्लेशियरों को आश्चर्यचकित होकर देख रहे थे। अब एक सीटी बजी। यह सीटी सभी बच्चों को एकत्र करने के लिए थी। बच्चों को इकट्ठा करके कुछ खास निर्देश दिये गए। वातावरण व यहाँ के भूगोल के बारे में कुछ बताया गया। फिर सभी को जूते पहनकर ट्रैकिंग के लिए तैयार होने को कहा गया। सभी पाँच मिनट में तैयार होकर आ गए तथा कैम्प साइट से करीब तीन किलोमीटर दूरी पर स्थित प्राचीन शिव मन्दिर देखने चल दिए।

ट्रैकिंग के समय एक प्रशिक्षक आगे एक पीछे तथा एक दो या तीन बीच में होते हैं ताकि बच्चे अनुशासित रहें। साथ में शिक्षक भी होते हैं। नदी, नालों, झरनों को लांघते हुए एक पहाड़ से दूसरे पहाड़ पर चढ़ते-उतरते हुए बच्चे चलते रहे। रास्ते में बहुत कुछ था जो बच्चों के देखने व सीखने लायक था। बच्चों ने पहाड़ी लोगों को बागवानी करते, खेती करते, पशु चराते, औरतों को घास ढोते, कलात्मक दीया बनाते, घर का कामकाज करते हुए देखा तथा हिमाचली संस्कृति को जाना। कुछ बच्चों ने ग्रामीण महिलाओं से, बच्चों से बात की। एक तरफ का सफर पूरा होने पर बच्चो ने प्राचीन शिव मन्दिर की वास्तुकला के बारे में जाना। वहाँ से आकर बच्चों को एडवेंचर गतिविधियाँ शुरू करवाई गईं। ये एडवेंचर गतिविधियाँ बच्चों में आत्मविश्वास व साहस पैदा करती हैं वहीं तन-मन को मजबूत करती हैं, मनोरजंन भी करती हैं, जीना सीखाती हैं तथा कठिनाइयों से जूझना सिखाती हैं। खाना खाने उपरान्त रात को बच्चों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किया गया। ये कार्यक्रम बच्चों के भरपूर मनोरंजन करने, थकान उतारने के साथ-साथ बच्चों को अपनी सांस्कृतिक परम्पराओं से जोड़े रखते हैं तथा बच्चों की प्रतिभा में निखार लाते हैं तथा उन्हें बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न बनाते हैं। इस अवसर पर छात्रों ने जहाँ गीत, गजल सुनाई वहीं योग नृत्य भी किया। दूसरी तरफ छात्राओं ने गीत, कविता, नृत्य, लोक नृत्य प्रस्तुत कर सभी का मन मोहा। अगले दिन एक तरफ रिवर

क्रॉसिंग का भरपूर आनन्द उठाया, वहीं दूसरी ओर रॉक क्लाइम्बिंग करवाया गया। ट्रैकिंग व अन्य गतिविधियाँ चलती रहीं। दोपहर बाद अचानक पहाड़ों के हरे बदन काले नीले सफेद बादलों के झुण्ड से घिर गए। बादलों ने पहाड़ों को अपने आगोश में ले लिया। धीरे-धीरे पहाड़ों की चोटियाँ घने जंगल, बाग, खेत, बस्तियाँ सब बादलों में विलीन से हो गए। कड़ाकड़ तेज बिजलियाँ फोटो-सा खींच रही थीं, बादल गरज रहे थे, वातावरण में ठण्ड बढ़ रही थी। पता नहीं किसी ने कभी यह क्यों कहाँ होगा कि जो गरजते हैं वे बरसते नहीं। आज तो बादल खूब गरजे तथा बरसे भी खूब।

बरसात के कारण ठंड बहुत बढ़ गई थी। सभी ने अपनी अपनी स्वेटर, जर्सी, जाकेट निकालीं व पहनीं। बरसात चलती रहीं, गतिविधियाँ भी बीच-बीच मे जारी रही। अगले दिन गर्म पानी का चश्मा वशिष्ठ कुण्ड में बच्चों को नहलाकर मनाली के पर्यटन स्थल दिखाए गए तथा दो-तीन घंटे के लिए मनाली के बाजार में घूमने, खरीददारी के लिए दे दिए गए।

अगले दिन सुबह बची हुई कुछ एडवेंचर गतिविधियाँ करवाई गईं। दोपहर का खाना खाने के बाद तीन बजे विद्यार्थियों के लिए सम्मान समारोह होना था। तैयारियाँ शुरू हो गईं। इस कैंप का इंचार्ज होने के नाते मैंने सारी योजनाएँ बना लीं। पंचकूला के मल्लाह में भी एडवेंचर कैम्प चल रहा था। इसलिए प्रोग्राम ऑफिसर रामकुमार व्यस्त थे। वे इस मौके पर नहीं पहुँच पाए तो उनकी ओर से आज के सम्मान समारोह के हमारे खास मेहमान थे-पर्वतारोही संदीप आर्य। सम्मान समारोह में पहले सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए। बच्चों ने नृत्य गायन, नाटक कविताओं के माध्यम से जहाँ सभी का मनोरंजन किया वहीं इनके माध्यम से जल और जंगल बचाओ,

पेड़ लगाओ, बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, बेटी खिलाओ व पर्यावरण संरक्षण की सीख दी। कार्यक्रमों से बाल मन की भावनाएँ मुखर हो रही थी। मैंने रामकुमार से जब यह पूछा कि कितने बच्चों को शील्ड देनी है? तो उन्होंने सहजता से कहा कि हमारा उद्देश्य बच्चों को प्रोत्साहित करने का है, आपको जो अच्छा लगे दे दो। प्रयास करो अधिक से अधिक बच्चों को सम्मान मिल जाए। मुझे बड़ा अच्छा लगा उनका बच्चों के प्रति स्नेह व प्रोत्साहन देख कर।

सांस्कृतिक कार्यक्रम के उपरान्त हमने एक की बजाय दो बैस्ट कैम्पर, यात्रा-वृतान्त लेखन मे भी दो श्रेष्ठ यात्रा वृतान्त लेखन पुरस्कार बाँटे। इनके अलावा कविताओं, नाटक, योगा नृत्य तथा लोक नृत्य के लिए 30-35 छात्र-छात्राओं को सम्मानित किया। अब बच्चों के चेहरे पर जो खुशी झलक रही थी, उसके लिए शिक्षा विभाग सचमुच बधाई का पात्र है। इस कार्यक्रम के बाद हमने भानुपुल लगे कैम्प के सम्मान समारोह में जाना था। वहाँ भी करीब दो घंटे कार्यक्रम चला फिर सभी बच्चों ने घर वापसी की तैयारियाँ शुरू कीं। उनके लिए बस तैयार थी। बच्चे ढेर सारी स्मृतियाँ, मनोरंजन, प्रत्यक्ष जानकारियाँ, आत्मविश्वास, अनुभव व जीवन में काम आने वाला प्रशिक्षण लेकर वापिस घर की ओर चल दिए। एडवेंचर कैम्पों का यह सिलसिला जिले बार समयानुसार पूरे माह चलता रहा। मनाली के इस माह (जून) हरियाणा भर से करीब 2200 छात्र-छात्राओं तथा शिक्षकों ने एडवेंचर कैम्पों में हिस्सा लिया। कैम्प के आखिरी ग्रुप में हरियाणा के मुख्यमंत्री मनोहर लाल के निजी सचिव राजेश गोयल भी बच्चों को आशीर्वाद देने मनाली पहुँचे। उन्होंने कैम्प का अवलोकन किया। बच्चों से मुलाकात की। उनकी मन की बात जानी तथा एडवेंचर गतिविधियों का अवलोकन किया। बच्चों का उत्साह व उनके चेहरे पर दिव्य मुस्कान देख कर उन्हें अच्छा लगा तथा बच्चों के चेहरे पर मुस्कान लाने के लिए शिक्षा विभाग को बधाई दी। उन्होंने कहा कि इस तरह के आयोजन निरन्तर करते रहना चाहिए क्योंकि बच्चे इन एडवेंचर कैम्पों में जो सीखते हैं वह स्कूलों में या पुस्तकों से नहीं सीखा जा सकता। बच्चों के ये अनुभव उनके उम्र भर काम आएँगे तथा ताउम्र स्मृतियों में झाककर अच्छा महसूस करते रहेंगे। कार्यक्रम अधिकारी रामकुमार ने निजी सचिव का धन्यवाद व स्वागत किया।

कैम्प के समापन पर रामकुमार ने प्रतिभाशाली विद्यार्थियों को सम्मानित किया तथा अपने सम्बोधन के माध्यम से उन्होंने बच्चों में नई ऊर्जा का संचार किया। इस मौके पर उनके सहयोगी व करनाल के डीओसी सियाराम व पंचकूला के डीओसी विजेन्द्र धनखड़ भी थे। कार्यक्रम के उपरान्त रामकुमार ने बच्चों को अविस्मरणीय यादों के साथ घर के लिए विदा किया।

राकवमा विद्यालय एमपी रोही
जिला- फतेहाबाद

मानव की वृत्तियों का परिष्कार करती हैं कलाएँ- डॉ. महावीर सिंह

डॉ. प्रदीप राठौर

कलाएँ मानव की वृत्तियों का परिष्कार करती हैं। ये न केवल सौंदर्य की अनुभूति कराती हैं, बल्कि संवेदनशीलता भी जगाती हैं। विद्यालय शिक्षण में कला का अत्यंत महत्त्वपूर्ण स्थान है। विद्यार्थियों को विभिन्न विषयों का ज्ञान देते हुए स्वतंत्र अभिव्यक्ति और सृजनात्मक कार्यों के लिए प्रोत्साहित करना बेहद जरूरी है। जो अध्यापक ऐसा करते हैं निश्चित तौर पर उनके विद्यार्थियों का सर्वांगीण विकास होता है। ये उद्गार विद्यालय शिक्षा विभाग के प्रधान सचिव श्री महावीर सिंह ने पंचकूला, सैक्टर-1 स्थित पीडब्लयूडी विश्राम गृह में एक फोटो व पेंटिंग प्रदर्शनी के उद्घाटन के

अवसर पर कही। श्री महावीर सिंह इस कार्यक्रम में बतौर मुख्यातिथि पधारे थे। कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग हरियाणा के तत्त्वावधान में आयोजित इस प्रदर्शनी में शिक्षा विभाग हरियाणा के दो कलाकारों- श्री भीम सिंह व डॉ. ओमप्रकाश कादयान की कृतियाँ प्रदर्शित की गई थीं।

'विश्व फोटोग्राफी दिवस' के अवसर पर आयोजित यह प्रदर्शनी 19 से 21 अगस्त तक प्रातः 9 बजे से सायं 5 बजे तक लगाई गई। इस दौरान हज़ारों की संख्या में स्थानीय लोग व स्कूली विद्यार्थी दोनों कलाकारों की रचनाधर्मिता से परिचित हुए। 19 अगस्त को डॉ.महावीर सिंह ने दीप प्रज्जवलित करके प्रदर्शनी का उद्घाटन किया। इस अवसर पर कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग हरियाणा से आर्ट ऑफिसर रेणु हुड्डा, पंचकूला के जिला शिक्षा अधिकारी एचएससैनी, उप ज़िला शिक्षा अधिकारी सुनीता नैन, ज़िला मौलिक शिक्षा अधिकारी फतेहाबाद देविंदर कुंडू, शिक्षा विभाग के अधिकारी, शिक्षाविद व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के बाद प्रधान सचिव डॉ. महावीर सिंह ने कहा कि दो कलाकार शिक्षकों ने हरियाणवी संस्कृति को बढ़ावा देने के लिए जो प्रयास किया है, वह अति सराहनीय है। उन्होंने कहा कि समाज में बहुत से मुद्दे जो केवल किताबों में नहीं आते, उन मुद्दों को हम इस तरह की विधाओं से भी बच्चों को सिखा सकते हैं।

उन्होंने शिक्षकों के उज्ज्वल भविष्य की कामना करते हुए कला को समर्पित होने पर बधाई देते हुए कहा कि ये कला के माध्यम से लोगों का (सामाजिक बुराइयों के खिलाफ आवाज़ बनकर) मार्गदर्शन करेंगे। उन्होंने कहा कि शिक्षक, साहित्यकार व फोटोग्राफर ओमप्रकाश कादियान के चित्रों से माटी की खुशबू प्रकृति का आकर्षण व ठेठ ग्रामीण संस्कृति की अनूठी झलक नज़र आई। इनके चित्र देखकर बचपन के दिन, गाँव की गलियों, सरोवरों, जोहड़ों, खेलों में लहलहाती फसलों, तीज-त्यौहारों की परंपराओं व ग्रामीण खेलों की याद ताज़ा हो गई। ठेठ ग्रामीण सौंदर्य इनके चित्रों की विशेषता है। उनके चित्रों से हमारी समृद्ध ऐतिहासिक धरोहरों- किलों, छतरियों, बावड़ियों, कुओं और भित्ति चित्रों की जानकारी भी मिलती है।

उन्होंने कहा कि शिक्षक व प्रसिद्ध कलाकार भीम सिंह ने रंगों के माध्यम से कैनवास पर बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ, राज्य की संस्कृति, ऋतुओं का सौंदर्य, प्रकृति की सुंदरता को उतारा है।

हरियाणा कला एवं सांस्कृतिक कार्य विभाग की आर्ट अधिकारी रेणु हुड्डा ने कहा कि कलाकार भीम सिंह व छायाकार डॉ. ओमप्रकाश कादयान जैसे कलाकारों को प्रोत्साहित करना तथा आम आदमी को कला संस्कृति व प्रकृति से जोड़ना ही ध्येय है।

डॉ.ओमप्रकाश व भीम सिंह ने सभी का अभिवादन करते हुए कहा कि प्रदर्शनी द्वारा अपने भावों को इन चित्रों व फोटो द्वारा अभिव्यक्त किया है। हरियाणवी संस्कृति के प्रत्येक भाव से आज की पीढ़ी को बाँध पाएँ, यही उनका प्रयास है।

drpradeeprathore@gmail.com

खेल-खेल में भाषा ज्ञान

साँप-सीढ़ी और लूडो भी बन सकते हैं हिन्दी भाषा को सिखाने के माध्यम

हिंदी भारत की राजभाषा है, परंतु बहुत दुःख की बात है कि आज विद्यालयों में बच्चों की हिन्दी का स्तर उतना अच्छा नहीं है जितना होना चाहिए। बच्चे हिन्दी अच्छी तरह पढ़ भी नहीं पाते हैं। आज समय की माँग है बच्चों को कक्षा-कक्ष में मौखिक भाषा के विकास के पर्याप्त अवसर मिलने चाहिए। इसी लक्ष्य को ध्यान में रखते हुए राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय क्योड़क में हिन्दी प्राध्यापक पद पर कार्यरत डॉ विजय कुमार चावला ने विद्यालय में फ्लैश कार्ड के माध्यम से, शब्द पहिये के माध्यम से, बिंगो खेल के माध्यम से, पासे के खेल के माध्यम से बच्चों को हिन्दी भाषा का शिक्षण करवाया, जिसके सार्थक परिणाम देखने को मिल रहे हैं। विद्यालय के बच्चे प्रतिदिन उनसे इस तरह के खेल करवाने का आग्रह करते हैं। यह उनकी सफलता का पहला चरण रहा। बच्चों में हिंदी के प्रति उनकी रुचि बढ़ने लगी। इसी कड़ी में उन्होंने और नए प्रयोग किए ।

साँप सीढ़ी व लूडो को हिंदी भाषा अर्जित करने का एक माध्यम बना लिया ।

साँप सीढ़ी व लूडो बच्चे घरों में केवल खेलने के रूप में प्रयोग करते हैं। बच्चे ही नहीं बड़े भी घर में खाली समय में साँप सीढ़ी व लूडो खेल कर अपना मनोरंजन करते हैं। उन्होंने साँप सीढ़ी व लूडो को हिंदी भाषा अर्जित करने का एक माध्यम बना लिया। उन्होंने संख्याओं के स्थान पर शब्द व मात्राओं का ज्ञान रखकर साँप सीढ़ी तैयार की। जिसका स्मार्ट कक्षा-कक्ष में कक्षा दूसरी के बच्चों के साथ प्रयोग किया । कक्षा दूसरी के बच्चों ने खेल-खेल में शब्द व मात्राओं को डिकोड करते हुए शब्दों को पढ़ा और साथ-साथ मात्राओं से बनने वाले शब्दों का ज्ञान भी प्राप्त किया। यदि अध्यापक इस तरह के नवाचार कक्षा-कक्ष में प्रयोग में लाता है तो परंपरागत शिक्षण से हटकर ऐसे शिक्षण के बेहतर परिणाम देखने को मिलते हैं ।

इसके साथ ही उन्होंने संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया, उपसर्ग, प्रत्यय, कारक, वाक्य, वाच्य, अलंकार, विलोम शब्द, पर्यायवाची शब्द, संधि, समास, आदि के प्रश्नों के माध्यम से लूडो का खेल तैयार किया और कक्षा दसवीं के बच्चों के बीच खेल खिलवाया। बच्चों ने लूडो खेल के माध्यम से उनके समक्ष आए प्रश्नों को हल किया और खेल को पूरा किया। खेल-खेल में बच्चों ने हिन्दी व्याकरण का ज्ञान प्राप्त किया। उनका मानना है कि बच्चे खेल-खेल में शिक्षा ग्रहण करते हैं, तो उसके चिरस्थाई परिणाम देखने को मिलते है। आज सभी भाषा शिक्षकों को नवाचार तकनीक का प्रयोग करते हुए भाषा के क्षेत्र में नवीन क्रांति लानी होगी।

-शिक्षा सारथी डेस्क

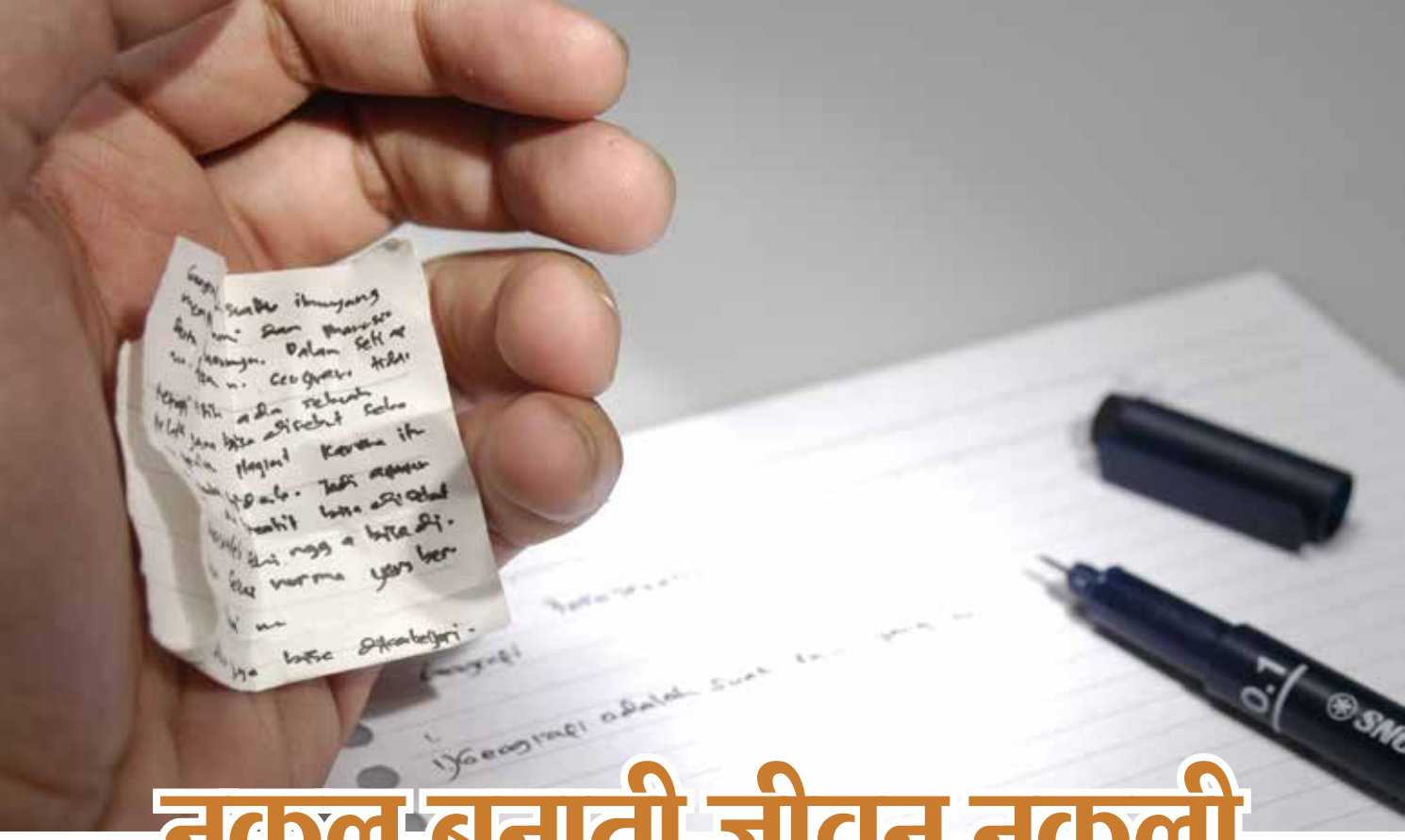

नकल बनाती जीवन नकली

विद्यार्थी जीवन मनुष्य के निर्माण का समय माना जाता है। विद्यार्थी जीवन में ग्रहण किया गया ज्ञान सम्पूर्ण जीवन काम आता है। यह न केवल हर सफलता का माध्यम होता है, बल्कि जीवन मूल्यों का विकास करके हमें सच्चा इन्सान बनाता है। वास्तव में अध्ययन काल तपस्या का समय होता है। इस तपस्या में की गई जरा सी लापरवाही, हमें जीवन युद्ध में पीछे धकेलने के लिए काफी है। फिर भी सभी विद्यार्थी पढ़ाई को पूजा की दृष्टि से नहीं देखते। कुछ आलसी व चतुर विद्यार्थी अनुचित तरीकों की मदद से परीक्षा में अच्छे अंक लाने की फिराक में रहते हैं और अक्सर सफल भी हो जाते हैं। कैसी विडम्बना है यह ईमानदार बच्चे पीछे रह रहे हैं।

अभी हाल में ही हरियाणा शिक्षक पात्रता परीक्षा का परिणाम जारी किया गया है। क्या आपने पास प्रतिशत पर ध्यान दिया? लेवल एक (पीआरटी) का परिणाम- 5.71 प्रतिशत, लेवल दो (टीजीटी) का परिणाम- 4.78 प्रतिशत, लेवल तीन (पीजीटी) का परिणाम- 2.55 प्रतिशत।

ऐसे परिणाम हर वर्ष देखने को मिलते हैं। अब आप ही फैसला कीजिए कि प्रत्येक वर्ष 100 विद्यार्थियों में से जिन्होंने एमए, बीएड की डिग्रियाँ 70-95 प्रतिशत से भी ज्यादा अंकों से हासिल की हैं, उनमें से भी 2.55 प्रतिशत पास हुए। हमारे मेरिटधारी बच्चे सामान्य से टेस्ट में 55 प्रतिशत या 60 प्रतिशत तक भी अंक नहीं ला पाते और वे भी ऐसी परीक्षा में, जिसमें ज्यादातर प्रश्न सामान्य ज्ञान से तथा 10वीं, 12वीं तक के विषयों में से ही पूछे जाते हैं। इससे शर्मनाक बात और क्या होगी? इन दिखावटी डिग्रियों का क्या किया जाए?

यह नकल की प्रवृत्ति हमें हल्के में नहीं लेनी चाहिए। इसी कुरीति के कारण आज हमारा युवा अधूरा ज्ञान लेकर परीक्षारूपी चक्रव्यूह में जा फँसता है, जहाँ वह लगातार असफलता पाकर, कुण्ठा व तनावग्रस्त होकर अपना जीवन खो बैठता है। इसी कारण आज हर तरफ पढ़े-लिखे डिग्रीधारी बेरोजगारों की भीड़ लगी है।

नकलची बच्चा अपने भविष्य को तो अन्धकारमय करता ही है, अपने माता-पिता, गुरुजन व देश का नाम भी बदनाम करता है। यह देश के संसाधनों (विद्वानों की ऊर्जा, देश के अरबों-खरबों रुपये) का दुरुपयोग करके हमारे प्यारे भारतवर्ष की असीमित हानि कर रहा है। अतः इसकी यह चालाकी अक्लमंदी नहीं, महामूर्खता है और देश के साथ गद्दारी है।

अब समय आ चुका है कि हम सभी मिलकर निष्पक्ष भाव से आत्ममंथन करें कि परीक्षा में नकल ने महामारी-छूत की बीमारी का रूप कैसे धारण कर लिया? इसके पोषक तत्व कौन-कौन से हैं? इस मायाजाल से हम अपने बच्चों को कैसे बचाएँ? कैसे परीक्षा केन्द्रों में चालाकी के माहौल की अपेक्षा ईमानदारी का वातावरण कायम हो? कैसे परीक्षा केन्द्रों के बाहर भीड़तन्त्र न हो? कैसे हमारे बच्चे स्वयं नकल को न कहें? कैसे नकल न करके कम अंक प्राप्त करने वाला विद्यार्थी हीनभावना का शिकार न हों?

परीक्षा में नकल के पोषक तत्त्व

आजकल परीक्षाओं में नकल करने कराने को समझदारी और परोपकार माना जाता है। इसी भ्रमजाल में उलझकर विद्यार्थी तो सरेआम नकल करते ही हैं, अपितु माता-पिता-भाई-ताऊ-और बुजुर्ग दादा-नाना आदि भी पहुँच जाते हैं अपने लाडलों की मदद करने। ये भूल जाते हैं कि यह मदद नहीं, अपने बच्चों को आलसी, विकलांग और नाकाम बनाना है।

इसी भ्रमजाल में उलझे हमारे अध्यापक साथी भी परीक्षा के दौरान कोमलता अपना लेते हैं और नकल रूपी जहर को जाने अनजाने परोपकार समझ कर पिला जाते हैं। अतः यह पूर्णतया स्पष्ट है कि नकल के तीन मुख्य पोषक तत्त्व हैं-

विद्यार्थी

आलसी बच्चे परिश्रम का आसान विकल्प मानते हैं नकल को। बच्चों द्वारा पूरे साल असंतुलित पढ़ाई भी इसका मुख्य कारण है। एक दिन पढ़ा, एक सप्ताह मौज की। परीक्षा से कुछ ही दिनों पहले पढ़ाई शुरु करने की आदत ने आग में घी का काम किया है। पूरी तैयारी किए बिना परीक्षा देने वाले बहुत से छात्र आजकल नकल का ही सहारा लेते हैं।

विद्यार्थी विषय को सीखकर संतुष्टि पाने की अपेक्षा अच्छे अंक लाने की चिंता मे पड़े रहते हैं। ये विषय के प्रति न तो आदर भाव रखते हैं और न पूरा पढ़ाई का साहस। ये तो बस अंकों की गणना में ही उलझे रहते हैं। अतः नकल करना इन्हें फायदे का सौदा लगता है। विद्यालय में एक दूसरे से आगे निकलने की होड़ भी नकल को बढ़ावा दे रही है। असफलता को खुले मन से स्वीकार न करने की मानसिकता भी जोड़ तोड़ से पास

होना सिखा देती है। आत्मविश्वास की कमी के कारण कई बच्चे सही जवाब मालूम होने के बाद भी नकल करते हैं। नकलची बच्चे के ज्यादा अंक आते देखकर, कई ईमानदार बच्चे भी ईमानदारी को ताक पर रख देते हैं। वे सोचते हैं कि जब दूसरे नकल कर रहे हैं तो मैं भी कर लूँ, इसमें हर्ज क्या है?

माता-पिता (अभिभावक)

माता-पिता की ऊँची उम्मीदों पर खरा उतरने का दबाव बच्चों को नकलची बना रहा है। ज्यादातर माता-पिता बच्चे को केवल सफल होने के लिए प्रेरित करते हैं, न कि ईमानदार बने रहने के लिए। माता-पिता पढ़ाई की सारी जिम्मेदारी बच्चों पर एवं अध्यापकों पर छोड़े रहते हैं उनका न पढ़ने वाला बच्चा भी अच्छे अंकों से पास होना चाहिए, नहीं तो स्कूलों में ताला जड़ना शान समझते हैं। अभिभावक पूरे वर्ष विद्यालयों में झाँकना भी पसंद नहीं करते हैं। हमारा बच्चा ध्यान से पढ़ता है या नहीं? अनुशासन में रहता है या नहीं? इसका इन्हें पता भी नहीं होता, लेकिन परीक्षा केन्द्र पर पहुँच जाते हैं दल-बल के साथ। ये नकल कराना ही अपनी सबसे बड़ी जिम्मेदारी मानते हैं।

अध्यापक

प्रायः अध्यापक नकल के दुष्परिणाम बच्चों एवं उनके अभिभावकों को समझाने में नाकाम हो रहे हैं। परीक्षा में नकल के क्षणिक लाभ और असीमित हानियाँ नए-नए आधुनिक उदाहरणों से एवं विभिन्न उपमाओं द्वारा समझा पाना भी इसके लिए कठिन होता जा रहा है। कुछ अध्यापक भी इस गलतफहमी के शिकार हैं कि सौ प्रतिशत रिजल्ट नकल से ही आता है, पढ़ाई से नहीं। कुछ गुरुजन तो बच्चों को पास कराना ही अपना लक्ष्य मान बैठे हैं, चाहे इसके लिए अनुचित तरीकों का सहारा लेना पड़े।

कितनी खतरनाक है यह नकल?

आजकल परीक्षा में नकल आम बात मानी जाती है। जरा-सी नकल से क्या नुकसान होगा? जब चारों ओर नकल चल रही है, तो इन्हे क्यों रोका जाए? इन बच्चों ने किसी का क्या बिगाड़ा है? इन कन्याओं पर तो दया कर ही लीजिए गुरुजी। आटे में नमक के समान नकल तो चलती ही है, इसमें हर्ज क्या है? यह नकल न रुकी है न कभी रुकेगी।

ऐसे सैकड़ो वाक्य अच्छे-अच्छों को हिला देते हैं। फिर भी यदि कोई ईमानदारी पर अड़ा है और नकल के खिलाफ खड़ा है, तो उसे असामाजिक प्राणी और अडियल टट्टू बता देते हैं तथा उसकी जान भी सुरक्षित नहीं है। वाह रे नकल रक्षक। आपको पता नहीं जिस रस्सी के सहारे आप माउंट एवरेस्ट फतह करना चाहते हैं, वह रस्सी नहीं साँप है। जी हाँ, जहरीला खतरनाक साँप यह आपको ही नहीं आपके परिवार, देश, समाज को डँसने को उतावला है और आप इसी की जाने अनजाने रक्षा कर रहे हैं।

नकल है चोरी

परीक्षा में नकल और चोरी में कोई फर्क नहीं है। चोर भी बिना मेहनत किए बहुत सा धन पाना चाहते हैं और नकलची भी सारे साल आराम करके फिर नकल द्वारा मेरिट में आना चाहते हैं। चोर इस ताक में रहता है कि रक्षक कब लापरवाह बने और वह चोरी करे। ठीक इसी प्रकार नकलची भी अध्यापकों की आँखों में धूल झोंकता रहता है। चोर लूटने के हथियार को अन्दर छिपाए रहता है, नकलची भी। चोर ईमानदार व मेहनती लोगों को लूटने की फिराक में रहता है और एक नकलची भी उस बच्चे का नाजायज फायदा उठाता है, जिसने ईमानदारी से दिन-रात पढ़ाई की है और गुरुओं द्वारा दिए गृहकार्य को अधूरा नहीं छोड़ा। अब आप ही बताइए, नकल और चोरी में कोई फर्क है? यदि इन्हें समय रहते न रोका गया तो इनके भयंकर परिणाम सामने आने वाले हैं-

उस चोर के हौसले बुलंद हो जाएँगे। अब वह दिन में सोना और रात में चोरी करना ही अपनी आदत बना लेगा अर्थात् नकलची पूरे साल उद्दण्डता, शरारत और बकवास करेगा, माता-पिता और गुरुओं का अपमान करेगा, फिर अच्छे अंकों से पास होकर उनके मुँह पर टेप लगा देगा। इस चोर, इस नकलची को देखकर ईमानदार भी ईमानदारी ताक पर रख रहे हैं और ईमानदारी लुप्त होती जा रही है। अब आप ही फैसला कर लीजिए कि कितनी खतरनाक है यह नकल?

नकल है मीठा जहर

नकल मीठे जहर की तरह कार्य करती है। यह प्रारम्भ में बड़ी मीठी लगती है। जब हाड़तोड-दिमागफोड़ मेहनत की बजाय जरा-सी चालाकी दिखाकर कोई बच्चा अच्छे अंक पा लेता है, तब वह इसी राह पर चलना कल्याणकारी मानने लग जाता है। वह इस जहर की मिठास में तब तक खोया रहता है, जब तक यह जहर अपना असर नहीं दिखाता और जब यह जहर अपना असर-दिखाता है, तब तक देर हो चुकी होती है, फिर तो डॉक्टर भी अपने हाथ खड़े कर देते हैं।

ठीक है, विष भरी खीर ने हमारी भूख तो मिटा दी, लेकिन अब यह हमें मिटाने पर तुली है। इसी प्रकार नकल ने हमें डिग्री तो दिला दी, परन्तु हम तो डिग्रीधारी अनपढ़ हो गए। नौकरी के फॉर्म तो हम भरते हैं, परन्तु

टेस्ट में पूछे गए आसान प्रश्न भी हमारे सिर के ऊपर से निकल जाते हैं।

फिर हम कोचिंग सेंटरों में भागते हैं। वहाँ भी छठी से बारहवीं एवं बीए की पुस्तकें ध्यान से पढ़ने के लिए कहा जाता है। अब एक साथ इतने सारे विषय बारीकी से पढ़ना बड़ी अजीब स्थिति पैदा कर देता है। उस समय हमें पता चलता है कि नकल नहीं, हम तो जहर पी रहे थे। इस जहर ने हमारे स्वास्थ्य (पढ़ाई) का नाश तो किया ही, जीवन भी संकटग्रस्त कर दिया।

यह तो आप जानते ही हैं कि कड़वा जहर इतना खतरनाक नहीं होता, जितना मीठा जहर। कड़वा जहर हम कम ही खा पाते हैं और मीठी विष असीमित खा जाते हैं, फिर तो अच्छे-अच्छे डॉक्टर भी हमें बचा नहीं पाते हैं। बच्चो! क्या अब भी आप यह मीठा जहर खाना चाहते हो?

अफीम का नशा है नकल

जैसे कोई नशेड़ी नशा करने के बाद अपनी सुध-बुध खो बैठता है। उसे ज्ञान ही नहीं रहता कि वह कहाँ चल रहा है और क्या कर रहा है? माँ-बाप और उसके हितैषी उसको क्या समझा रहे हैं? गुरुओं ने उसको क्या शिक्षा दी है? वह सब कुछ भूल जाता है। बस वह तो नशे में झूमता रहता है। इसी में खुशी ढूँढता है और जो इसे रोकते हैं या टोकते हैं, उन्हे अपना दुश्मन मानने लग जाता है। धीरे-धीरे उसे इसकी लत पड़ जाती है। अब वह इस विनाशकारी नशे को चाहकर भी छोड़ नहीं पाता।

ठीक यही स्थिति नकल करने वाले बच्चे की होती है। वह मेहनत से दूर भागता है। थोड़ी मेहनत और नंबर ज्यादा पाने का रास्ता उसे बड़ा मजेदार और मनोरंजक लगता है। यदि कोई उसे रोकता है या टोकता है तो उस पर खून सवार हो जाता है। कई बार तो वह ईमानदार गुरुओं पर ही गोलियाँ चलाता है। उसे न कोई शर्म होती है और न झिझक। धीरे-धीरे नकल करना उसकी आदत में शामिल हो जाता है, उसे नकल की लत लग जाती है। वह नकल रूपी अफीम के नशे में झूमता रहता है। बारहवीं, बीए में जाते-जाते वह उसे चाहकर भी नहीं छोड़ पाता। अब या तो वह केस बनवाकर घर बैठता हैं या फिर चोरी की डिग्री लेकर चोरों का सरताज बन जाता है। अब तो उसे अफीम (नकल) के ही सैकड़ों फायदे नजर आते हैं और जो नशा (नकल) नहीं करते, वे उसे महामूर्ख एवं झूठे दिखने लग जाते हैं।

आदरणीय माता-पिता व गुरुजन! क्या अब भी आप चुपचाप अपने कोमल और प्यारे-प्यारे बच्चों को अफीम खाते देख सकते हो? समय रहते इनकी यह लत छुड़ाने का क्या आप प्रयास नहीं करोगे?

मायाजाल है नकल

जैसे कोई जादूगर नजरबंदी या मायाजाल या नजरों का धोखा या चालाकी युक्त किसी ट्रिक का सहारा लेकर दर्शकों को अपने शब्दों के जाल में फँसा लेता है, ठीक इसी तरह चालाक व्यक्तियों द्वारा फैलाए गए नकल के मायाजाल में हम जकड़े हुए हैं। रस्सी समझकर साँप को पकड़े हुए हैं। हमारी बुद्धि पर और हमारी आँखों पर भ्रम का पर्दा गिरा रहता है। नकल रूपी बेईमानी का रास्ता ही हमें खरा लगता है। हम भूल जाते है कि यह नकल करना सिखाने वाला हमें कंगाल करने पर तुला है। हमारी जेबें खाली करने में ही इसका भला है।

अतः मेरे प्यारे बच्चो! यदि तुम्हारे कानों तक मेरी आवाज़ जा रही है तो समय रहते निकल आओ इस माया जाल से निकल आओ, निकल आओ।

महामारी-छूत की बीमारी है नकल

जैसे कोई बीमारी जब आती है, तभी उसका समुचित समाधान हो जाए तो वह समाप्त हो जाती है, लेकिन यदि समय पर उसका इलाज नहीं किया गया, तो वह दो से चार, चार से हजार, हजारों से लाखों तक पहुँच जाती है और महामारी बन जाती है। फिर वह डॉक्टरों को भी अपनी गिरफ्त में लेना शुरू कर देती है। अब तो इस छूत की बीमारी का सही-सही इलाज खोज पाना असंभव दिखने लग जाता है।

ठीक यही स्थिति नकल रूपी महामारी की है। प्रारम्भ में दो-चार आलसी-निकम्मे (समय पर काम न करने वाले) बच्चे परीक्षा में नकल करते हैं। जब उन्हें कोई समुचित दण्ड नहीं मिलता तो दूसरे परिश्रमी विद्यार्थी भी इस रास्ते को अपना लेते हैं और अच्छे अंक पा लेते हैं। फिर क्या, जंगल में आग की तरह, लाइलाज महामारी छूत की बीमारी की तरह सभी इसकी चपेट में आ जाते हैं। धीरे-धीरे अध्यापक (डॉक्टर) भी इसकी गिरफ्त में आ जाते हैं अर्थात् इस बीमारी के वाहक बन जाते हैं। अब आप ही बताइए, इसका इलाज कौन करे?

मानसिक बीमारी है नकल

आपने कभी किसी पागल को देखा? कभी मानसिक रोगी को झेला है? यदि हाँ, तो आप जानते हैं कि मानसिक रोगी व्यक्ति अपनी ही दुनिया में जीता है। उसे बार-बार दौरे पड़ते हैं पागलपन के। कभी उसे आत्माएँ दिखती हैं, तो कभी भ्रमजाल में उलझकर अजीब-अजीब हरकतें करता रहता है।

उसे न अपने वर्तमान का पता होता है और न भविष्य का ठीक-ठीक अंदाजा लगा सकता है। जरा ध्यान से उसकी बातें सुनना, वह अपने को सबसे समझदार और सारी दुनिया को पागल समझता है। वह समझदारों की तरह ज्ञान पिपासु नहीं होता, बल्कि स्वयं को ज्ञान का महासागर समझता है। वह मरने से न तो डरता है और न ही दूसरे को मारने में हिचकता है। जब आप इन नकलची बन्दरों की ओर दृष्टि डालोगे, तो पाओगे कि उपर्युक्त मानसिक रोगी के सारे लक्षण इनमें मौजूद हैं। ऐसे बच्चे अपनी ही दुनिया में खोए रहते हैं। इनको भी लापरवाही, उद्दण्डता रूपी पागलपन के दौरे पड़ते रहते हैं। ये भी नकल करने के लिए अजीब-अजीब तरीके खोजने में अपना समय अपना दिमाग खपाते रहते हैं।

इन्हें बेईमानी से सफल होने के सपने आते रहते हैं। न तो ये वर्तमान समय की अहमियत समझ पाते हैं और न ही उज्ज्वल भविष्य की चिंता करते हैं। इसका अंदाजा लगा पाते हैं। इन मानसिक रोगियों को जब कोई समझाता है तो उसे ये पागल समझते हैं और स्वयं को बुद्धिमानों का उस्ताद। ये नकल के खतरनाक रोड़ पर बेखौफ घूमते हैं। यदि कोई जबरदस्ती इनको सही मार्ग पर लाना चाहता है तो ये उसी को मारने का प्रयास करते हैं। मरने या नारकीय जीवन का इन्हे कोई डर नहीं होता।

ऐसे आत्महत्या के दीवानों, भला-बुरा भुलाने वालों,

चलते फिरते पागलखानों का अब इलाज कौन करे? और कैसे करे? यह प्रश्न आज का यक्ष प्रश्न बन चुका है।

भ्रष्टाचार की पहली सीढ़ी है नकल

जब एक छोटा बच्चा चोरी करता है, तब यदि उसके माता-पिता उसे समझा कर रोक लें, तो वह चोर बनने से बच जाता है। अगर वह बार-बार समझाने से भी नहीं मानता, तो उसे दण्ड देना भी उसकी भलाई ही है। इससे वह भावी लुटेरा बनने की बजाय एक अच्छा और सच्चा नागरिक बन सकता है।

यदि इसके विपरीत माता-पिता अपने चोर बच्चे को शाबाशी देने लग जाएँ और चोरी द्वारा लाए धन को उसकी कमाई समझने लग जाएँ तो ऐसे माँ-बाप उन बच्चों से भी ज्यादा दोषी हैं। ठीक इसी प्रकार अध्यापक भी यदि अपने विषय में नकल द्वारा लिए गए अच्छे अंकों को देखकर खुश होने लग जाएँ और इन्हें शाबाशी देने लग जाएँ तो स्थिति अत्यन्त भयंकर बन जाती है।

जरा सोचिए, जब बालक अपने विद्यार्थी जीवन में ही नियम तोड़ना सीख जाता है, तो वह भविष्य में बड़ा होकर नियमों का पालन कैसे करेगा? वास्तव में, नकल के माध्यम से वह भ्रष्टाचार की पहली सीढ़ी चढ़ता है और फिर तीव्र गति से भ्रष्टाचार में डूबता जाता है। ऐसे भ्रष्ट नागरिक एकाएक तैयार नहीं होते, बल्कि विद्यार्थी जीवन से ही तैयार होने लगते हैं।

नकल है महामूर्खता

किसी मूर्ख ने एक कहावत बनाई है, जिसके अनुयायी आज लाखों हैं- 'नकल में भी अक्ल की जरूरत होती है।' अब इन मूर्खों को कोई समझाए कि यदि व्यक्ति में अक्ल हो, तो उसे नकल की जरूरत नहीं पड़ती। क्यों इन नादान बच्चों को भ्रमित करके उल्लू बना रहे हो? यदि हम चोरी को बुद्धिमता प्रमाणित करने लग जाएँ तो हर जगह लूट-खसोट मच जाएगी, फिर बेईमानी के बाजार में ईमानदारी कैसे टिक पाएगी?

जरा सोचिए, इससे बड़ी मूर्खता क्या होगी? हम जिस डाल पर बैठे हैं, उसी को काट रहे हैं, अपने हाथों से अपने पैरों पर कुल्हाड़ी मार रहे हैं, हमें मझधार से बचाने वाली नौका में हम स्वयं छेद कर रहे हैं और इसे आप अक्लमंदी का नाम दे रहे हैं। महामूर्खता है, ये महामूर्खता! यदि आपमें थोड़ी सी भी बुद्धि है, तो मूर्खों की बातों में आना छोड़ दो। बिना अच्छी तरह तैरना सीखे, उफनती नदी (अगली कक्षा) में जाना छोड़ दो। हे गुरुजन! अपने इन नादान बच्चों को सच्चा ज्ञान देकर इस महामूर्खता, इस आत्महत्या से बचा लो, बचा लो।

दलदल है नकल

नकल को यदि दलदल कहा जाए, तो सर्वथा उचित ही है। जैसे कोई प्राणी एक बार दलदल में चला जाए, तो उसका निकलना असंभव सा हो जाता है।यही स्थिति नकल करने कराने वालों की होती है। जब कोई बच्चा नकल करके अच्छे अंक पा लेता है, तब उसका अध्यापक यह समझता है कि यह टॉपिक उसे अच्छे से समझ आ गया। फिर क्या! गुरुजी उस टॉपिक को छोड़कर आगे पढ़ाना शुरू कर देते हैं। वह यहीं से नींव कमजोर रहनी शुरु हो जाती है और थोड़े दिनों में अध्यापक द्वारा पढ़ाया गया हर टॉपिक उस बच्चे के सिर के ऊपर जाने लगता है। तत्पश्चात् वह नकलची छात्र, आने वाली परीक्षा में नकल का ज्यादा सहारा लेता है और नकल रूपी दलदल में धँसता चला जाता है। अब वह चाहकर भी इस दलदल से निकल नहीं सकता और अपने प्राण गँवा बैठता है अर्थात् पूरा जीवन तबाह कर लेता है।

अतः मेरे लाडले बच्चो! निकलो इस दलदल से। अभी भी समय है, इस रास्ते पर एक कदम भी मत रखो। यदि कोई टॉपिक छूट गया है तो समय रहते गुरुओं से समझ लो। प्रश्न पूछने से डर-शर्म-झिझक को त्यागो। ईश्वरतुल्य गुरुजन श्रीकृष्ण की तरह खड़े हैं आपके साथ। मजबूती से पकड़ लो इनका हाथ, ये नहीं छोड़ेंगे साथ।

पढ़ाई में दीमक है नकल

प्यारे बच्चो! दीमक का नाम तो आपने सुना ही होगा। यह छोटा-सा कीड़ा होता है। यह लकड़ी को अन्दर ही अन्दर खोखला कर देता है। यही सब कुछ नकल का कीड़ा कर रहा है। यदि यह प्राथमिक कक्षाओं में ही लग जाए तब तो हमारे प्यारे-प्यारे बच्चे दसवीं, बारहवीं में ही पढ़ाई छोड़ने की स्थिति में पहुँच जाते हैं। यदि यह कीड़ा आठवीं-दसवीं में लगता है तो हमारे बच्चे बीए, एमए तो कर जाते हैं, परन्तु टेस्टों में लगातार कुछ अंकों से रह जाते हैं।

ये नादान बच्चे अपनी गलती स्वीकार करने की बजाय इसका आरोप कभी गुरुओं पर, कभी देश के संविधान पर, कभी आरक्षण पर तो कभी रिश्वतखोरी और भ्रष्टाचार पर लगाकर अपने आपको पाक-साफ प्रमाणित कर जाते हैं। अतः प्यारे बच्चो! ये चालाकियाँ छोड़ो। कब तक आप दूसरों की आँखों पर पट्टियाँ बांधोगे? कब तक माँ-बाप-गुरुओं के अरमानों पर तेजाब छिड़कोगे? अगर कुछ करना ही है तो अपनी पढ़ाई में लगे इस दीमक का परमानेंट इलाज ही कर लो फिर कोई भी बाधा आपको रोक नहीं पाएगी, आपको एक नहीं, कई-कई नौकरियाँ मिल जाएँगी।

कई वर्षों से हमारे देश में नकल रूपी आतंकवाद मँडरा रहा है। देश के असीमित संसाधनों (अरबों रुपये, विद्वानों की ऊर्जा) को नष्ट कर रहा है, देश के भविष्य को घोर अज्ञान अंधकार में झोंक रहा है, शैक्षिक ढाँचे को उखाड़ फेंकने के लिए बेताब है और इस देशद्रोह में, हम भी अपने होशोहवास खोकर शमिल हो रहे हैं। जागो भारतीयो जागो! जागो देशप्रेमियो जागो!

रामभगत शास्त्री 'विद्यार्थी'
संस्कृत प्राध्यापक,
रावमा विद्यालय गुढ़ा, जिला-झज्जर

शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना के लिए 159.46 लाख का बजट

राज्य सरकार द्वारा विद्यार्थियों की उत्कृष्टता के लिए शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति प्रदान करने हेतु एजुकेशन एनकरेजमेंट ऑफ एक्सलेंस (ईईई) तथा अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए एक मुश्त भत्ता योजना लागू की गई है।

चालू वित्त वर्ष 2019-20 के लिए विभाग द्वारा अगस्त माह में शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति योजना (ईईई) के तहत 2,518 तथा अनुसूचित जाति की एक मुश्त भत्ता योजना के तहत 92,687 विद्यार्थी लाभान्वित किए जा रहे हैं।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा विभाग के प्रवक्ता ने बताया कि जिला शिक्षा अधिकारियों द्वारा पीएफएमएस के माध्यम से पात्र विद्यार्थियों का डाटा अपलोड किया जाता है उसके उपरान्त विद्यार्थियों के बैंक खाते में आधार बेस पर छात्रवृत्ति की राशि वितरित की जा रही है । शिक्षा निदेशालय द्वारा पात्र विद्यार्थियों का डाटा अपलोड करवाने बारे समय-समय पर निर्देश दिए जा रहे हैं । चालू वित्त वर्ष में उत्कृष्टता के लिए शिक्षा प्रोत्साहन छात्रवृत्ति' योजना के अन्तर्गत 159.46 लाख रुपये तथा एक मुश्त भत्ता योजना के लिए 3500.00 लाख रुपये के बजट का प्रावधान किया गया है। यह प्रक्रिया वर्ष 2016-17 से कार्यान्वित की जा रही है ।

गौरतलब है कि शिक्षा के क्षेत्र में उत्कृष्टता लाने के लिए एजुकेशन एनकरेजमेंट ऑफ एक्सलेंस योजना राज्य सरकार द्वारा वर्ष 2006-07 में लागू की गई थी। इस स्कीम के अन्तर्गत कक्षा छठी से 12वीं कक्षा में राजकीय विद्यालयों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों को कक्षा में प्रथम आने पर कक्षा छठी से 8वीं तक प्रत्येक कक्षा के एक छात्र/छात्रा को 750 रुपये प्रति वर्ष और 9वीं से 12वीं तक प्रत्येक कक्षा के लिए उन्हें 1000 रुपये प्रति वर्ष छात्रवृत्ति प्रदान की जाती है। इस प्रकार से अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों के लिए एक मुश्त भत्ता योजना 2008-09 से चलाई जा रही है, जिसका उद्देश्य अनुसूचित जाति के विद्यार्थियों को शिक्षा के लिए प्रोत्साहित करना व उनकी ड्रॉप आउट दर को कम करना है। उल्लेखनीय है कि इन दोनों स्कीमों में माता-पिता/अभिभावकों की वार्षिक आय की सीमा निर्धारित नहीं की गई है, लेकिन लाभार्थी का हरियाणा राज्य का मूल निवासी होना अनिवार्य है।

-शिक्षा सारथी डेस्क

खेल-खेल में विज्ञान

दर्शन लाल बवेजा

विज्ञान की गतिविधियाँ हमेशा इस विषय को रोचक बनती हैं। खेल-खेल में विज्ञान शृंखला में इस बार प्रस्तुत हैं कुछ और प्रयोग जिन्हें नाममात्र खर्च में किया जा सकता है।

1. सोलर नून (सौर दोपहर) ज्ञात करना।

आमतौर पर बच्चे और बड़े सभी दोपहर बारह बजे और उसके बाद गुड आफ्टरनून बोलते हैं। बच्चों से पूछा गया कि आफ्टरनून क्या होता है? सोलर नून क्या होता है? बच्चों को यही पता था कि 12:00 बजे दोपहर को नून बोलते हैं। उससे पहले को गुड मॉर्निंग और थोड़ी बाद में गुड इवनिंग बोलते हैं। सौर दोपहर वह क्षण होता है जब सूर्य किसी स्थान के मध्याह्न रेखा से गुजरता है और आकाश में अपने उच्चतम स्थान पर पहुँच जाता है। ज्यादातर मामलों में, यह 12 बजे नहीं होता है। हम हर रोज नून समय को ज्ञात कर सकते हैं। बच्चे समझना चाहते थे कि नून समय कैसे ज्ञात होता है? इसके लिए हमने विज्ञान कक्ष से एक आयरन स्टैंड लिया उसे एक मेज के ऊपर सीधा रख दिया। नीचे एक सफेद चार्ट पेपर बिछा दिया। आयरन स्टैंड की लंबवत छड़ की परछाई को 11:30 एएम से नापना शुरू किया तो हमने देखा कि परछाई पहले छोटी होती है फिर स्थिर हो जाती है और उसके बाद फिर से बढ़ने लगती है। बच्चे परछाई में परिवर्तन होने बारे बहुत उत्सुक दिखे कि ऐसा क्यों होता है? तो बच्चों को पृथ्वी के अपने अक्ष पर पूर्व से पश्चिम की तरफ परिक्रमण से सूर्य के भी पूर्व से पश्चिम की ओर जाने से संबंधित जानकारी दी गई। पृथ्वी परिक्रमा करती है। पृथ्वी अपने अक्ष पर झुकी हुई है। यह सारी बातें बच्चों को समझ आई तो बच्चों को परछाई परिवर्तन का मामला भी समझ में आ गया। अब बच्चे जान गए कि जिस समय लंबवत खड़ी छड़ की परछाई न्यूनतम होती है वह समय सोलर नून कहलाता है। जो जनवरी से दिसंबर तक बदलता रहता है। बच्चों ने साल में 6 बार सोलर नून का प्रयोग करके सोलर नून में परिवर्तन का पता लगाने का निश्चय किया।

2. गुब्बारे क्यों चिपके दीवार से?

बच्चों को स्थिर वैद्युत आवेश से संबंधित गतिविधि करवाई गई। बच्चों ने कंघी को सूखे बालों पर रगड़ कर या पेन को ऊनी स्वेटर सूखे बालों पर रगड़ कर कागज की कतरने बहुत बार उठाई है, परंतु इस बार उन्हें बिना सेलो टेप के दीवार से गुब्बारे चिपकाने की गतिविधि करके बहुत मजा आया। उन्होंने एक ऐसा सहपाठी खोजा जो सिर पर तेल नहीं लगा कर आया था। छोटे गुब्बारों को फुलाकर उस में गाँठ बाँधकर उस बालक के सिर पर गुब्बारे रगड़ कर उसे दीवार के पास ले गए तो वह उस दीवार से चिपक गए। विद्युत आवेश जब एक स्थान से दूसरे स्थान तक बहने लगता है, तो इसे हम विद्युत की धारा कहते हैं। यदि आवेश एक ही स्थान पर स्थिर रहे तो

इसे स्थिर विद्युत कहा जाता है। गुब्बारे को फुलाकर, उसे कागज़, सूखे बालों अथवा ऊनी कपड़े से रगड़ो। इसके बाद गुब्बारे को दीवार के पास ले जाओ। गुब्बारा दीवार से चिपक जाता है। बच्चे इस गतिविधि से बहुत प्रसन्न हुए और उन्हें स्थिर वैद्युत आवेश की एक नई गतिविधि का पता चला।

3. पत्थरचट्ट को रोपा और समझा

कायिक जनन बारे बताते समय बहुत से पौधों का जिक्र आता है उन्ही में से एक है ब्रायोफाइलम का पौधा। मुझे श्री दिनेश शर्मा जो यमुनानगर में टेरेस गार्डन बनाने

के विशेषज्ञ हैं, द्वारा अपने गार्डन से एक पौधे का उपहार दिये जाने की बात की तो मैंने उनसे अपने विद्यार्थियों के लिए ब्रायोफाइलम पौधे को माँग कर लिया ताकि उन्हें यह दिखाया जा सके। यह बात विज्ञान क्लब सदस्यों के शैक्षणिक भ्रमण के समय की है। इस पौधे को विद्यालय की क्यारी में रोप दिया गया, जिससे जो भी विद्यार्थी उसको उगाना चाहे उसे उसकी एक पौध दी जा सके। यह वह एक पौधा होता है जो पत्ती द्वारा कायिक प्रवर्धन (वेजिटेटिव प्रोपागेशन) करता है। ब्रायोफाइलम अपनी पत्ती द्वारा वेजिटेटिव प्रोपागेशन करता है। इस पौधे की पत्ती के किनारे पर कई नन्हें पौधे निकलते हैं जो बाद में विकसित होकर नया प्लांट बनाते हैं।

ब्रायोफाइलम (Bryophyllum), के पौधे में कायिक प्रवर्धन होता है। ब्रायोफाइलम की पत्ती के किनारों से निकलता छोटा पौधा निकलता है। पौधे के इस भाग को तोड़कर या ये खुद टूट जाते हैं जो मिट्टी और पानी की सुविधा मिलते ही ये एक नये पौधे के रूप में उग जाता है।

कक्षा 6 से 10 तक के पाठ्यक्रम के लिए हर विद्यालय में गुड़हल, पत्थरचट्ट व रियो के पौधे जरूर लगाये जाएँ।

4. ग्रेफाइट से विद्युत चालन

धातु व अधातु पाठ पढ़ाते समय धातु और अधातु के गुणों में अंतर के अंतर्गत बताया जाता है कि अधातुएँ विद्युत की कुचालक होती है किंतु ग्रेफाइट को छोड़कर यह वाक्य बोला जाता है। ऐसी स्थिति में बच्चों को ग्रेफाइट दिखाना जरूरी हो जाता है। बच्चों से पूछा गया कि क्या तुमने ग्रेफाइट देखा है? बच्चे कहते हैं-नहीं, तो उन्हें बोला गया कि अपनी ज्योमेट्री बॉक्स निकालिए और उसमें से कच्ची पेंसिल निकालिए। कच्ची पेंसिल का जो भाग लिखने का काम करता है वह ग्रेफाइट ही होता है। इसके मुलायम होने के साथ ग्रेफाइट का एक गुण यह भी है कि वह कागज पर निशान छोड़ता है। इसलिए ग्रेफाइट का प्रयोग कच्ची पेंसिल बनाने में किया जाता है। यही ग्रेफाइट विद्युत का चालक होता है। इसके लिए बच्चों ने लकड़ी के (एक वर्ग फुट लगभग के) पट्टे पर स्विच, बैटरी, तार, एलईडी व दोनों तरफ से शार्प की गई पेंसिल का प्रयोग करके विद्युत परिपथ बनाया। सभी को श्रेणी क्रम में जोड़कर जब स्विच को ऑन किया गया तो एलईडी जगमगा उठी। विद्युत ग्रेफाइट से गुजर सकती है। 16 विद्यार्थियों ने ग्रेफाइट में विद्युत चालन का विद्युत परिपथ बनाया।

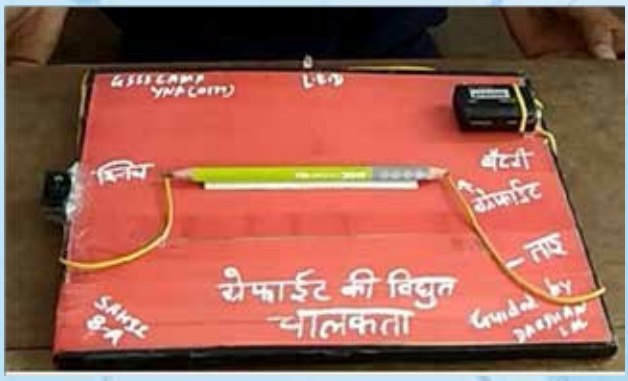

5. भौतिक व रासायनिक परिवर्तन

भौतिक व रासायनिक परिवर्तन को जानने के लिए एक मोमबत्ती काफी होती है। मोमबत्ती को जलाकर कक्षा में रख दिया गया। थोड़ी देर के बाद बच्चों से पूछा गया कि यह जो मोम जल रहा है क्या इसे वापस प्राप्त किया जा सकता है? बच्चे बोले नहीं। एक बार फिर पूछा गया कि, यह जो मोम पिघल कर नीचे इकट्ठा हो रहा है क्या इससे दोबारा मोमबत्ती बनाई जा सकती हैं? बच्चे बोले हाँ, तो उनकी एकदम समझ में आ गया कि मोमबत्ती का जलना रासायनिक परिवर्तन है और मोमबत्ती के मोम का पिघलना भौतिक परिवर्तन है। सभी बच्चे वाह-वाह कर उठे।

ठीक है, अध्यापक साथियों अगले अंक में फिर मिलते हैं, नई-नई कम लागत की सुलभता से बनाई जा सकने वाली विज्ञान गतिविधियों के साथ।

विज्ञान अध्यापक एवं विज्ञान संचारक
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
कैंप, खंड-जगाधरी, जिला-यमुनानगर

एक सरकारी स्कूल ऐसा भी जहाँ दूर-दराज़ से पढ़ने आते हैं विद्यार्थी

शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद के क्षेत्र में राज्य स्तर पर दर्ज कराई उपस्थिति

सत्यवीर नाहड़िया

रेवाड़ी जिले के खंड खोल के अंतर्गत एक सरकारी स्कूल ऐसा भी है जिसने शैक्षणिक, सांस्कृतिक एवं खेलकूद के क्षेत्र में राज्य स्तर पर जिले का प्रतिनिधित्व कर नए आयाम रचे हैं, जिसके चलते आसपास गाँव के अलावा अब दूर-दराज से प्रतिभाशाली विद्यार्थी भी अपनी रिश्तेदारी में आकर इस स्कूल में दाखिला ले रहे हैं। जी हाँ, हम बात कर रहे हैं खण्ड खोल में सर्वाधिक छात्र संख्या वाले राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय खोरी की जिसमें इस समय भी करीब दो दर्जन छात्र-छात्राएँ ऐसे हैं जो दूसरे जिलों से हैं, किंतु इस विद्यालय में पढ़ने के लिए अपने रिश्तेदारों के यहाँ कुछ वर्षों के लिए आए हुए हैं।

विद्यालय की गत सत्र की उपलब्धियाँ : गत वर्ष विद्यालय ने युवा संसद, विज्ञान प्रदर्शनी, कानूनी साक्षरता, कला उत्सव, विज्ञान प्रश्नोत्तरी, बाल विज्ञान कांग्रेस, स्वर्ण जयंती उत्सव, गीता जयंती, गणित प्रश्नोत्तरी आदि प्रतियोगिताओं में खंड व जिले में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए राज्य स्तर पर 51 छात्र-छात्राओं ने विजेता रहकर जिले का गौरव बढ़ाया है। कबड्डी, खो-खो, स्टेपल चेज, हैंडबाल, बॉक्सिंग तथा एथलेटिक्स में भी विद्यालय के खिलाड़ियों ने जिला एवं राज्य स्तर पर अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है। शैक्षणिक क्षेत्र में विद्यालय ने निरंतर नए आयाम रचे हैं। छात्र रोहित श्योरान (खोरी) तथा अमनदीप (टींट) ने जहाँ आईआईटी की मेन परीक्षा क्वालिफाइ की वहीं छात्र गौरव (बवाना गुर्जर) ने नीट एवं एम्स की परीक्षा उत्तीर्ण कर विद्यालय का नाम रोशन किया। विद्यालय में निःशुल्क छात्रावाहिनी योजना के तहत नौ रूटों से शताधिक छात्राएँ बारह प्राइवेट वाहनों से आती हैं। यह संख्या जिले में सर्वाधिक है। प्रभावी सदन प्रक्रिया, प्रेरक प्रार्थना सभा, रोचक बाल सभा के अलावा भाषा मंच, विज्ञान क्लब, गणित मंच, कानूनी साक्षरता प्रकोष्ठ, बालिका मंच, राष्ट्रीय सेवा योजना आदि की नियमित गतिविधियाँ विद्यालय के प्रतियोगी माहौल को नई ऊँचाइयाँ प्रदान करती हैं।

इन उपलब्धियों से प्रेरित होकर अब क्षेत्र के दो दर्जन गाँवों के अलावा दूरदराज से अपनी रिश्तेदारियों में रहकर करीब दो दर्जन छात्राएँ अध्ययनरत हैं। गत वर्ष मेडिकल संकाय की टॉपर रही छात्रा नैंसी अहलावत खुड्डन, झज्जर तथा नान मेडिकल की मेरिट प्राप्त छात्रा तन्नु ढोकिया रेवाड़ी खोरी में अपने मामा के यहाँ रहकर पढ़ी थी, उन्हीं से प्रेरणा लेकर अब करीब दो दर्जन छात्र-छात्राएँ दूसरे जिलों से आकर यहाँ पढ़ रहे हैं, जिनमें अंशु (पटौदी, गुरुग्राम), मोनिका (नांगल हरनाथ, महेंद्रगढ़), खुशी (नीरपुर, अलवर), प्रतिभा (अदिंद, अलवर) अंकित (सिधरावली, गुरुग्राम) प्रिया शर्मा (बैरनवास, अलवर) साक्षी (पटौदी, गुरुग्राम), खुशी (धारूहेड़ा), तमन्ना (महपलवास, झुंझनू) रीना (झुंझनू), खुशबू (नारनौल), कल्पना (भडंगी, भिवानी) पूनम (भीलवाड़ा, राजस्थान), धीरज शर्मा (गुरुग्राम), इंदु (नांगल, राजस्थान), मोहित (गुरुग्राम), रूचिका (टांक, राजस्थान) आदि के नाम उल्लेखनीय हैं। इतना ही नहीं पिछले दिनों दसवीं की परीक्षा के परिणाम में हरियाणा भर में छठा स्थान तथा रेवाड़ी जिले में दूसरा स्थान प्राप्त करने वाली बास बिटोड़ी की छात्रा पूजा ने दूर होते हुए भी इस विद्यालय के विज्ञान संकाय में दाखिला लिया है। दसवीं में 91 प्रतिशत अंक लेने के अलावा राज्य स्तर पर एथलेटिक्स में भाग ले चुकी गोठडा गांव की छात्रा राखी ने इस विद्यालय के कला संकाय को चुना है।

क्या कहते हैं अधिकारी : जिला शिक्षा अधिकारी रामकुमार फलसवाल तथा खंड शिक्षा अधिकारी डा. खुशीराम यादव विद्यालय की प्रयोगधर्मिता एवं बहुआयामी प्रबंधन को अन्य स्कूलों के लिए प्रेरणा मानते हैं। विद्यालय के प्राचार्य टेकचंद इसे शिक्षकों, अभिभावकों एवं विद्यार्थियों के टीमवर्क का प्रतिफल बताते हैं।

प्राध्यापक रसायन शास्त्र
राजकीय आदर्श वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय
खोरी, रेवाड़ी

अपनी कला से सबका मन मोह लेता है बिट्टू

विभिन्न चित्रकला प्रतियोगिताओं में जीत चुका है पुरस्कार, रंगोली विधा में है पारंगत

प्रदीप मलिक

अपने मनोभाव को रंगों में ढालकर एक ओर जहाँ किसी कलाकार को सुकून मिलता है वहीं दूसरी ओर ऐसा करने से हम दूसरों से प्रशंसा भी प्राप्त करते हैं। कला हमारे मानसिक तनाव को कब शांति में तब्दील करती है हमें स्वतः ही पता नहीं चलता। अपनी कला एवं रंगोली विधा से विशिष्ट पहचान बनाने वाले राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय इसराना के बाल कलाकार बिट्टू के हाथ में जादू है। कला के प्रति बचपन से ही रुचि रखने वाला बाल कलाकार बिट्टू निरंतर अभ्यास एवं अपने कला अध्यापक के मार्गदर्शन से अनेक मंचों पर अपनी प्रतिभा का लोहा मनवा चुका है। कक्षा दसवीं में पढ़ने वाला छात्र बिट्टू चित्रकला में इतना पारंगत है कि वह स्केचिंग में हू-ब-हू चित्रण कर लेता है। नेता जी सुभाष चंद्र बोस, स्वामी विवेकानंद, महात्मा गांधी, गुरु रविदास, रानी लक्ष्मीबाई समेत अनेक महापुरुषों के पोर्टरेट बिट्टू बना चुका है। अपने विद्यालय में सब अध्यापकों का प्रिय यह छात्र मन से पेंटिंग करता है, जिसे देखने वाले चकित रह जाते हैं। पिछले दिनों बाल भवन पानीपत में आयोजित जिला स्तरीय स्केचिंग प्रतियोगिता में बाल चित्रकार बिट्टू ने द्वितीय स्थान हासिल किया जिसके लिए निवर्तमान सीटीएम पानीपत शशि वसुंधरा जी एवं जिला बाल कल्याण अधिकारी पानीपत अमरनाथ नरवाल ने उसे सम्मानित किया। इसके इलावा छात्र बिट्टू ने जिला स्तरीय लीगल लिटरेसी सैल द्वारा आयोजित पेंटिंग प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त किया जिसे डीईओ पानीपत श्री बिजेंद्र सिंह नरवाल ने सम्मानित किया।

रंगोली बनाने में भी निपुण है छात्र बिट्टू

चित्रकला के साथ साथ छात्र बिट्टू रंगोली बनाने में भी निपुण है। जिला स्तरीय गीता जयंती समारोह में छात्र बिट्टू ने अपने सहपाठी बलित, मनीष व अर्जितपाल के साथ मिलकर कला अध्यापक प्रदीप मलिक के मार्गदर्शन में मनमोहक रंगोली बनाकर सबके मन को मोह लिया। आकर्षक रंगोली को देखकर उपायुक्त पानीपत सुश्री सुमेधा कटारिया जी ने केवल छात्रों की खुले मन से तारीफ करते हुए आशीर्वाद दिया बल्कि बच्चों के साथ अपने मोबाइल में सेल्फी भी ली।

विद्यालय सौन्दर्यकरण में अपना अहम देता है कलाकार बिट्टू

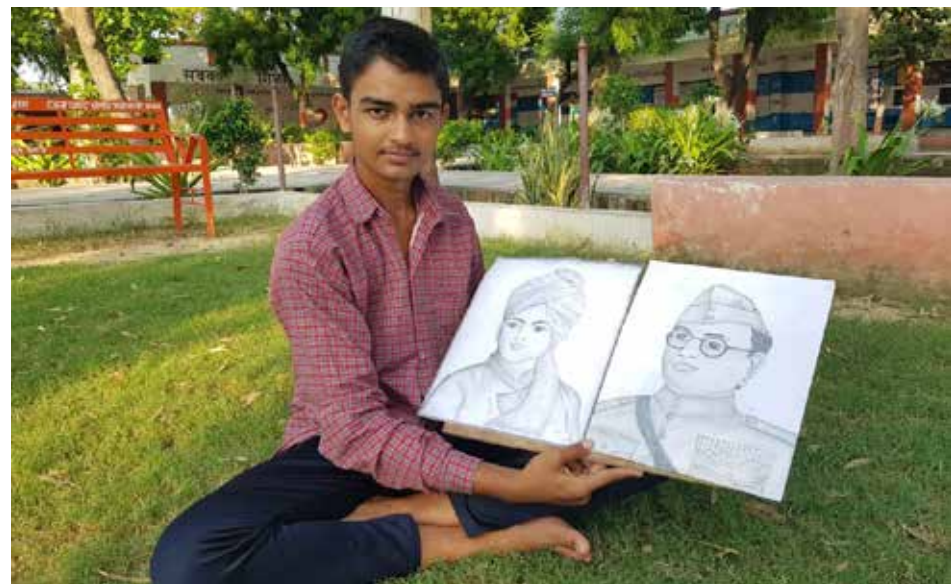

अपने विद्यालय में सौन्दर्यकरण की पहल में बाल कलाकार बिट्टू सदैव अग्रणी रहता है। कला अध्यापक प्रदीप मलिक को छात्र बिट्टू ने बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, कन्या भ्रूण हत्या के खिलाफ, नशाः एक अभिशाप, पर्यावरण बचाओ, जल बचाओ, बदलता भारत, सड़क सुरक्षा समेत अनेक ज्वलंत विषयों पर पेंटिंग बनाने में अग्रणी सहयोग कर चुका है।

छात्र बिट्टू पर हमें गर्व है - प्रदीप मलिक

अपने लाडले शिष्य बिट्टू पर गर्व करते हुए कला अध्यापक प्रदीप मलिक ने बताया कि एक अध्यापक की सच्ची कमाई उनके द्वारा तैयार बच्चे होते हैं। जब बिट्टू अपनी प्रतिभा के बलबूते पुरस्कार प्राप्त करता है हमारे लिए खुशी की बात है। विभिन्न मंचों पर छात्र ने अपने माता पिता, स्कूल व गाँव के नाम को रोशन किया है। सबसे अच्छी बात ये है कि बिट्टू अपनी कला को अपने तक सीमित न रखकर सहपाठियों में भी कला के हुनर को निखारता है। बतौर कला अध्यापक प्रदीप मलिक का कहना है कि बाल कलाकार बिट्टू की सीखने की उत्सुकता, निरन्तर मेहनत, दृढ़ निश्चय उसे और बच्चों से अलग करता है जिसके सार्थक परिणाम ये हैं कि वह अपनी कला में लगातार सीख रहा है।

विद्यालय का होनहार छात्र है बिट्टू- प्राचार्य संजय कुमार

अपने विद्यालय के होनहार बाल कलाकार बिट्टू की पीठ थपथपाते हुए प्राचार्य संजय कुमार ने बताया कि इस प्रकार के छात्र दूसरे छात्रों के लिए रोल मॉडल होते हैं। ऐसे होनहार छात्र अपनी प्रतिभा व रुचि के बलबूते जीवन में बहुत आगे बढ़ते हैं। छात्र बिट्टू व इनके मार्गदर्शक कला अध्यापक प्रदीप मलिक को विद्यालय परिवार की तरफ से ढेरों शुभकामनाएँ ।

कला अध्यापक
रावमा विद्यालय इसराना, जिला पानीपत

नशा मुक्ति अभियान

राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संस्थान, नई दिल्ली के सौजन्य से राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् हरियाणा गुरुग्राम के द्वारा राज्य के सभी 22 जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से पूरे हरियाणा में विद्यालयी स्तर पर नशा मुक्ति अभियान चलाना एक सराहनीय कदम है। इस अभियान के अंतर्गत राज्य के 100 विद्यालयों के माध्यम से 15000 छात्रों को नशे से दूर रहने के लिए जागरूक करना तथा 41 अध्यापक प्रशिक्षण शिविर के माध्यम से 1640 अध्यापकों को प्रशिक्षित करके इस अभियान को राज्य के प्रत्येक विद्यालय में पहुँचाना अपने आप में एक मिसाल है। यह अभियान मील का पत्थर अवश्य ही साबित होगा।

आधुनिक युग के बदलते परिवेश में नशा हमारे किशोरों के लिए एक अत्यंत शोचनीय पहलू है। नशा एक ऐसी लत है जो किसी भी इंसान में पड़ जाए तो उसे शारिरिक, मानसिक, आर्थिक, चारित्रिक रूप से दीमक की तरह उसे खोखला बना देती है। किसी भी देश की सबसे बड़ी ताकत वहाँ का किशोर एवं युवा होता है। यदि उनका भविष्य ही नशे के जहर से भरा है तो वह देश कभी भी उन्नति नहीं कर सकता। इस जागरूकता अभियान का उद्देश्य हमारे किशोरों को नशे से दूर करना है। क्योंकि नशे का दुष्प्रभाव कहीं न कहीं विद्यालयों तक पहुँचता दिखाई दे रहा है। इस आधुनिक परिवेश में नशा विद्यार्थियों के लिए एक फैशन के रूप में फैल रहा है। ऐसी विषम परिस्थिति में मादक पदार्थों के दुरुपयोग एवं दुष्परिणाम के बारे में प्रत्येक विद्यार्थी को जागरुक करना हमारा नैतिक कर्तव्य है। क्योंकि कल कोई किशोर/बालक यह न कह दे कि उसे इस बारे में कुछ पता ही नहीं था और नासमझी में नशे का आदि बनकर गलत राह पर चलना शुरु कर दें।

नशे के दुष्परिणाम को देखते हुए राष्ट्रीय सामाजिक सुरक्षा संस्थान द्वारा चलाया गया यह अभियान हमारे विद्यालयों के लिए एक नई दिशा एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए पथ प्रदर्शक के रूप में साबित होगा ऐसा हमारा विश्वास है।

आज देश में गरीबी, बेरोजगारी, आतंकवाद आदि ऐसी समस्याएँ फैल रही हैं, जिनका एक कारण नशा भी है। क्योंकि सही गलत का निर्णय न लेने के अभाव में कठिन परिस्थितियाँ आते ही हमारा किशोर एवं युवा घबराकर असफलताओं से बचने के लिए नशे का सहारा लेने लगते हैं जो आगे चलकर उनके भविष्य के लिए बहुत भयंकर साबित हो जाता है। सकारात्मक बातचीत ही एक ऐसा माध्यम है जिससे विद्यार्थियों को इस लत से दूर किया जा सकता है। इस कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य भी यही है। छात्रों को उन परिस्थितियों के बारे में अवगत करवाना नशे से होने वाले दुष्प्रभाव को बताना एवं एक सुरक्षा कवच के माध्यम से उसे विपरीत परिस्थितियों में से बाहर निकालना इस कार्यशाला का विशेष लक्ष्य है। इस अभियान के माध्यम से जिन मुख्य बिंदुओं पर चर्चा की

गई वे इस प्रकार हैं-

1. नशे के प्रकार।
2. नशे के दुरुप्रयोग के लिए उत्तरदायी परिस्थितियाँ।
3. नशे का दुष्प्रभाव एवं दुष्परिणाम।
4. नशे के बारे में मिथक।
5. नशा करने वाले के लक्षण।
6. नशे की लत पड़ने पर अभिभावक एवं अध्यापक की जिम्मेदारी।
7. नशा करने पर कानूनी दंड।
8. केस स्टडी के माध्यम से जागरुकता।
9. वाद-विवाद, प्रश्नोत्तरी, प्रश्न पेटिका, स्लोगन, कविता, पेंटिंग आदि गतिविधियों के माध्यम से छात्रों को नशे से दूर करने के लिए जागरूक करवाना।
10. छात्रों का समूह बनाकर सुरक्षा कवच के माध्यम से नशे से बचाने की बारीकियों को बताना।

राज्य के 21 जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के माध्यम से 6 कार्यशाला आयोजित की गई जिसमें 40-40 अध्यापकों के लिए प्रशिक्षण कार्यशाला एवं 4 विद्यालयों के माध्यम से 150 प्रति विद्यार्थियों को जागरूक करने के लिए कार्यशाला आयोजित की गई।

इस अभियान के पहले चरण में राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् में जनसंख्या अनुभाग के द्वारा 11 जनवरी 2019 को राज्य के विभिन्न जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान के 42 डीआरयू विंग के विशेषज्ञों को प्रशिक्षित किया गया है। इनके माध्यम से राज्य के सभी जिलों के 1640 अध्यापकों एवं 15000 छात्रों को प्रशिक्षित करके एक महत्त्वपूर्ण कार्य किया गया।

इस जागरूकता अभियान के तहत जो मुख्य तथ्य उभर कर सामने आए वे इस प्रकार हैं-

1. छात्रों ने बेझिझक अपनी समस्या सामने रखीं।
2. वाद-विवाद के द्वारा बच्चों को तर्क के साथ अपनी बात कहने की आदत विकसित हुई। प्रश्नोत्तर गतिविधि एवं प्रश्न पेटिका गतिविधि के माध्यम से नशे को ले कर बच्चों के मन में चल रहे कौतूहल सामने आए। मादक पदार्थों के दुरुपयोग को लेकर जो सबसे प्रमुख कारण सामने आया उसमें तनाव, घर की परिस्थितियाँ, दोस्तों का प्रभाव एवं दबाव, कमज़ोर स्वाभिमान, नशा करने का पारिवारिक इतिहास, स्कूल में निम्न उपलब्धियाँ, मादक पदार्थों की आसानी से उपलब्धता, मीडिया का प्रभाव आदि अनेक ऐसे कारण सामने आए जिसका समाधान सकारात्मक बातचीत के द्वारा इस कार्यशाला के माध्यम से किया गया।
3. इस अभियान से पहले छात्रों के अंदर नशे को लेकर बहुत सारी भ्रांतियाँ थीं, जिन्हें दूर करने का प्रयास किया गया।
4. किशोर को स्वयं तथा दूसरे को नशे के पयोग के खतरे से बचाने के लिए विभिन्न कानूनी जानकारी नहीं थी, जैसे-पोक्सो एक्ट, सार्वजनिक स्थलों पर धूम्रपान पर रोक, सिगरेट या अन्य तंबाकू उत्पादकों के विज्ञापन के प्रतिबंध पर रोक। 18 वर्ष से कम आयु के व्यक्ति को मादक पदार्थ लाने और बेचने पर रोक। स्कूल से 100 मीटर की दूरी के भीतर मादक पदार्थों को बेचने पर रोक। सड़क यातायात कानून के अंतर्गत शराब पीकर गाड़ी चलाने पर रोक आदि अनेक कानूनी तथ्यों पर विशेष प्रकाश इस कार्यशाला के माध्यम से डाला गया है।

इन सभी कारणों पर विचार करते हुए स्कूली छात्रों को सुरक्षा कवच के बारे में बताया गया, जहाँ एक उपयुक्त वातावरण बनाकर इस सुरक्षा कवच में माता-पिता, शिक्षक, मित्र, उम्र में बड़े लोगों को शामिल करने की बात कही गई। क्योंकि किशोरों के जीवन में शिक्षक सबसे प्रभावशाली लोगों में होते हैं, इसलिए शिक्षक की भूमिका भी किशोर के चरित्र निर्माण में महत्त्वपूर्ण होती है।

आज के समय को देखते हुए यह कार्यक्रम अति प्रासंगिक है। अध्यापक प्रशिक्षण कार्यक्रम में प्रशिक्षित अध्यापक बार-बार इस तरह की चुनौतियों को देखते ही एक सकारात्मक भूमिका का निर्वाह करते हुए किशोरों का मार्ग प्रशस्त करेंगे- ऐसा विश्वास है।

वंदना दूबे
विषय विशेषज्ञ
एससीईआरटी हरियाणा, गुरुग्राम

नशा नाश की जड़

नशा नाश की जड़ है, खाए जीवन मूल।
दूर रहो सुख पाओ, करना कभी न भूल।।

मान शान यह घर का, खुशियाँ लेता लूट।
रोज-रोज का झगड़ा, डाले सबमें फूट।
अंत बुरा हो तन का, रोगों के अनुकूल।
दूर रहो सुख पाओ, करना कभी न भूल।।

शौंक एक दिन ये, लत बन जाती यार।
चाह छोड़ने की, फिर तो जाती हार।
फूलों जैसा जीवन, कर देता है शूल।
दूर रहो सुख पाओ, करना कभी न भूल।।

मौत से पहले मौत का, देता है ईनाम।
बुद्धिमान बनकर, पीना न कभी जाम।
हँसता जीवन सादा, नशे भरा है धूल।
दूर रहो सुख पाओ, करना कभी न भूल।।

नशा नाश की जड़ है, खाए जीवन मूल।
दूर रहो सुख पाओ, करना कभी न भूल।।

राधेश्याम बंगालिया 'प्रीतम'
प्रवक्ता हिंदी
राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय किरावड़
जिला- भिवानी

क्या आप जानते हैं?

प्यारे बच्चो, वर्षा ऋतु चल रही है। आजकल आप अपने घरों में देखते होंगे कि नमक, पापड़, पुस्तकें, बिस्कुट, नमकीन आदि चीजें नम हो जाती हैं। क्या आप जानते हैं कि ऐसा क्यों होता है? अगर नहीं तो आइए, मैं आपको बताती हूँ-

वर्षाकाल में वायु में जलवाष्प की मात्रा अधिक होती है। वायु में जलवाष्प की मौजूदगी आर्द्रता कहलाती है। वायु में उपस्थित इसी नमी को सोखकर ये वस्तुएँ नम हो जाती हैं।

'बाल सारथी' आपको कैसा लगा, जरूर लिखना। अगले अंक में ज्ञान-विज्ञान और मनोरंजन की सामग्री लेकर फिर आपसे मिलूँगी।

- तुम्हारी यामिका दीदी

सामान्य ज्ञान

प्रश्न- 1. भारत में राष्ट्रीय युवा दिवस कब मनाया जाता है?

उत्तर-12 जनवरी को

प्रश्न- 2. राष्ट्रीय मतदाता दिवस कब मनाया जाता है?

उत्तर-25 जनवरी को

प्रश्न- 3.राष्ट्रीय ऊर्जा संरक्षण दिवस प्रत्येक वर्ष कब मनाया जाता है?

उत्तर-14 दिसम्बर को

प्रश्न- 4. 15 जनवरी किस रूप में मनाया जाता है?

उत्तर-सेना दिवस

प्रश्न- 5. 20 अगस्त को कौन सा दिवस मनाया जाता है?

उत्तर-सद्भावना दिवस

प्रश्न- 6.राष्ट्रीय खेल दिवस कब मनाया जाता है?

उत्तर-29 अगस्त को

प्रश्न-7. राष्ट्रीय अल्पसंख्यक अधिकार दिवस कब मनाया जाता है?

उत्तर-18 दिसम्बर को

पहेलियाँ

1.एक प्रक्रिया जिससे पानी, दो भागों में बँटता।
पानी यही हाइड्रोजन व ऑक्सीजन से बनता।।

2.खारापन होता समुद्र में, यह तो तुम सब जानो।
सर्वाधिक खारापन लेकिन, कहाँ ज़रा पहचानो।।

3.करे ताप का यह निर्धारण, यह ही वर्षा लाता।
इस दुनिया में काम बखूबी, रहता है निपटाता।।

4.पानी बनकर भाप उड़े जब, तब ये हैं बन जाते।
इस धरती पर खूब ज़ोर की, बारिश लेकर आते।।

5.पानी का दूषित हो जाना, बोलो क्या कहलाए।
ऐसा पानी कई तरह के, रोगों को फैलाए।।

6.लवण, कैल्शियम या मैग्नीशियम, जब-जब हैं घुल जाते।
बोलो तब ये पानी के हैं, किस गुण को दर्शाते।।

7.कम अक्षर में करें तत्त्व के, दर्शाने का काम।
लाए खोज इसे वैज्ञानिक, प्यारा-प्यारा नाम।।

8.अणु में रहें कई परमाणु, संख्या मिले अनेक।
कहो कौन-सा शब्द करे है, इनकी नित्य देखरेख।।

9.बेतरतीब कौन-सी गति है, धूलकणों से मिले।
एक जगह से जगह दूसरी, इससे द्रव्य हिले।।

10.करे प्रदर्शित अभिक्रिया को, समीकरण पहचान।
अभिकारक व उत्पादों में, हों परमाणु समान।।

उत्तर :- 1.विद्युत् अपघटन 2.मृत समुद्र 3.जल-चक्र 4.बादल 5.जल प्रदूषण 6.कठोरता 7.प्रतीक 8.परमाणु कक्षा 9.ब्राउनीगति 10.रासायनिक समीकरण।

- डॉ.घमंडीलाल अग्रवाल
सेवानिवृत्त अध्यापक, शिक्षा विभाग हरियाणा

गधा और गीदड़

एक धोबी का गधा था। वह दिन भर कपडों के गट्ठर इधर से उधर ढोने में लगा रहता। धोबी स्वयं कंजूस और निर्दयी था। अपने गधे के लिए चारे का प्रबंध नहीं करता था। शरीर से गधा बहुत दुर्बल हो गया था।

एक रात उस गधे की मुलाकात एक गीदड़ से हुई। गीदड़ ने उससे पूछा- कहिए महाशय, आप इतने कमज़ोर क्यों हैं?

गधे ने दुखी स्वर में बताया कि कैसे उसे दिन भर काम करना पडता है। खाने को कुछ नहीं दिया जाता। गीदड़ बोला-तो समझो अब आपकी भुखमरी के दिन गए। यहाँ पास में ही तरह-तरह की सब्जियाँ उगी हुई हैं। मैंने बाड़ तोडकर एक जगह अंदर घुसने का गुप्त मार्ग बना रखा है। बस वहां से हर रात अंदर घुसकर छककर खाता हूँ और सेहत बना रहा हूँ। तुम भी मेरे साथ आया करो। लार टपकाता गधा गीदड़ के साथ हो गया।

बाग़ में घुसकर गधे ने महीनों के बाद पहली बार भरपेट खाना खाया। दोनों रात भर बाग़ में ही रहे और पौ फटने से पहले गीदड़ जंगल की ओर चला गया और गधा अपने धोबी के पास आ गया।

उसके बाद वे रोज रात को एक जगह मिलते। बाग़ में घुसते और जी भरकर खाते। धीरे-धीरे गधे का शरीर भरने लगा। उसके बालों में चमक आने लगी और चाल में मस्ती आ गई। वह भुखमरी के दिन बिल्कुल भूल गया। एक रात खूब खाने के बाद गधे की तबीयत अच्छी तरह हरी हो गई। वह झूमने लगा और अपना मुँह ऊपर उठाकर कान फड़फड़ाने लगा। गीदड़ ने चिंतित होकर पूछा मित्र, यह क्या कर रहे हो? तुम्हारी तबीयत तो ठीक हैं?

गधा आँखें बंद करके मस्त स्वर में बोला मेरा दिल गाने का कर रहा हैं। अच्छा भोजन करने के बाद गाना चाहिए। सोच रहा हूँ कि ढैंचू राग गाऊँ।

गीदड़ ने तुरंत चेतावनी दी- न-न, ऐसा न करना गधे भाई। गाने-वाने का चक्कर मत चलाओ। यह मत भूलो कि हम दोनों यहाँ चोरी कर रहे हैं। मुसीबत को न्यौता मत दो। बाग़ के चौकीदार जाग जाएँगे।

गधा हंसा अरे मूर्ख गीदड़! मेरा राग सुनकर बाग़ के चौकीदार तो क्या, बाग़ का मालिक भी फूलों का हार लेकर आएगा और मेरे गले में डालेगा।

गीदड़ ने चतुराई से काम लिया और हाथ जोडकर बोला- गधे भाई, मुझे अपनी ग़लती का अहसास हो गया हैं। तुम महान गायक हो। मैं मूर्ख गीदड़ भी तुम्हारे गले में डालने के लिए फूलों की माला लाना चाहता हूँ।

गधे ने गर्व से सहमति में सिर हिलाया। गीदड़ वहाँ से सीधा जंगल की ओर भाग गया। गधे ने उसके जाने के कुछ समय बाद मस्त होकर रेंकना शुरू किया। उसके रेंकने की आवाज़ सुनते ही बाग़ के चौकीदार जाग गए और उसी ओर लट्ठ लेकर दौडे। बस सारे चौकीदार डंडों के साथ गधे पर पिल पडे। कुछ ही देर में गधा पिट-पिटकर अधमरा हो गया।

-पंचतंत्र से

कपटी चूहा

लाओ-लाओ चूहादान
पकड़ो इस चूहे के कान

धमा चौकड़ी, करता रोज
सभी रहे हैं उसको खोज
दाँत है चाकू जैसे तेज
उसे नहीं कोई परहेज
ठेंगा दिखलाता शैतान

माने नहीं किसी की बात
मूँछों पर फिर फेरे हाथ
डर जाता बिल्ली को देख
दौड़ा जाता सब कुछ फेंक
खुद को कहता है बलवान

पकड़ा है पिंजरे में आज
इसे नहीं आती है लाज
फिर से आया घर में दौड़
नहीं रहा ये पीछा छोड़
लो आया बनकर मेहमान

सुनीता काम्बोज
संत लौंगोवाल अभियांत्रिकी एवं
प्रौद्योगिकी संस्थान
लौंगोवाल, जिला- संगरूर, पंजाब

'प्रकृति से जुड़कर करें सुखानुभूति'

प्रकृति की गोद में जाकर मानव को जो असीम सुख प्राप्त होता है, उसकी हम केवल कल्पना कर सकते हैं। यदि व्याख्या करने की बात की जाए तो शायद मानव शब्दकोश में शब्दों की सीमा ही खत्म हो जाए और वर्णन पूरा भी न हो। मानव-मन इतनी विकट समस्याओं व इच्छाओं के वशीभूत हो गया है कि उसे संतुष्ट करना असंभव-सा प्रतीत होता है। प्रकृति का एक-एक कण मानव जगत के लिए प्रेरणास्रोत है, प्रत्येक में देने का भाव है, लेने का नहीं, फिर भी सर्वस्व देने के बाद भी कभी प्रकृति असंतुष्ट नहीं होती।

उदाहरण के तौर पर नदी अपना जल स्वयं नहीं पीती, दूसरों की ही प्यास बुझाती है। वृक्ष अपने फल कभी नहीं खाते, वृक्ष के फल, तने व जड़ किसी न किसी औषधि के काम आते हैं जिनका प्रयोग मानव ही स्वयं के लिए करता है। सूरज/ चाँद अपनी किरणों से अंधकार को दूर करके प्रकाश का संचार करते हैं।

यदि हम सूक्ष्मता से प्रकृति का अवलोकन करें तो मानव को इससे प्रेरणा मिलती है। पतझड़ आने पर वृक्ष के पत्ते झड़ते हैं, नए आते हैं। झड़ने वाले पत्ते भी लहराते हुए जमीन पर गिरते हैं। हालांकि उन्हें इस बात का अहसास भी है कि वे नष्ट होने जा रहे हैं। उनके नष्ट होने का भी मानव अपने स्वार्थवश खाद बनाकर उसका प्रयोग करके नए पौधों को जीवन देता है। इससे संदेश मिलता है कि मानव जीवन क्षण भंगुर है।

वृक्ष के पके फल की तरह न जाने कब जीवनरूपी डोर से टूटकर वह जगत से प्रस्थान कर जाए। उसे गिरते पत्तों से यह प्रेरणा लेनी चाहिए, जाने के बाद अंत अच्छा ही होगा, निराश होने की बजाय आशावादी होकर जगत से प्रस्थान करें। सूखे वृक्ष को देखकर आभास होता है कि वह न तो छाया दे सकता है न फल, न ही उसके तने व जड़ किसी औषधि के लायक हैं तो ऐसी स्थिति में कोई पशु-पक्षी व मानव उससे आश्रय की उम्मीद नहीं करते। सब उसे अनदेखा करके आगे चले जाते हैं। वह मन ही मन व्यथित होकर स्वयं को असहाय समझने लगता है।

हमें सूखे पेड़ की तरह अपना स्वभाव/व्यवहार नहीं बनाना चाहिए। नहीं तो सब प्रेम पूर्वकर गले मिलने की बजाय, किनारा करके जाने की सोचेंगे। संस्कृत में भी एक श्लोक है -

'नमन्ति फलिनो वृक्षाः नमन्ति गुणिनो जनाः,
शुष्कवृक्षाश्च, मूर्खाश्च न नमन्ति कदाचन।।'

एकांत में मौन रहकर वृक्षों की छाया में बैठने पर जो शांति मन को मिलती है। शायद हजारों रुपये खर्च करने पर भी न मिले। पक्षियों का कलरव, वृक्षों के पत्तों की सरसराहट, झरनों के कल-कल की ध्वनि मानव अपने कानों से सुनता है तो प्रकृति के इस मनोरम वातावरण में उसका मन इतना रच-बस जाता है कि संसार का कोलाहल उसे किसी दानव से भी भयंकर लगने लगता है। किसी ने ठीक ही कहा है कि - यदि शारीरिक रूप से स्वस्थ रहना है तो योग करो, मानसिक रूप से स्वस्थ रहना है तो प्रकृति की मनोरम छटा को निहारते हुए एकांत में आँखें बंद करके गहरी साँस छोड़ते हुए आनंद का अनुभव करें। शरीर स्वस्थ होगा तो मन भी शांत होगा। मन शांत होगा तो आत्मिक सुख प्राप्त होगा। यही जीवन का सबसे बड़ा सुख है।

राजेश यादव, विषय विशेषज्ञ
एससीईआरटी हरियाणा
गुरुग्राम

बच्चों पर भरोसा कीजिए

शिक्षक को अपने विद्यार्थियों पर भरोसा रखना चाहिए। जिन विद्यार्थियों को हम कमजोर समझ कर छोड़ देते हैं, उन पर कार्य करना छोड़ देते हैं, उनको सक्षम बनाने हेतु सबसे पहले हमें उन पर भरोसा करना होगा। उनकी ताकत और कमजोरी को पहचान कर कार्य करना होगा।

सबसे ख़ास बात कि बच्चों के ऊपर भरोसा करने से वे खुश होते हैं। हैरानी से हमें देखते हैं क्योंकि हम तो हमेशा उनकी क्षमताओं पर संदेह व्यक्त करते हैं कि ऐसा मत करो, वैसा मत करो, तुमसे यह काम नहीं होगा। तुम बस चुपचाप बैठे रहो। जैसा कहा जाए, वैसा ही करो। ऐसे में बच्चों को अपनी मनमानी करने का मौका ही नहीं मिलता। जब हम बच्चों के ऊपर भरोसा जताते हैं कि उनके चेहरे की रौनक लौट आती है। वे अपनी जिज्ञासाओं के पंख लगाकर आसपास की दुनिया में उड़ने का आनंद लेते हैं। हमें भी इस आनंद में शामिल होने के लिए बुलाते हैं।

ये है बच्चों पर भरोसा करने के 10 ख़ास कारण-

1. बच्चों के ऊपर भरोसा करने से उनका आत्मविश्वास बढ़ता है।
2. वे कक्षा में होने वाली गतिविधियों में बढ़कर हिस्सा लेते हैं।
3. बाकी साथियों के अच्छे प्रदर्शन से उनको भी अच्छा करने का हौसला मिलता है क्योंकि भरोसे वाले माहौल में हर बच्चे को आगे बढ़ने का अवसर दिया जाता है।
4. ज़मीनी अनुभव बताते हैं कि ऐसे बच्चों के सीखने की रफ्तार तेज़ होती है, जिनके ऊपर भरोसा किया जाता है।
5. ऐसे बच्चे खुशी-खुशी सीखने के दौरान आने वाली चुनौतियों का सामना करते हैं।
6. ऐसे भयमुक्त वातावरण में बच्चे बेझिझक अपनी परेशानी शिक्षक को बताते हैं। क्योंकि उनको सुने जाने का पूरा भरोसा होता है।
7. ऐसे माहौल में बच्चे एक-दूसरे को ज्यादा सपोर्ट करते हैं।
8. ऐसे माहौल में अच्छी 'पियर लर्निंग' होती है, बच्चे एक-दूसरे को सीखने में मदद करते हैं।
9. किसी शिक्षक द्वारा बच्चों की क्षमताओं पर भरोसा करने से बच्चों को लगता है कि वे भी सीख सकते हैं। बच्चों के भीतर पनपने वाला यह आत्मविश्वास एक अच्छी आत्म-छवि का निर्माण करता है।
10. आखिर में सबसे ख़ास बात यह कि बच्चों के ऊपर भरोसा ही किसी भी शिक्षण को सफल बनाने का मूल मंत्र है।

लेखक-अज्ञात (फेसबुक से)

गत माह के अंक में पृष्ठ 21 पर दी गई पहेलियों के उत्तर

1. Cow 2. Camel 3.She mouse 4. Buffalo 5. Quail 6. Crow 7. Hen 8. Camel 9. Lion 10. Swan 11. Snake 12. Bird 13. Buffalo 14. Crocodile 15. Cat 16. Owl 17. Cat 18. Camel 19. Monkey 20. Parrots 21Mare 22. Dog 23. Frog 24.Horse 25. Donkey 26. Dog 27. Rats 28. Dog 29. Snake 30. Cat 31. Snake 32. He goat 33. Fish 34. Snake 35. Horse 36. Ox 37. Housefly 38. Fox 39. Elephant 40. Elephant 41. Peacock 42. Crocodile 43. Pig 44.Elephant 45. Buffalo 46. Bird 47. Cow 48. Jackal 49. Owl 50.Louse 51.Hen

2019

अगस्त- माह
के त्यौहार व विशेष दिवस

3 अगस्त- हरियाली तीज
4 अगस्त- मैत्री दिवस
6 अगस्त- हिरोशिमा दिवस
9 अगस्त- क्रांति दिवस (भारत छोड़ो आन्दोलन दिवस)
12 अगस्त- अंतरराष्ट्रीय युवा दिवस
12 अगस्त- बकरीद
15 अगस्त- स्वतंत्रता दिवस
15 अगस्त - रक्षाबंधन
24 अगस्त- जन्माष्टमी
19 अगस्त- विश्व फोटोग्राफी दिवस
20 अगस्त- सद्भावना दिवस

'शिक्षा सारथी' का यह अंक कैसा लगा? अपनी राय, विचार या सुझाव हमें अवश्य लिखें। लेखकों व शिक्षाविदों से अनुरोध है कि शिक्षा जगत से जुड़े विषयों, योजनाओं, मुद्दों से संबंधित रचनाएँ व लेख हमें भेजें। अपने-अपने क्षेत्रों में होने वाली शिक्षा जगत की गतिविधियों की रिपोर्ट भी हमें भेजें। हमारा पता- शिक्षा सारथी, तृतीय तल, शिक्षा सदन, सैक्टर-5, पंचकूला।
मेल भेजने का पता-
shikshasaarthi@gmail.com

Why do parents invest in girls' education ?

Evidence from Rural India

Abigail Adams

Alison Andrew

Adolescent girls in rural Rajasthan frequently leave education early and marry young. This article develops a novel methodology to elicit average parental preferences over a daughter's education and age of marriage, and subjective beliefs about the evolution of her marriage-market prospects. It finds that prospects of finding a desirable groom are an important driver of girls' education. Policies that help girls stay in school can prevent early marriage.

Adolescent girls in rural Rajasthan, India frequently leave education early and marry young – a third of girls are out of school by age 16 and a third are married by age 18 – with worrying implications for their later welfare (Duflo 2012). In a context where young women have little influence over their marriage and schooling, understanding what drives parents' decisions is crucial to predict the impacts of policies

aimed at delaying school dropout and marriage.

Marriage-market returns

Investments in schooling are often rationalised by their associated labour-market returns. However, this motive is likely weak in rural Rajasthan – very few women work for pay and, in any event, women's wages accrue to the family of her husband rather than to her own parents. Rather, marriage is arguably the most important determinant of a woman's future and well-being in this setting.

The age and schooling of young women might affect their chance of marrying a desirable groom (Chiappori et al. 2015, Attanasio and Kaufmann 2017). If parents care about the quality of their daughter's marriage, for altruistic or other reasons, these 'marriage-market returns' might influence schooling decisions and the age at which a suitable match is searched for.

In a recent research (Adams and Andrew 2019), we find that a key motivation for parents to educate daughters is the belief that education will increase her chance of marrying a well-paid and securely-employed man. Outside of this marriage-market advantage, parents have only a weak preference for educating adolescent girls. With other things equal, parents would prefer to delay their daughters' marriages until age 18; parents perceive that a young woman's marriage prospects worsen with every year she is out of school. Our results imply that policies that help families to keep daughters in school should have large knock-on effects at reducing early marriage.

The methodology : Novel survey design to understand decision-making about sensitive topics

Quantitative evidence on parents' decision-making in this context is hard to find. Many different factors are at play, which are difficult to disentangle from data on marriage patterns and completed education alone. For example, does early school drop-out reflect a lack of value placed on girls' schooling by her parents, a belief that 'over-education' hinders her ability to achieve a good marriage, or shocks to the household's situation that make it hard for a girl to remain in school?

Does an early marriage reflect a preference for marrying daughters' early or a belief that she is unlikely to receive as good a marriage offer again? Further, these are sensitive topics; marriage before 18 and payment of dowry are technically illegal but both are common, leading to misreporting in standard surveys.

In our study, we designed two types of survey instruments to understand parents' preferences and beliefs in a culturally sensitive manner. Both instruments use vignettes about hypothetical families that are described to live in a village similar to that of the respondent.

In a first 'ex-post' experiment, we describe the parents of a 12-year-old girl, giving details about the family's wealth and circumstances. Respondents are asked to imagine that there are two possible options for the daughter's schooling and marriage. Each option varies in completed education, age of marriage, and potential groom options. Respondents are asked which option they think the hypothetical parents would choose.

Figure 1 shows an example of a marked-up visual aid used to help respondents keep track of the vignettes. As the characteristics of the groom are specified in the vignettes, considerations about how education and age

Figure 1. Visual aid to help parents respond to possible options about their daughter's age of marriage and education, and groom characteristics

might affect who a girl can marry are not relevant here.

By carefully varying the characteristics of the hypothetical family, grooms, and the age of marriage and education level of the daughter, we are able to recover parents' preferences over girls' age of marriage, education level, and the characteristics of her eventual husband.

The findings: Parents' strongly prefer to delay marriage until age eighteen but place little intrinsic weight on girls'

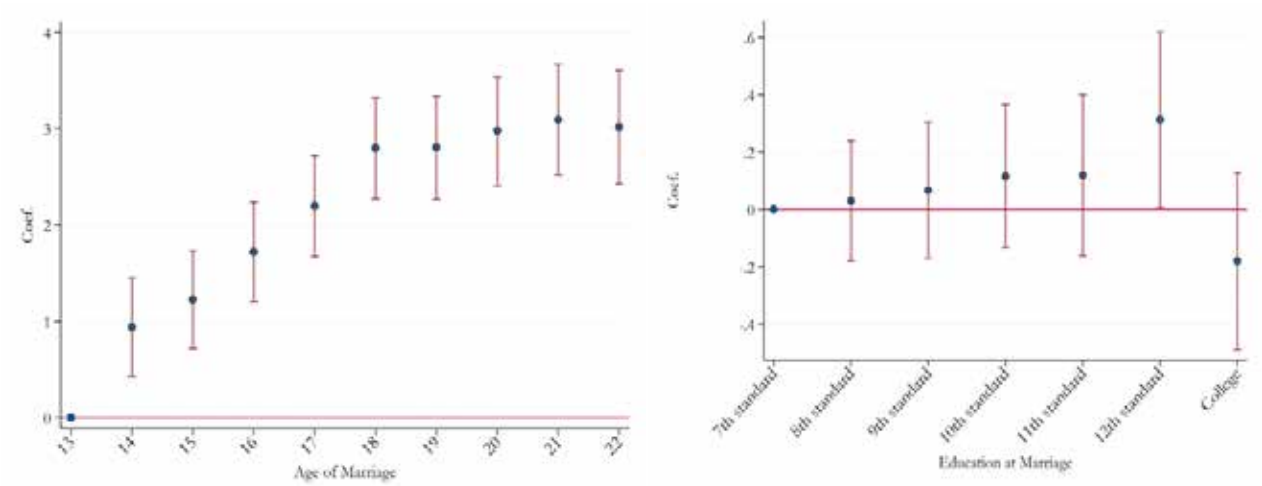

Figure 2. Parents' preferences over daughter's age and education at marriage

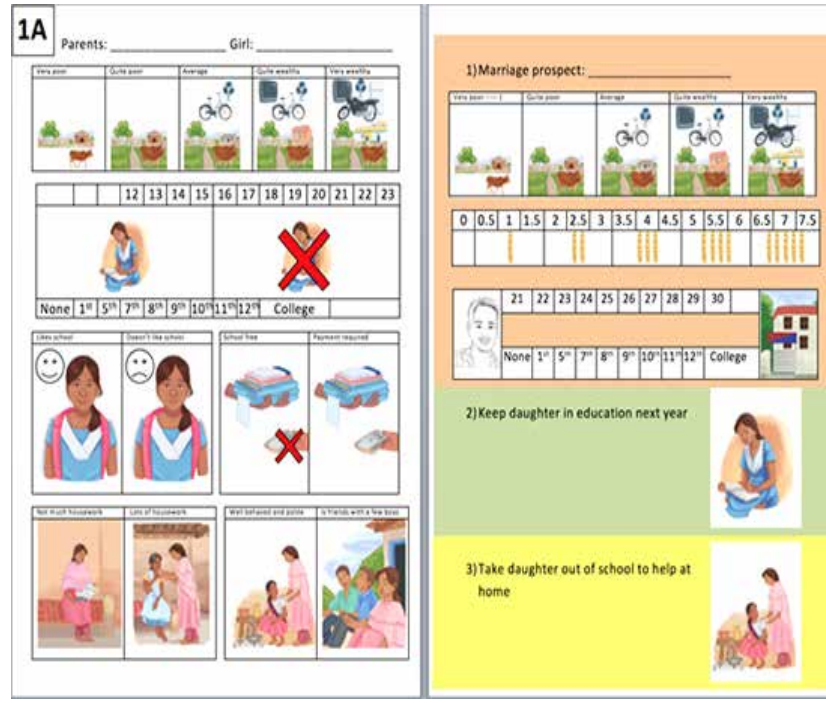

Figure 3. Visual aid used to elicit what parents believe about the likelihood of receiving marriage offers from desirable grooms in the future

education

Age and education at marriage

We find that parents have a strong preference for delaying a daughter's marriage until age 18 (the legal minimum age of marriage for women) but no further (Figure 2a). While parents prefer to educate a daughter until the end of high school, this preference appears weak relative to preferences over age of marriage. Indeed, we find that parents dislike post-secondary education, a result that may be driven by its higher costs.

A desirable groom

When it comes to what constitutes a good quality marriage match, the overwhelming driver of preferences is whether a groom has a government job, which is the best paid and most secure form of employment in this area.

Parents believe that education greatly increases the chances of a girl achieving a good marriage

To measure beliefs about how a girl's' age and education impacts her chance of receiving a good quality marriage offer, we use a second set of vignettes. In these 'ex-ante' vignettes a hypothetical family is again described but the decision they face is whether to accept a particular marriage offer at a given point in time (for example when their daughter is 16 years old and still in school) or whether to reject the marriage offer and either keep their daughter in school or take her out of school to help at home.

Figure 3 shows the visual aid in this case. Importantly, if parents reject this marriage offer, they don't know with certainty what offers will occur in the future. Since we know how parents value age of marriage, education, and groom characteristics from the first experiment, we can use how respondents answer these vignettes that contain uncertainty to reveal what respondents believe about the likelihood of receiving marriage offers from desirable grooms in the future.

We find that parents believe there to be a substantial positive marriage-market return to a daughter's education. While parents believe that a girl in college has a 60% chance of receiving a marriage offer from a groom with a government job, this probability is negligible for young women with only primary schooling. However, parents believe that this marriage-market return to education does not persist long after a daughter has dropped out of school; parents believe her marriage prospects quickly decline once she has left school.

Gender norms

gender norms are less likely to receive high- quality marriage offers. When daughters were described as being "friends with some boys and sometimes staying out of the house until late", respondents were more likely to accept the marriage offer in hand, regardless of its quality, implying they perceived a marriage-market penalty for such young women. We find that these patterns are validated by more traditional approaches to eliciting beliefs.

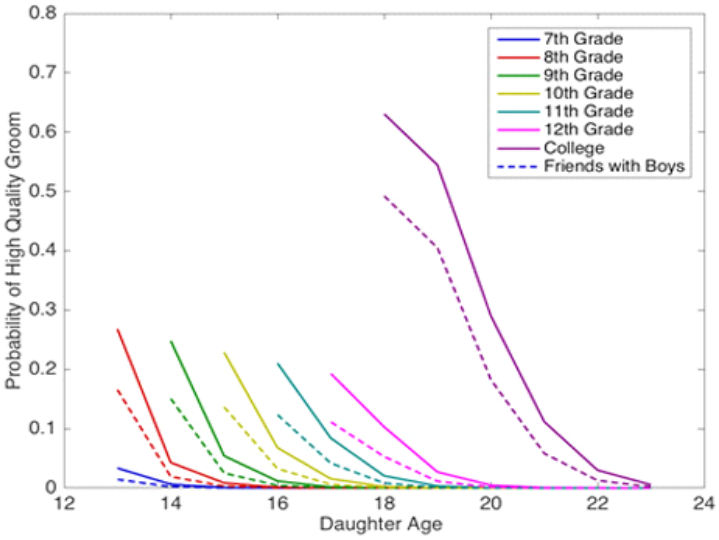

Figure 4. Parents' beliefs about marriage-market return on daughters' education, and a perceived marriage-market penalty

Further, parents believe that girls whose behaviour breaks traditional

Policy implications

Early marriage

Our findings highlight that positive marriage-market returns to young women's education increase the demand for girls' schooling and delay her marriage. This insight is likely important in explaining why access to education, girls' completed education, and age of marriage have all increased substantially over the past 20 years.

They also highlight, however, that the negative marriage-market return to age after leaving school makes girls who have recently dropped out particularly vulnerable to early marriage. Our focus

groups suggested that young women are thought to be more vulnerable to risks that affect her perceived suitability as a good wife when out of school. These risks include being a victim of sexual harassment or assault, engaging in consensual romantic relationships or friendships with boys, or her becoming loud and opinionated (Bandiera et al, 2018). Adverse selection might provide a further reason if the groom's side infer that young women who are still not married several years after leaving school have undesirable qualities. Ultimately, such preferences and inferences likely derive from tightly prescribed ideals of young womens' behaviour.

Conclusion: Improving access to education for girls

While substantial progress has been made in ensuring schools are accessible to young women, many barriers still exist; the costs of post-secondary education remain substantial for poor households, many remote communities lack safe school transport; and households often face few alternatives to pulling a daughter out of school when a family member is ill. Our findings imply that policies that help vulnerable households to keep girls in school, and strengthen opportunities for adolescents to return to formal education if their studies are interrupted, are in high demand. They would also go a long way in protecting India's daughters against early marriage.

https://www.ideasforindia.in//topics/human-development/why-do-parents-invest-in-girls-education-evidence-from-rural-india1.html

"Reprinted with permission from 'I4I' Ideas for India (www.ideasforindia.in)"

University of Oxford
abi.adams@economics.ox.ac.uk

Institute for Fiscal Studies
alison_a@ifs.org.uk

National Means Cum-Merit Scholarship

The National Means Cum-Merit Scholarship (NMMS) is a centrally-sponsored scheme that is conducted to identify meritorious students from Class 8 studying in Government Schools. A total of 2,337 students from Haryana will be awarded a scholarship amount of Rs. 12,000 per year for four years from Class IX to Class XII. Students whose annual parental income is less than Rs.1.5 lac and scored more than 55% in Class 7 are eligible to apply. Enrollment is opening on the SCERT website on August 14.

This year, the Department of Education is making active efforts to ensure that an increasing number of students participate in the NMMS exam. District level education officers will assist schools in enrolling students as well as distributing practice content for the exam. Regular workshops will also be conducted at the district and block level to prepare for this exam.

Chase the Vision....

Dr. Himanshu Garg

If we have the determination and passion, no goal is too high. If we have strong determination, then nothing can stop us. No work is too big or too small. One should "Chase the vision, not the money, the money will end up following you".

Here is the story of Dr. Karsanbhai Patel, who born in a family of farmers with limited resources. He is a father who lost his daughter, Nirupama in a car accident and he was finding a way to bring his daughter back to life. He was B.Sc. in Chemistry and was working as a lab technician in the New Cotton Mills, Ahmedabad. Karsanbhai loved experimenting with chemicals.

In 1969, the son of farmer and a qualified Science graduate, Karsanbhai Patel, was trying to mix soda ash and a few ingredients to make a detergent produce. One fine day, he got the formula right and it was then that he started producing detergents in the 100 sq ft backyard of his home as a business after his office. He started packing the formulation in a 10x10 sq.ft. room in his house. Patel was able to sell about 15-20 packets a day on his way to the office on bicycle, 15 km(approx.) away. Patel priced his new yellow detergent at Rs. 3.50 per Kg at that time, while the other competitive well established washing powder brand "Surf" by Hindustan Uni Lever (HUL) was priced at Rs. 15. The price of Patel's washing powder was almost one-third of the price of the popular "Surf" product. Customers will like your product only if you show them the benefits and provide them with the value for money. The good quality and low price made the product a hit and it was accepted by people who found great value in buy-

ing the product. He revised this door to door selling procedure for three years and improved this product time to time. He was able to make a strong consumer base for his product during that period.

He decided to name this washing powder 'Nirma' – the nickname of his daughter Nirupama. He also put her illustration (Girl in the white frock) on the pack and TV commercials just to make sure that everybody remembers her. Such was the love of a father for his daughter. The famous jingle "Sabki Pasand Nirma, Washing Powder Nirma" became an anthem for the company.

The company's mission to provide, "Better Products, Better Value, Better Living" contributed a great deal to its success. Soon, there was a huge demand for Nirma in Ruppur (Gujarat), Patel's hometown. Seeing the high potential of the business, three years later(in 1972), Patel left his government job to pursue it as a full-time venture. He started a shop in a small street of Ahemdabad. As he gained prosperity, he hired more salesmen and workers. In some years, the washing powder had become popular in Gujarat. But outside Gujarat, he faced disappointment because the shopkeepers bought the nirma goods on credit and the credit lasted for a long period. It affected the Nirma sales graph. Then Mr. Patel called an immediate meeting of all his salesmen. He strictly ordered all his salesmen that the sale of Nirma products would be on cash basis only from now. If the shopkeepers give cash, only then supply the goods otherwise carry all the goods from them. All the retailers were little shocked due to this approach. Now, Mr. Patel carried all the goods from the market and also stopped the new delivery. At that time, the technology was changing at a very fast pace. Mr. Patel snatched the opportunity and advertised his product on Doordarshan for one month. It had a strong effect on customers. Customers rushed to the market and started requesting for Nirma on a routine basis. Now all the retailers got disappointed because of customers requests for Nirma but there was no supply from the other side. Now Mr. Patel called a meeting once again and gave the paper of terms and conditions to all the salesmen. It had the condition that the sale would be on cash basis only. This approach changed the image of Nirma in the country.

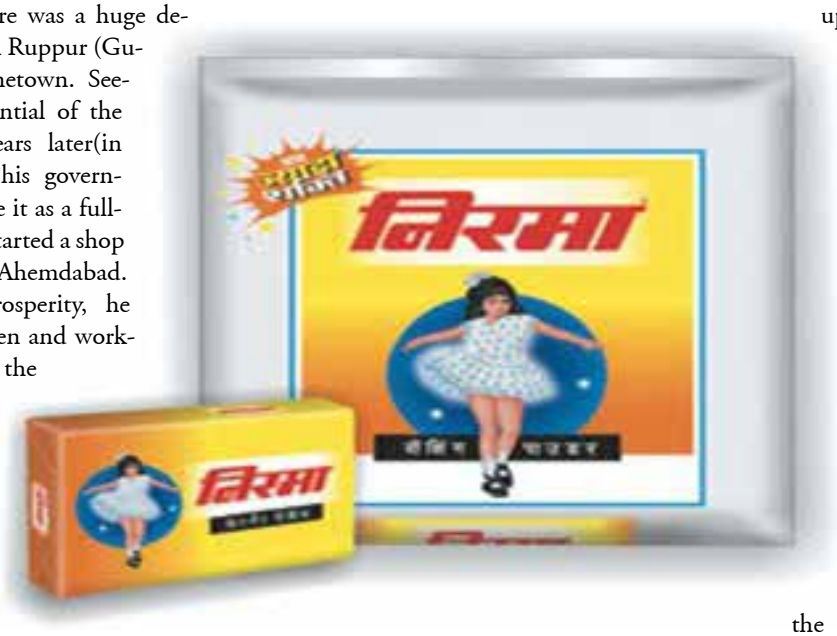

By 1985, Nirma washing powder had become one of the most popular, household detergents in many parts of the country. Nirma's network consisted of about 400 distributors and over 2 million retail outlets across the country. This huge network enabled Nirma to make its products available to the smallest village. By 1999, Nirma was a major consumer brand -offering a range of detergents, soaps and personal care products. Nirma's success in the highly competitive soap and detergent market was attributed to its brand promotion efforts, which was complemented by its distribution reach and market penetration.Today, It is providing jobs to more than 15000 employees. He has also established a university named "Nirma".

Mr. Patel chased his vision and proved that one should "Chase the vision, not the money, the money will end up following you". He started with a vision of making his daughter famous through his brand and ended up becoming one of the greatest entrepreneurs of all time. He became a Super father who immortalised his daughter's nickname into India's leading detergent, soda ash and education brand. Karsanbhai Patel was not a man born with a silver spoon in his mouth. He had limited resources but his sheer determination and willpower made his daughter famous throughout the country, even though she was no more. . We can learn a lot of lessons by this success story of Washing Powder 'Nirma'. This brand has taught many precious lessons to aspiring startups and has proved to be a valuable asset for the country.

Asstt. Professor
Govt College for Women, Jind

Make a point, *not an enemy!*

Mallika Handa

We've been caught in an unfortunate situation that ends up with us snapping at the other person. Maybe that person is so utterly wrong that you have to show him the right thing. Maybe that person in front of you in the line is taking eons and you simply have to shout at him to go quicker. Or sometimes, while talking with a friend you may assume that you were just making your point but somehow you come across as rude!

Don't worry, it happens to the best of us. Isaac Newton said, "Tact is the art of making a point without making an enemy." Abraham Lincoln has been quoted as saying that tact is the ability to describe others as they see themselves. Tact is handy skill that comes into play in daily life situations. Tact can sometimes be viewed as a form of manipulation, or lying to others. But nothing could be farther from the truth. Tact provides a way to deal with sensitive situations without harming any feelings.

Of course, you should not lie to spare someone's feelings but tact is the art of saying it at the right time. The one way to find the right time is to trust your instinct and analyze the situation. This might seem like a complex task at first, but with time and practice this becomes a normal routine without you even realising that you do it. This will lead to no tears being shed, nobody feeling embarrassed and no damage done to the relationship.

Those who have tact are generally known to have emotional intelligence and self-awareness. Tact proves to be essential when relaying bad news, confronting issues, standing up for yourself or telling someone the truth. In fact, dealing with situations with tact can lead to the strengthening of the relationship and leading to a feeling of

trust between the two people or parties involved. The information is still being conveyed, just in a manner that does not prove to be detrimental to the relationship.

One question that may be arising in your mind is how to be tactful. Well, here are the ways to be more tactful:

Think before you speak.

This may seem like a really obvious supposition but the fact of the matter is that many of us struggle with this. We say things in the heat of the moment and regret them later when the damage has already been done. Before reacting, just take a moment and think whether this would be the most apt response and whether this will have a positive or a negative impact on the situation.

Make sure the situation is right.

Listen. Empathise. Strive to understand the other person. One important part of delivering bad news is making sure the environment is right. This goes for good news too. If someone has just been given bad news don't brag about your good news just yet. Of course, you can share your happiness with them but do it at a time when it doesn't seem like you're trying to gloat over it. After all, the road to hell is filled with good intentions.

Choose your words carefully and how you say them.

Words are an essential part of being tactful. You have to choose your words carefully to ensure they don't strike a nerve or hurt any feelings. Words may be taken literally which can sometimes lead to misunderstandings.

So go ahead! Enjoy life peacefully and have better conversations and build more meaningful relationships.

https://www.cartoonstock.com/directory/t/tactfulness.asp

Intern - Can & Will Foundation

The Amazon Rainforest Fire

Oh my beloved Amazon blazes on!

Blue skys turn grey, a fiery dusk to dawn.

Dark ominious clouds of putrid smoke,

The Eco system broke as Earth's lungs choke.

Animals run screaming, the searing heat at their feet,

Birds flee burning nests and die of thirst.

Scorched carcasses lie scattered, too painful to behold.

In a burnt out shell of a hellfire that was once their home.

Nature's dry wrath wreaks havoc at mankinds greed,

The lush forests fall to his lust and endless needs.

I shall never forget these days of unrest,

When my tears rained for the rainforest...

- Dr. Deviyani Singh

A Rainy Day

Children were very happy. They came out of their houses and were enjoying the rain. They ran, played, splashed water on one another and danced gleefully.

Rains are boons and blessings. They are a rare gift of God to mankind. They bring prosperity, rich harvest, happiness, and joy. However, an excess of everything is bad. It is equally true of rains. If they are in excess, they may result in floods, widespread suffering and loss. But generally, rains are welcome after the hot and sultry weather of summer. They bring welcome relief and revival of agricultural activities. It is said that mercy droppeth as the gentle rain from heavens. The scarcity of rain results in drought, famine, and spells of suffering.

India depends for its prosperity on the rich and timely arrival of monsoon. July to September are the months of the rains and monsoon. India is an agricultural country and water is vital for realizing the full potential of agriculture. Rains are the biggest and the cheapest source of water for our agriculture and other needs. Even otherwise, rain is always welcome as it gives joy, relief from the heat and a new lease of life to plants, animals and other creatures.

This year I had a very pleasant and memorable experience of a rainy day. This day I will never forget. It has left an indelible impression on my young mind. This was the day when my school had re-opened after the summer vacation in July. The rain was already late by a week or ten days.

People were anxiously waiting for the rain and the arrival of the monsoon. They were praying to the rain God to be merciful. The days were unbearably hot, sultry and long. Outside it was really scorching in the sun. People ventured outside only when it was necessary. People relished cold-drinks, ice-creams and cool air of the air-conditioners in their homes. But only a few could afford these comforts and luxuries.

I was going to my school in the morning on foot. it was a quiet hot and uncomfortable. I relaxed my steps as I began to sweat but soon the sky was overcast with big, black and dusky clouds. They were thick and huge like mountains. They were full of the promise of welcome rain and comfort from heat. And lo, soon a cool breeze began

to blow followed by a gentle rain.

There was thunder and lightening and massive clouds. It grew dark, pleasant, and the temperature suddenly dropped. Then it began to rain heavily. The clouds thundered and poured water. In no time there was water everywhere. People were drenched and happy, so was I. I protected my books with a plastic sheet and then ran into a nearby coffee shop for shelter. Some passerbyers had already taken shelter there. The shopkeeper was happy to accommodate all of us in his shop. It rained continuously for one hour. The roads, streets got flooded in no time. The traffic came to a halt as there was knee deep water at many places on the road.

Children were very happy. They came out of their houses and were enjoying the rain. They ran, played, splashed water on one another and danced gleefully. They also enjoyed pushing the car stranded in the knee deep water on the road. A few of them floated paper-boats in water and shouted with joy. It was great fun for them and reminded me of my early childhood days. A couple of children were trying to swim in the deep rain-water.

I was drenched to the skin and my school uniform was dripping, but i felt much delighted,cool and relieved. My books were safe. Soon a fat person came seeking shelter in the shop. He was almost out of breath as he ran fast to reach the stop. Mean while his left foot slipped and he fell down in the muddy rain-water. I could not help laughing and others also joined me. There was something funny about the fat man, his gait and running. I felt grateful to him for such a hearty and loud laugh that we had so unexpectedly. It is the unexpected thing which gives us most pleasure and delight. However, the man was not hurt and was on his legs soon, though he had lost his cap in his efforts. The rushing water of the rain had swept away his cap instantly. The poor fellow felt nervous and shy and avoided to come into the shop.

When the rain stopped, I decided to return home. As I walked slowly along the payment, I felt as if has changed. Everything looked new, fresh and inviting. The rain-washed tree-leaves were dancing in the breeze joyful. The birds, here and there on the trees, chirping a welcome song to the rainy season. A couple of crows were busy bathing themselves in a nearby puddle. Muddy water had collected in several small pools on the road. They reflected the sky and the nearby scenery looked enchanting. They looked like big pieces of mirror and lent magic to the surroundings.

I reached home, changed my clothes, and then had a cup of hot tea with some snacks. I enjoyed it as I had never before. It filled me with a sense of some indefinable pleasure and satisfaction.

https://yourstoryclub.com/short-stories-social-moral/social-short-story-rainy-day/

By Saipawan

- Where was the 1986 World Cup held? **Mexico**
- Who was the last player to captain England before David Beckham? **Martin Keown**
- What football club did Gordon Banks play for when he won his 1966 World Cup medal? **Leicester City**
- Fill in the missing name in this sequence of England managers: Ramsey, Mercer, Revie, ? , **Robson. Ron Greenwood (1977-82)**
- Which of these players never scored a hat-trick for England: Bobby Charlton, Gary Lineker, Paul Scholes, Luther Blissett, Teddy Sheringham, Alan Shearer? **Teddy Sheringham**
- England coaches Sammy Lee and Ray Clemence played together at which club? **Liverpool**
- How many places were allocated to African teams for the 2006 World Cup? **Five**
- What did all these players win between 1989 and 1997: Paul Merson, Matt Le Tissier, Lee Sharpe, Ryan Giggs, Andy Cole, Robbie Fowler and David Beckham? **The (PFA) Young Player of the Year award, 1989-97**
- Aside from goalkeepers, which two England captains since 1966 never scored their country? **Mick Mills and Trevor Cherry.**
- Which of these players never captained England's senior team: Peter Beardsley, Paul Ince, David Seaman, Bobby Charlton, Gordon Banks? **Gordon Banks**
- Who was England's football manager in the 1970 World Cup? **Sir Alf Ramsey**

- How many players in England's 2006 World Cup squad were also in the 1998 squad? **And to ask a tougher question, name them..) Five - Sol Campbell, Gary Neville, David Beckham, Michael Owen and Rio Ferdinand**
- Which manager first appointed David Beckham as England captain? **Peter Taylor** (for Taylor's one match in charge as caretaker manager, versus Italy in November 2000)
- Who was the first player to play for England who had not been born when England won the world cup in 1966? **Tony Adams**

- What was the score after extra time before England lost on penalties to Portugal in the quarter final of the European Championship in June 2004? **2-2** (Portugal won the penalty shoot-out 6-5)
- In what World Cup did the England goals by Mariner, Robson and Francis feature in games against France, Czechoslovakia and Kuwait? **Spain 1982**
- Who was England's first national team manager (or 'coach', since interpretation of the job title back then is open to debate)? **Walter Winterbottom (1946-63)**
- Whose injury made way for Geoff Hurst in England's 1966 World Cup team? **Jimmy Greaves**
- Who was the first defender to captain England after Bobby Moore? **Emlyn Hughes**
- What football club did Bobby Charlton play for when he won his 1966 World Cup medal? **Manchester United**
- Who was the first £100,000 (or above) football transfer? **Dennis Law** (from Manchester City to Torino, for £110,000, 1961)
- What decade was the white ball legalised in football? **1950's** (1950)
- What did these players all win between 1963 and 1968: Lev Yashin, Dennis Law, Eusebio, Bobby Charlton, Florian Albert and George Best? **European Footballer of the Year award (from 1963-1968)**
- Who was the first football transfer over £100,000 between English clubs? **Alan Ball** (from Blackpool to Everton in 1966)
- Where and when were the three World Cup tournaments that England failed to qualify for after 1966? **West Germany 1974, Argentina 1978 and USA 1994**
- Where was the 1962 World Cup held? **Chile**
- Who were England's full backs in the 1966 World Cup Final? **Ray Wilson and George Cohen**
- Who was the first £1m football transfer between English clubs? **Trevor Francis** (from Birmingham to Nottingham Forest in 1979)
- What football club did Bobby Moore play for when he won his 1966 World Cup medal? **West Ham United**
- Bobby Moore and Billy Wright share the record for the number of games as England captain with 90 each. At the start of the 2006 World Cup which player captained England the most times aside from Moore and Wright? **Bryan Robson (65 times from 1982-91)**
- Who was the first £2m football transfer between English clubs? **Paul Gasgoigne** (from Newcastle to Tottenham in 1988)
- What height and width is a football goal? **Eight feet high (2.4m) and eight yards wide (7.3m)**
- What football club did Jackie Charlton play for when he won his 1966 World Cup medal? **Leeds United**
- Who, according to FIFA regulations, was responsible for supplying the footballs for the 2006 World Cup qualifying stage games? **The host football association, ie., Germany** (incidentally FIFA supplies the balls for the final competition)
- In what decade was England's first national team manager appointed? **1940's** (1946 - Walter Winterbottom)
- What football club did Roger Hunt play for when he won his 1966 World Cup medal? **Liverpool**
- In what World Cups did Bryan Robson appear? **1982, 1986 and 1990**
- What is the minimum rest period between two games for any team at the 2006 World Cup according to FIFA competition rules? **48 hours**
- Which 1970 World Cup England striker retired to run a successful West Midlands window cleaning business? **Jeff Astle**
- Fill in the missing name in this sequence of England managers: Taylor, Venables, Hoddle ? **Keegan Howard Wilkinson** (caretaker manager in 1999 and 2000)

https://www.businessballs.com/quiz/football-quiz/

Geography Quiz

- Apart from water, what runs through the mouth of the River Amazon and Lake Victoria? **The Equator**
- Which country had the world's tallest habitable building as at 2006? **Taiwan** (called Taipei 101, it is 501 metres high with 101 stories. It was formerly called the Taipei World Financial Center, until 2003. The Burj Dubai building in Dubai, United Arab Emirates, surpassed this in 2007, and was subsequently renamed Burj Khalifa on opening in 2010.)

- Which country was previously called Abyssinia? **Ethiopia**
- In which country is the Blarney Stone? **Ireland (or Eire) at Blarney Castle near Cork**
- What is the world's third largest sea? **Mediterranean**
- The largest policeman's beat (territory) in Europe is in which country? **Scotland** (The beat is about 900 square miles, in Caithness and Sutherland, North West of Scotland. Based near Kinlochbervie, the police constable normally has about ten cases a year, of which the most notable in recent times was the Labour MP Robin Cook's death while he was hill walking. Thanks to Gordon Smith for these interesting extra details.)

- The cities of Cairo in Egypt and Fez in Morroco are generally accepted to have the oldest of what type of institution in the world? **University**
- Where would you find the Queen Alexandra, Queen Elizabeth and Queen Maud mountain ranges? **Antarctica**
- The tenge is the basic monetary unit of which country? **Kazakhstan** (1 tenge = 100 teims)
- Which country at the southern tip of the Arabian Peninsula was previously known as Aden? **Yemen**
- What language do the locals speak in Bogota? **Spanish** (Bogota is the capital of Columbia)
- What's the most southerly city; Toronto, Seattle, Budapest or Bordeaux? **Toronto**
- LAR is the international vehicle registration of which country? **Libya (Libyan Arab Republic)**
- Where are the North Yolla Bolly mountains? **USA, California**
- In which South American country is the Atacama desert? **Chile**
- What is the capital of Qatar? **Doha**
- Where can you find the first iron bridge ever built? **Ironbridge, near Telford in Shropshire, England**
- Which is the least populated state in the USA? **Wyoming**
- What and when is the biggest national celebration every year in Australia? **Australia Day, January 26th** (based on the 1788 proclamation of British sovereignty at Sydney Cove over the eastern seaboard of Australia)
- Which country has the internet domain .me? **Montenegro**
- What Central American country's name means 'many fish'? **Panama**
- Who renamed the South Sea as the Pacific Ocean in 1520? **Ferdinand Magellan** (1480-1521, Portuguese explorer. Of the 270 men and five ships who sailed with Magellan on his three year exploration of the Pacific from 1519-22 fewer than 20 returned on a single surviving ship. Magellan was killed in the Philippines. And we think we have it tough in today's times..)
- What notable geographical feature is shared by Oxford, Reading, Windsor and London? **The River Thames, the longest in England** (N.B. the River Severn is slightly longer but given that much of the Severn is in Wales it is generally regarded as the longest in Britain, rather than England - ack T Smith for raising this point)

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-1-geography/

Common
Monsoon Diseases Prevention Tips

While rain after a hot and humid day can be a desirable thing; the fact cannot be denied that rain could bring in some rainy season diseases. During monsoons our immune system is weakened, this results in many water-borne diseases. However, we should all be aware of why our body is vulnerable during rainy season? or, how we can be safe and protected?

Rainy Season Precautions!

This climatic change causes different types of monsoon diseases, some of the common diseases along with the rainy season health care tips are as follows:

Cold and Flu:

The drastic fluctuation of temperature which happens during this rainy season makes the body susceptible to bacterial and viral attack, resulting in cold and flu. This is the most common form of viral infections. Hence to protect the body, one should consume highly nutritious foods and strengthen the immunity. By this the body can fight germs by producing antibodies against the released toxins.

Mosquito Borne Diseases:

Malaria:

Monsoon and malaria are synonymous to each other. When rain, water remains clogged, it helps the mosquitoes breeding process. The spread of malaria can be prevented by keeping such clogged areas clean.

Dengue:

Dengue fever can be very painful and life-threatening. Although this disease is caused by the dengue virus, the carrier here is the mosquito and thus keeping the body protected from any form of mosquito bite can ensure safety.

Cholera:

This is a water-borne infection, caused by many strains of bacteria called Vibrio cholera. Cholera affects the gastrointestinal tract causing severe dehydration and diarrhea. Hence, drink boiled, treated or purified water can keep the germs at bay.

Typhoid:

Typhoid fever is a result of contaminated food and water. This is yet another bacterial infection caused by Salmonella typhi. Maintaining proper hygiene and sanitation and at the same time using clean water is recommended.

Hepatitis A:

This infection is caused by contaminated food and water which mainly affects the liver. Some common Hepatitis A symptoms seen are fever, vomiting, rash, etc. Maintaining proper hygiene can cover the risk of this condition.

The hot, humid and wet weather makes it favorable for the micro-organisms to reproduce and multiply. This also results in many respiratory tract diseases and skin infections too.

Precautions for the rainy season are really easy and practical! A periodic preventive health checkup is an effective means to detect diseases at an early stage, which in turn helps early treatment and complete cure. To understand how to stay protected and get an accurate and early detection.

https://www.indushealthplus.com/common-monsoon-diseases-prevention-tips.html

Amazing Facts

1. **The fastest bird in the world is the Peregrine Falcon, which can reach speeds in excess of two hundred miles per hour.**
2. A honey bee has four wings.
3. Badminton originates from a sport in India called "poona."
4. In October 1973, Swedish sweet maker Roland Ohisson of Falkenberg was buried in a coffin made of nothing but chocolate.
5. More than 100 professional cyclists participate in the Tour de France every year and the race is over 3,200 kilometers.
6. There are more than 50 different types of pumpkins. Some of them have names such as Munchkin, Funny Face, and Spooktacular.
7. Tacoma Narrows Bridge which was located in Washington was nicknamed "Galloping Gertie" because of the unusual way it twisted and swayed with even with the slightest winds when people would drive on it. The bridge collapsed on November 7, 1940, fortunately no humans died, except for a dog.
8. On September 7, 1997, the first flight of the F-22a occurred.
9. There are five years in a quinquennium.
10. The average life span of a mosquito is two weeks.
11. Slugs have 4 noses.
12. The shark cornea has been used in eye surgery, since its cornea is similar to a human cornea.
13. The largest fish in the world is the whale shark. It can weigh several tons and grow to more than fifty feet in length.
14. The word "Denim" comes from the French phrase "serge de Nimes" which is a fabric made in a town located in southern France.
15. Stewardesses is one of the longest words typed with only the left hand.
16. If a lobster loses an eye or a claw it can usually grow a new one.
17. The name for the sign "&" which represents the world "and" is ampersand.
18. The Eiffel Tower weight is approximately 9441 tons.
19. The meaning of Siberia is "sleeping land."
20. Billie Jean by Michael Jackson was the first video to air on MTV by a black artist.
21. Vatican City is the smallest country in the world, with a population of 1000 and a size 108.7 acres.
22. Eyebrow hair lasts between 3-5 months before it sheds
23. An elephant cannot jump.
24. The reason why the Mexican sombrero hat is so wide is to provide shade for the entire body.
25. Amazingly, goalies in the National Hockey League played without masks until the year 1959.

http://www.greatfacts.com/

Quiz

1. The president of which Asian country resides traditionally in the Blue House? **South Korea**
2. Definitely Maybe was the debut album from which Britpop band of the 1990s and early 2000s? **Oasis**
3. In 1957, how many countries agreed to form the European Economic Community (EEC); the direct precursor to the modern European Union? **6** (West Germany, France, Belgium, Luxembourg, Italy, and the Netherlands)
4. HAL 9000 is the computerised antagonist of which groundbreaking Stanley Kubrick film of 1968? **2001: A Space Odyssey**
5. Which pioneering aviatrix disappeared during a circumnavigation of the world, over the Pacific Ocean in July 1937? **Amelia Earhart**
6. The Monotremes (or egg-laying mammals) consist of 4 Echidna species and 1 species of which other strange Australian animal? **Platypus**
7. By the number of native speakers, which is the second most widely-spoken language in the world? **Spanish**
8. As of 2019, which is the only city to have hosted 3 modern Summer Olympic games? **London**
9. In 1947, which American Air Force officer became the first recorded person to exceed the sound barrier in level flight? **Chuck Yeager**
10. In 1804, Toussaint Louverture led the only successful slave rebelling against colonial powers to found which Caribbean nation? **Haiti**
11. Tyrion Lannister and Ned Stark are characters from which blockbusting HBO fantasy drama series? **Game of Thrones**
12. Which mythical hero's labours included slaying the Nemean Lion, stealing the apples of the Hesperides, and cleaning the Augean stables in a single day? **Heracles/Hercules**
13. How many time zones are recognised in China, the 3rd largest country in the world? **1**
14. The Keirin and the Omnium are competitions in which Olympic sport? **Track Cycling**
15. Which singer, songwriter, and pianist, who reached peak popularity in the 1970s and 1980s, was born Reginald Kenneth Dwight in North London in 1947? **Sir Elton John**
16. Which South American country's official name is The Plurinational State of _____? **Bolivia**
17. Who, in 2010, became the first female to win the Best Director Academy Award for her war drama The Hurt Locker? **Kathryn Bigelow**
18. In local legend, which figure of Greek mythology is credited as having founded the city of Lisbon? **Odysseus/Ulysses**
19. Which major waterfalls on the Zambezi river lies at the border of Zimbabwe and Zambia? **Victoria Falls**
20. The Dardanelles and the Bosphorus are two of the shortest sea crossings between which 2 of the world's continents? **Asia and Europe**

https://www.businessballs.com/quiz/quiz-455-general-knowledge/

आदरणीय संपादक जी,

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' के गतांक का चित्र और उस पर लिखी दो पंक्तियाँ सचमुच बहुत प्रेरणादायी हैं। प्रदेश में प्रतिभाओं को नई उड़ान मिल रही है। सक्षम योजना सरकार की इच्छा शक्ति, प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा बनाई गई प्रभावी क्रियान्वयन नीति, अधिकारियों के प्रेरणा भरे नेतृत्व और अध्यापकों की कर्मठता से किस प्रकार सफलता की नए शिखरों तक पहुँची है, इसकी विशद जानकारी पत्रिका से प्राप्त हो रही है। सुदर्शन पूनिया का लेख बता रहा है कि अब कदम सक्षम 20 की ओर बढ़े हैं। इस कर्मठता के साथ अब इस लक्ष्य को भी हासिल करना है। 'बाल सारथी' में सदा की भांति नन्हें बच्चों के लिए मनोरंजन व ज्ञान से भरपूर सामग्री थी। संपूर्ण संपादक मंडल को बधाई।

सविता
पीजीटी इतिहास
राकवमा विद्यालय काहनौर, जिला-रोहतक

आदरणीय सम्पादक महोदय,

नमस्कार।

'शिक्षा सारथी' का पिछला अंक पढ़ा। विभाग की अनेक सूचनाओं, गतिविधियों के ब्यौरे के साथ-साथ नवाचारी गतिविधियों के लेख व साहित्यिक सामग्री को देखकर मन प्रसन्न हो गया। सचमुच विभाग के द्वारा बड़ी मेहनत से पत्रिका के लिए सामग्री का संकलन किया जाता है। हर माह श्रेष्ठ कार्य से अपनी विशिष्ट पहचान बनाने वाले एक विद्यालय, एक अध्यापक व एक विद्यार्थी पर लिखा लेख सचमुच न केवल उनके लिए उत्साहवर्धन का कार्य करता है, बल्कि अन्य लोगों के लिए भी वे प्रेरणा बनता है। दर्शन लाल बवेजा द्वारा लिखे लेख हर विज्ञान अध्यापक को पढ़ने चाहिए ताकि वे भी कम से कम व्यय करके विज्ञान संबंधी मनोरंजक गतिविधियाँ अपने विद्यालयों में करा सकें। अंत में विद्यालय शिक्षा विभाग व संपादक मंडल को एक श्रेष्ठ पत्रिका के प्रकाशन के लिए बहुत-बहुत बधाई।

मनोज कौशिक
एजुकेशनल टैक्नोलोजी विंग
एससीईआरटी, गुरुग्राम

गुलाब

गुलाब हूँ मैं
हँसता-खेलता-मुस्कुराता
मन में जीने की चाह जगाता
अपनी ही धुन पर नाचता
गुलाब हूँ मैं
देखा किसी ने मुस्कुराकर मुझे
ताजगी से वह भर गया
किसी ने गर छुआ मुझे
रोमांच से वह भर गया
किया महसूस सुगन्ध को जिसने
रोम-रोम में उसके उतर गया
गुलाब हूँ मैं...

पर देखो जीवन की विषमता
हुआ प्राक्टय कुटिलता का
दुराचार हुआ था प्रस्फुटित
सोचा किसी ने कर अधिकार
मन मर्जी खेलूँगा-सजाऊँगा
इसी सोच में बढ़ा जब हाथ
काँटें-सा उसको गड़ गया
गुलाब हूँ मैं...

कौन कहता है तुम हो गुलाब?
खुशबू तुममें ना रंग-औ-आब
आहत करना सीखे कोई तुमसे
मैं था मुस्काया मंद-मंद
मोहताज नहीं हूँ तुम्हारे शब्दों का
मैं महका जब-जब लोग झूमे
मैं खिला जब-जब खुशी में फूले
मैं तो हूँ वही जो मैं हूँ
तुम थे आए अहंकार में फूले
जा रहे हो क्यूँ वेदना में भूले
गुलाब हूँ मैं...

मौन हूँ पर मैं बोलता
शान्त हूँ पर खौलता
जानता हूँ न खिलूँगा सदा
होगी महक मेरी भी कम
लिखा है मेरे नाटक का अंत
पर होगा वो... वो जो है...
सृष्टि का अटल नियम
मेरी मन चाही गति...
कुछ तो मैंने भी है ठाना
गुलाब हूँ मैं ...

मुरझाने से पहले खिलूँगा
महकूँगा मैं तोड़ सीमाएँ ...
महकेगा साथ मेरे यह कण-कण
है वही मेरा चिर-प्रतिक्षित क्षण
लोग करें सदैव मेरा स्मरण
वो मद-महक मेरी वो छुअन
गुलाब हूँ मैं...

प्रेम की सरगम सुनाता
गाता और गुनगुनाता
आनन्द-ताल पर ठुमकता
गुलाब हूँ मैं...

इन्दु 'मेहर'
जिला शिक्षा एव प्रशिक्षण संस्थान
गुरुग्राम

RNI NO: HARBIL/2012/52385 POSTAL REGD NO: HR/AB-102/17-19

राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा (NTSE 2019-20)

NTSE का आयोजन **दसवीं कक्षा** में प्रतिभाशाली छात्रों की पहचान करने और उन्हें प्रोत्साहित करने के लिए किया जाता है। यह परीक्षा **2 चरणों में आयोजित** की जाती है। स्टेज २ में सफल होने वाले छात्रों को **शिक्षा जारी रखने तक मासिक छात्रवृत्ति दी जाती है।**

हरियाणा में चरण १ की परीक्षा के बाद 186 बच्चों का चरण २ की परीक्षा के लिए चयन किया जाएगा

छात्रवृत्ति जानकारी

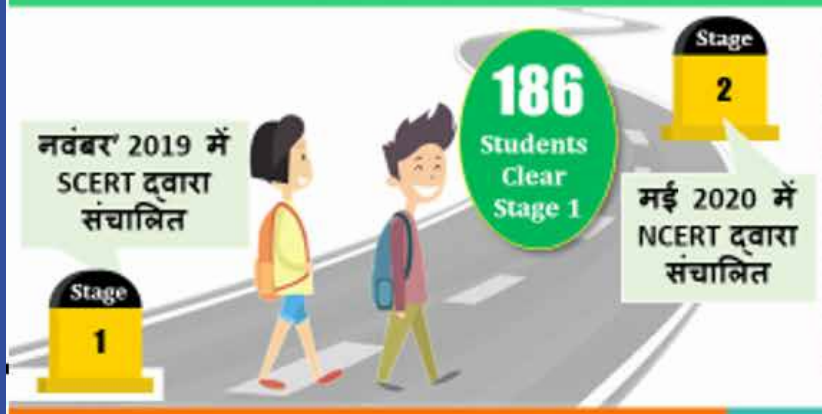

- **Rs 1250/month** Class $11^{th}/12^{th}$
- **Rs 2000/month** during Graduation and PG
- Ph.D. – **As per UGC Norms**

HOW TO REGISTER FOR NTSE STAGE 1

Step 1: SCERT वेबसाइट पर Registration लिंक के माध्यम से पंजीकरण करें

Step 2: Application Form भरें और समय सीमा से पहले जमा करें

Step 3: SCERT/HBSE की वेबसाइट से Admit Card डाउनलोड करें

EXAM PATTERN

2 sections

बौद्धिक योग्यता परिक्षण	Questions: 100 Time Given: 120 minutes
शैक्षिक योग्यता परिक्षण	Questions: 100 Time Given: 120 minutes Covers SST, Science, Math

HOW TO PREPARE

Study Plan

सिलेबस को विभाजित करके योजना बनाएं और उसका पालन करें.

Clear Doubts

अपने अध्यापको एवं विषय विशेषज्ञों से अपनी **शंकाओं का समाधान** करें.

Practice Tests

पिछले वर्ष के पेपर और **मॉक टेस्ट** का उपयोग करके अभ्यास करें